# नाना

( प्रसिद्ध फ्राँसीसी उपन्यास नाना का अनुवाद )



एमिल ज़ोला

# १

नौ बज गया था लेकिन वैराइटी थियेटर अब तक लगभग बिलकुल खाली पड़ा था। केवल बॉल्कनी और आर्केस्ट्रा के पास वाली कुछ कुर्सियों पर चन्द लोग आने वाले खेल की प्रतीक्षा कर रहे थे। गैस की बहुत मद्धिम रोशनी में वह भलीभाँति दिखाई भी नहीं दे रहे थे। स्टेज पर पड़ा हुआ विशाल सुर्ख पर्दा उस विस्तृत झुटपुटे में डूबा हुआ था। स्टेज के पीछे से तनिक भी आवाज नहीं आ रही थी। काफी ऊँचाई पर छत से लगी हुई गैलेरी से हँसी के कहकहों की और बातचीत की फुसफुसाहट की आवाज आ रही थी। बादलों पर तैरते हुए नंगी औरतों और बच्चों के चित्र छत पर बने हुए थे और उन पर गैस-बत्तियों का हल्का हरा प्रकाश फैला हुआ था। गैलरियों में श्रमजीवी वर्ग के लोग ही ज्यादा थे।

आर्केस्ट्रा के पास वाले क्लास में दो युवक अचानक आ गए। वह फौरन ही कुर्सियों पर नहीं बैठे और खड़े-खड़े ही अपने चारों तरफ देखते रहे।

'मैंने तुमसे क्या कहा था?' जिस युवक ने यह वाक्य कहा था वह उन दोनों में से अधिक आयु का था और दूसरे से ज्यादा लम्बा भी था, 'हम लोग देखो कितनी जल्दी आ गये। कम से कम मुझे अपना सिगार तो खत्म कर लेने देते।'

इसी समय ड्रामा कम्पनी की एक सेविका उधर से निकली 'ओह! मस्यों फॉशेरी, आप। लेकिन खेल तो अभी आधे घंटे से पहले शुरू नहीं होगा!'

'तब कमबख्तों ने इश्तहारों पर नौ का समय क्यों दे रखा है।' हेक्टर के चेहरे पर क्रोध और खीझ के भाव स्पष्ट थे। 'आज सुबह ही क्लेरिस ने मुझसे कहा था कि ठीक नौ बजे पर्दा उठेगा और नाटक शुरू हो जायगा। वह तो इस नाटक में अभिनय भी कर रही है, उसे तो पता होना ही चाहिए था।'

कुछ देर के लिए दोनों युवक खामोश हो गये और इधर-उधर देखने का प्रयत्न करते रहे लेकिन हाल के अधिकतर भाग में गैस-बत्तियों की धुँधली रोशनी का कुहासा भरा हुआ था और उनकी बड़ी-बड़ी परछाइयों में कुछ भी सुझाई नहीं देता था।

'लूसी के लिए तुमने जगह ले ली है न ?' हेक्टर ने पूछा।

'हाँ,' फॉशेरी ने उत्तर दिया, 'लेकिन काफी मुश्किल से 'बाक्स' मिल सका।' फॉशेरी ने आती हुई जम्हाई को दबाने का प्रयत्न किया। कुछ देर मौन रहने के बाद वह फिर बोला, 'दी ब्लॉड वीनस' वर्ष का सबसे सफल नाटक रहेगा। पिछले छः महीने से जिसे देखो उसके जबान पर इसी नाटक का नाम रहा है!'

हेक्टर बड़े गौर से फॉशेरी की बातें सुन रहा था। उसने कुछ रुक कर प्रश्न किया। 'अः·········तुम नाना को जानते हो—वह नयी अभिनेत्री जो 'वीनस' की भूमिका अदा करेगी ?'

'ओह ! खाक डालो ! तुम्हारी जबान पर भी वही बात है ?' कृत्रिम क्रोध में हाथ हिलाते हुए फॉशेरी ने कहा। 'आज सुबह से नाना के सिवा दूसरी बात सुनी ही नहीं ! क्या मुसीबत है ? हर तरफ नाना के नाम का शोर है। तुम लोगों का क्या यह ख्याल है कि मैं पेरिस की हर औरत को जानता हूँ ? हाँ ! क्योंकि नाटकशाला के मैनेजर बार्दिनेब ने नाना को चुना है तो अवश्य ही अनोखी चीज होगी।'

इस भाषण के बाद फॉशेरी जैसे कुछ देर को शान्त हो गया लेकिन हाल के खालीपन से, धुँधले प्रकाश से जो अन्दर के सारे माहोल पर

छाया हुआ था, किवाड़ों के खुलने-बन्द होने से और दबी-दबी आवाजों से वह एक बार फिर सीझ उठा।

'मारो गोली! मैं यह घुटन और प्रतीक्षा ज्यादा देर तक बर्दाश्त नहीं कर सकता। चलो बाहर ही चलें। नीचे शायद बार्दिनेव मिल जायँ और कुछ नयी बातें बतायें!'

बाहर भीड़ होनी शुरू हो गयी थी। संगमरमर के फर्श वाले बाहरी बरामदे में दर्शकों की दो-दो, तीन-तीन की टोलियाँ खड़ी हुई थीं। गाड़ियों के दरवाजे खटाखट बन्द हो रहे थे। दीवारों पर पीले रङ्ग के बहुत बड़े-बड़े इश्तहार लगे थे और उन पर काले बड़े शब्दों में नाना का नाम लिखा हुआ था। बहुत से लोग इन्हीं इश्तहारों के इर्द-गिर्द चक्कर लगा रहे थे।

'वह देखो—वहाँ खड़ा है बार्दिनेव!' सीढ़ियों से उतरते हुए फॉशेरी ने हेक्टर से कहा।

बार्दिनेव उन दर्शकों की भीड़ के बीच में खड़ा था जिन्हें उस रात के नाटक का टिकट नहीं मिल सका था, लेकिन उसकी निगाह पहले ही उन दोनों पर पड़ गयी, 'तुम भी खूब आदमी हो, यार! तुमने तो कहा था कि 'फिगारो'[1] में मेरे नाटक के विषय में कुछ लिखो और आज सुबह देखा तो एक पंक्ति भी नजर नहीं आई।'

'सुनो तो! मैं पहले तुम्हारी नाना को देख तो लूँ उसके बाद ही उसके बारे में कुछ लिख सकूँगा।' और फॉशेरी ने बात टालने के लिए बार्दिनेव का परिचय हेक्टर से कराया। नाटक के मैनेजर ने हेक्टर को नीचे से ऊपर तक इस भाव से देखा मानो वह उसे नापना चाहता हो, लेकिन हेक्टर के मन में दूसरे ही विचार थे। वह बार्दिनेव पर अच्छा

[1] 'फिगारो'—तत्कालीन पेरिस का एक पत्र

प्रभाव डालना चाहता था। बड़ी नम्रता से उसने शुरू किया। 'आपका थियेटर.........'

वार्दिनेव उन व्यक्तियों में से था जिसे अपने या किसी दूसरे के बारे में कोई भ्रम नहीं होता। उसने हेक्टर की बात बीच में ही काट दी। 'इसे मेरा थियेटर मत कहिये—मेरा वेश्या-गृह कहिये !'

फॉशिरी हँस दिया लेकिन हेक्टर को कुछ धक्का-सा लगा। फिर भी उसने अपने मन के भावों को छिपाने का प्रयत्न करते हुए कहा। 'लोग कहते हैं कि नाना की आवाज बहुत मधुर और सुरीली है। उसकी वाणी में रस और मिठास बहुत है !'

'हुँह् !' वार्दिनेव ने कन्धे उचकाते हुए कहा, 'उससे अच्छी आवाज तो छछूँदर की होगी।'

हेक्टर जैसे तारीफ करने पर तुला ही हुआ था। 'और फिर नाना एक कुशल अभिनेत्री भी तो है।'

'खाक आता है अभिनय उसे ! स्टेज पर वह ठीक तरह चल-फिर भी नहीं सकती। क्या तुम लोग समझते हो कि अभिनेत्री को गाना या अभिनय करना आना ही चाहिये ? तुम लोग तो मूर्ख हो ! उस कमबख्त नाना में ऐसा कुछ है जो उसकी तमाम कमियों की जगह भर सकता है। तुम देखना तो सही—उसे स्टेज पर उतरने दो फिर देखो लोग कैसी आहें भरते हैं—होंठ चाटते हैं !' वार्दिनेव अपनी नयी 'हीरोइन' के गुण-गान से स्वयं उत्तेजित हो चला था। फिर आवाज धीमी करके बोला, 'क्या जादू है कमबख्त में—कितना आकर्षण इस कंचन-सी खाल में।'

वार्दिनेव ने फॉशिरी और हेक्टर को नाना के विषय में कुछ बातें बताईं। वार्दिनेव की ऊटपटाँग भाषा से हेक्टर बहुत विस्मित था। 'वीनस' की भूमिका के लिए उसे एक औरत की आवश्यकता थी और तभी वार्दिनेव ने नाना को देखा था। 'वीनस' की भूमिका के लिए वार्दिनेव

को जैसी अभिनेत्री की जरूरत थी उसके सभी गुण नाना में मौजूद थे। लेकिन नाना को उस भूमिका के लिए चुन कर बार्दिनेव बड़ी मुसीबत में फँस गया था। रोज मिनॉन जो उसकी नाट्यशाला की एक कुशल अभिनेत्री थी, ईर्ष्या से जल गयी थी और रोज कम्पनी छोड़ने की धमकी भी देती थी। एक नयी छोकरी उसकी प्रतिद्वन्द्वी बने, उससे मुख्य भूमिका छीन ले इस बात पर रोज आग बबूला हो गयी थी। क्लेरिस या साइमोन को तो बार्दिनेव डाँट-मार कर भी ठीक कर सकता था लेकिन रोज की बात दूसरी थी और इस झंझट से बचने के लिए उसने इश्तहारों में दोनों के नाम बराबर बड़े अक्षरों में लिखवाये थे।

'आह! वह देखो स्टीनर और मिनॉन आ रहे हैं। जब रोज से जी ऊब जाता है स्टीनर का तब भी मिनॉन उससे चिपका ही रहता है ताकि पंछी चंगुल से निकल न जाय!' बार्दिनेव बोला।

नाट्यशाला के बाहर का बरामदा अगणित गैस-लैम्पों की रोशनी से झिलमिला रहा था—लगता था जैसे दोपहर हो और बाहर दूर सड़कों पर रात का अंधकार फैला हुआ था जिसमें कहीं-कहीं पर रोशनियाँ झिलमिला रही थीं। अभी नाटक शुरू नहीं हुआ था इसलिए अधिकतर लोग बरामदे में ही टहल रहे थे या खड़े-खड़े सिगार पी रहे थे और बातें कर रहे थे। मिनॉन स्टीनर को अपने साथ लिये भीड़ में से निकलने की कोशिश कर रहा था। मिनॉन तन्दुरुस्त, लम्बा-तड़ंगा आदमी था और स्टीनर स्थूल और थल-थल आकृति और नाटे कद का था। उसकी तोंद काफी से ज्यादा निकली हुई थी और उसके गोल-मटोल चेहरे पर भूरी दाढ़ी थी। स्टीनर एक रईस बैंकर था और इसलिए उसका फंदे से निकल जाना रोज और उसके पति मिनॉन के लिए अच्छा न था।

'कहो! कल तो तुमने उसे मेरे दफ्तर में देख लिया न?' बार्दिनेव ने स्टीनर से कहा।

'अच्छा ! तो वह थी ! मैं भी ऐसा ही समझता था लेकिन मैं ठीक से देख न सका; मैं अन्दर आ रहा था और तभी वह बाहर जा रही थी।'

मिनॉन समझ गया कि ये लोग नाना के ही विषय में बात कर रहे हैं। वह खुश न था इस बात पर कि स्टीनर नाना में इतनी दिलचस्पी ले। और जब वार्दिनेव ने नाना की तारीफ शुरू की और स्टीनर की आँखें इच्छा से चमकने लगीं तब मिनॉन ने उनकी बात काट कर स्टीनर को वहाँ से हटाने का निश्चय कर लिया।

'अरे नाना बिल्कुल बेकार-सी लड़की है—कहाँ उसके चक्कर में पड़े हो। और फिर जल्दी करो—रोज तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही होगी।'

मिनॉन ने स्टीनर को वहाँ से घसीटने की कोशिश की लेकिन वह वार्दिनेव को छोड़ने के लिए तैयार ही नहीं था। भीड़ बहुत ज्यादा बढ़ गयी थी। और हर एक की जबान पर नाना का ही नाम था। सब की निगाहें बड़े-बड़े अक्षरों में लिखे हुए नाना के नाम पर थीं। नाना को कोई नहीं जानता था। नाना कहाँ से आई, कौन है ? हजार दिमाग इस प्रश्न का उत्तर जानना चाहते थे—हजार दिलों में नाना को जानने और पाने की उत्कट अंगड़ाई ले रही थी—हजार होंटों पर नाना का जादूभरा नाम खेल रहा था। नाना के नाम का वासनाभरा संगीत उन अगणित कंठों से निकल कर हर तरफ छा गया था। और अभी पर्दा उठने में देर थी—नाना को किसी ने नहीं देखा था। लोग अधीरता से बार-बार घड़ी निकाल कर देख रहे थे। कोई आवारा सीटी बजाता हुआ उधर से निकला और फाटक के पास लगे हुए इश्तहार के पास खड़ा होकर लड़खड़ाती हुई आवाज में चिल्लाया—'ओ—मेरी—प्यारी—नाना।' और फिर झूमता हुआ आगे बढ़ गया। उस आवारा की आवाज ने जैसे

बाँध हटा दिया और भद्र लोग भी शराब के उस सैलाब में बह गए और पुकार उठे—'नाना—प्यारी नाना।'

और तभी नाटक शुरू होने की घंटी सुनाई दी और सारा जन समूह नाटकशाला के दरवाजों की तरफ उमड़ पड़ा।

## २

हॉल जगमगा रहा था। बिल्लौरी शीशे के फानूसों से गैस की रोशनी सुनहरी फुहार की तरह दर्शकों पर पड़ रही थी। फुट-लाइटों के प्रकाश में स्टेज पर पड़ा हुआ सुर्ख पर्दा दमक उठा था। फुट-लाइटों के पास जहाँ आर्केस्ट्रा का स्थान था, संगीतकार अपने साज मिला रहे थे। संगीत की जागती-अलसाती हुई धुनें हॉल के अन्दर की गर्मी और बातचीत की फुसफुसाहट में डूबी जा रही थीं। अधिकतर लोग अपने स्थानों पर पहुँच चुके थे और आपस में बातचीत कर रहे थे लेकिन दर्शकों की खासी तादाद अब भी हॉल में घुसने की चेष्टा कर रही थी। महिलाओं के सजीले गाउन, पुरुषों के बढ़िया सूट, अँगूठियाँ, जेवर हॉल की तेज रोशनी में दमक रहे थे।

संगीत निर्देशक ने संकेत किया और साज के पहले बोल लहरा उठे। लोग तेजी से अपने-अपने स्थानों की तरफ लपक पड़े। सारा पेरिस ही वहाँ इकट्ठा था—कलाकार, साहित्यिक, रईस, मस्ती भरे हुए जवान, कुछ लेखक, शिल्पकार और महिलाओं से भी ज्यादा खेल औरतें—एक विशाल और विचित्र समुदाय जिसमें के व्यक्तियों में हर प्रकार की प्रतिभा थी, जो हर प्रकार के गुनाहों और दोषों में डूबे हुए थे, जिनमें से हर व्यक्ति के चेहरे पर थकान के, परेशानी और कशमकश के वही एक-से निशान अंकित थे।

टर ने दूर पर एक बॉक्स में बैठे हुए कुछ लोगों की ओर
।

'अच्छा ! तो तुम काउन्ट मफेट को जानते हो ?' फाँशेरी ने आश्चर्य
छा ।

'हाँ ! मैं तो इन लोगों को बहुत दिनों से जानता हूँ । काउन्ट मफेट
एक जागीर हमारे इलाके के पास ही थी । मैं अक्सर इनसे मिलता-
लता रहता हूँ । वह हैं काउन्ट की पत्नी, और वह हैं काउन्ट के ससुर—
मार्किस द शॉर्द !' हेक्टर खुश था कि फाँशेरी पर उसके काउन्ट से परि-
चित होने का काफी प्रभाव पड़ा है ।

फाँशेरी ने अपने ऑपेरा-ग्लास से काउन्ट के बाक्स की तरफ देखा
और उसकी नजरें काउन्टेस मफेट पर टिक गयीं ।

'इन्टरवल में मेरा परिचय काउन्ट के परिवार से करा देना हेक्टर !
मैं काउन्ट से तो एक बार मिल चुका हूँ लेकिन उनके परिवार से परिचय
बढ़ाना चाहता हूँ !' फाँशेरी ने कहा ।

ऊपर की गैलरी से 'चुप रहो—खामोश हो' की आवाजें आईं ।
बातचीत की फुसफुसाहट बन्द हो गयी—पर्दे उठने के साथ-साथ दर्शकों की
आँखें भी स्टेज पर लग गयीं ।

'दि ब्लॉण्ड' का पहला अंक शुरू हो गया था । स्टेज प
ऑलिम्पस[1] का एक दृश्य था—इधर-उधर नकली बादल थे । शुरू
कुछ अग्निनेत्रियां स्टेज पर 'कोरस'[2] गाती हुई आयीं और उसके
टाइना की भूमिका में रोज मिनान स्टेज पर उतरी । हालांकि
भूमिका के लिए रोज बिल्कुल उपयुक्त नहीं थी फिर भी उसके व्य
का आकर्षण दर्शकों पर प्रभाव डाले बिना न रह सका । हॉल

---

१. ऑलिम्पस—ग्रीक पुराणों के अनुसार देवताओं का
स्थान । २. कोरस—सामूहिक गान ।

सी एक लहर-सी दौड़ गयी। रोज का पति और स्टीनर जो साथ-साथ बैठे थे, बहुत खुश थे। खेल और आगे चला। डाइना के पति मार्स की भूमिका में मूलेयर और वीनस के पति वल्कन की भूमिका में फ़ोन्तों ने दर्शकों को खूब हँसाया।

लेकिन दर्शकों का पूरा ध्यान खेल की तरफ नहीं था—वह उस भौंडेपन से और उन दृश्यों से उकता-से गये थे। उनका कौतूहल धैर्य के बाँध तोड़ देने के लिए अधीर था। नाना कहाँ है? नाना अब तक क्यों नहीं आई? क्या नाना को बिल्कुल अंत में स्टेज पर भेजा जायगा? प्रतीक्षा और कौतूहल की सीमा होती है! दर्शक चिढ़ गये थे।

ठीक इसी समय रंगमंच के पीछे बादल हट गये और वीनस[३] प्रकट हुई। अट्ठारह वर्ष की नाना अपनी आयु के हिसाब से काफी लम्बी और तगड़ी थी। वह सफेद सिल्क की पोशाक पहने हुए थी और उसके खूबसूरत सुनहरे बाल उसके कन्धों पर लहरा रहे थे। दृढ़ता से और शांत भाव से दर्शकों की तरफ मुस्कुराती हुई नाना मंच के सामने की तरफ बढ़ी और उसने एक गीत शुरू किया।

दर्शक आश्चर्य से एक दूसरे की तरफ देखने लगे। बार्दिनेव ने क्या यह मजाक किया था? इतनी भद्दी आवाज किसी ने आज तक नहीं सुनी थी—इतना भोंडा अभिनय किसी ने कभी नहीं देखा था। बार्दिनेव ने ठीक ही तो कहा था कि छछूँदर की आवाज भी इससे कहीं अच्छी होगी। और अभिनय के नाम पर तो यह अपना शरीर इस तरह तोड़ती-मरोड़ती है कि जो बहुत ही भद्दा लगता है। कुछ दर्शक असन्तोष से आपस में फुसफुसाने लगे।

तभी आर्केस्ट्रा के पास वाले दर्जे से एकाएक एक आवाज उठी।

'ओह! कितनी खूबसूरत है यह!'

---

३. वीनस—पुराणों में रूप और प्रेम की देवी।

कों की आँखें उस तरफ घूम गयीं जहाँ से यह आवाज आ क गोरा और खूबसूरत-सा जवान लड़का स्टेज पर आँखें गड़ाये हा था—नाना के सौन्दर्य ने उसकी मासूम आँखों में चमक पैदा थी। एकाएक उसने अनुभव किया कि सारा हॉल आश्चर्य से की तरफ देख रहा है और उसका चेहरा शर्म से सुर्ख पड़ गया। क हँस पड़े। नाना के प्रति असन्तोष गायब हो गया; नाना के शरी जवान मांसलता के प्रति जैसे दर्शक एकाएक सजग हो गये थे सा के शब्द उन लोगों के मुँह से भी निकल पड़े।

दर्शकों को हँसते देखकर नाना भी हँस पड़ी और उसके गालों पर और ठोड़ी पर प्यारे-प्यारे, हल्के-हल्के गड्ढे पड़ गये। नाना ने गीत का दूसरा पद गाना शुरू किया। इस वार भी आवाज उतनी ही भद्दी थी, चाल-ढाल और अभिनय उतना ही भौंडा था लेकिन इस वार किसी ने असन्तोष नहीं प्रकट किया। उसके सुर्ख होटों पर अब वही मुस्कान खेल रही थी और उसकी नीली आँखों में वही चपलता और चमक थी। गीत में काफी उच्छृङ्खलता थी इसलिए कभी-कभी उसके सफेद और गुलाबी गाल सुर्ख हो जाते थे। दर्शक टकटकी बाँधे उसकी तरफ देख रहे थे। एकाएक वह झुकी, उसने बाहें आगे को फैला दीं, और उसके गोरे उरोज उसके गाउन से छलक कर थोड़ा बाहर को उभर आये। सारा हॉल तालियों से गूँज उठा और जब वह घूमी तो दर्शकों को पीछे से उसका गोरा और गुलाबी गाल दिखायी दिया जिस पर उसके सुनहरे और सुर्ख बाल किसी शेरनी की तरह बिखरे हुए थे दर्शकों की तालियों से हाल का कोना-कोना दोबारा गूँज उठा।

मध्यान्तर हो गया था। इन अंकों का दर्शकों पर अच्छा प्रभाव न पड़ा था। काफी लोग आपस में यही कह रहे थे।

'नाटक तो बिल्कुल बेकार है।'

लेकिन वास्तव में नाटक का कोई महत्त्व नहीं था—सब लोग

के विषय में ही बात कर रहे थे। वातावरण में भारी घुटन थी—लगता था जैसे लोग किसी खान की सुरंग में खड़े हैं। जगह-जगह गैस के लैम्प तेजी से झिलमिला रहे थे।

फॉशेरी और लॉ फैलॉय बाहर निकल आये थे। वहीं बरामदे में उन्हें स्टीनर और मिनॉन भी मिल गये। दर्शक तेजी से बाहर निकल रहे थे।

'लेकिन मैंने इसको कहीं देखा अवश्य है।' स्टीनर ने फॉशेरी से कहा।

'हाँ! मुझे भी ऐसा लगता है कि मैंने इसे कहीं देखा अवश्य है—शायद मदाम त्रिकॉन के यहाँ।' फॉशेरी ने अन्तिम शब्द धीमी आवाज में कहे। जवानी का क्रय-विक्रय मदाम त्रिकॉन का व्यवसाय था।

'हाँ! ऐसी ही किसी गन्दी बदनाम जगह में देखा होगा! दर्शक भी पागल हैं कि किसी सड़क पर चलती सस्ती औरत की प्रशंसा करने लगते हैं। रंगमंच अच्छी औरतों की जगह नहीं रही—मुझे तो रोज को यहाँ से हटाना पड़ेगा।' मिनॉन नाना की तारीफ से चिढ़ गया था। फॉशेरी ने मिनॉन की बात सुन कर हल्के से मुस्कुरा दिया। बरामदे में खड़े हुए लोग अधिकतर नाना के बारे में ही बात कर रहे थे। भद्दी आवाज और भोंडे अभिनय के बावजूद भी नाना ने दर्शकों पर गहरा प्रभाव डाला था।

हॉल में तीन दफा शब्द हुआ—नाटक का अन्तिम अंक शुरू होने वाला था। दर्शक तेजी से हॉल में घुसने लगे।

इस अंक में चाँदी की एक गुफा बनायी गयी थी जो फुट-लाइटों की रोशनी में तेजी से झिलमिला रही थी। पहले तो मंच पर कुछ देर टाइना और वल्कन रहे लेकिन उनके हटते ही वीनस स्टेज पर उतरी।

दर्शक एकदम से सिहर उठे। नाना लगभग बिल्कुल ही नग्न थी। लेकिन उस नग्नता में कोई संकोच या झिझक नहीं थी—वह बड़े धड़ल्ले से मंच पर आयी थी। उसे अपनी जवान मांसलता की शक्ति पर पूर्ण

था । उसके वदन पर, वस, एक वहुत झीना सा कपड़ा था उसके पार उसके सुडौल कंधे, उसके मजबूत गठीले और उभरे हुए जिनकी गुलाबी नोंकें भालों की तरह आगे को निकली हुई थीं, गुदगुदे नितम्ब जिनकी हर हरकत में से वासना छलकी पड़ रही उसकी मांसल जाँघें याने उसका पूरा शरीर विल्कुल साफ दिखाई पड़ था—दूध के झागों की तरह सफेद ! वीनस विल्कुल नग्न अवस्था में गर में से उभर रही थी । और जब नाना ने अपने हाथ ऊपर उठाये उसकी वगल के सुनहरे रुयें फुट-लाइटों की तेज रोशनी में चमक ठे ।

इस वार तालियाँ नहीं वजीं—दर्शक नहीं हँसे । दर्शक मन्त्रमुग्ध से आगे को झुके हुए थे—उनके चेहरे गम्भीर थे, उनके नथुनें उत्तेजना से फड़क रहे थे, उनके होंठ मिंचे हुए थे, उनके गले सूख रहे थे । एक भारीपन—एक अद्भुत मादकता सारे हॉल पर फैल गयी थी । यह कोई भोंडी-हँसोड़ लड़की नहीं थी, एक जवान औरत थी—शरीर के तमाम गुनाहों की प्रतीक—जिसने देखने वालों की रग-रग में वासना भड़का दी थी और जो समाज की निगाहों के सामने दिलों के अन्दर धधकती हुई उत्तेजनाओं के रहस्य को नंगा करके प्रदर्शित कर रही थी । नाना के होंठों पर अब भी एक मुस्कुराहट थी लेकिन उस औरत की हिंसक और व्यंगात्मक मुस्कुराहट जो आदमियों को अपने शरीर की मांसल गहराइयों में समेट कर वरवाद कर सकती है ।

'ओफ !'.....'ओफ !'—'ओफ !'

पर्दा गिर गया । नाटक खत्म हो गया था । उस मादक तन्द्रा जाग कर दर्शक पागल होकर ताली वजाने लगे । 'नाना—नाना' आवाज से सारा थियेटर हिल गया ।

३

दूसरे दिन दस बजे तक नाना सोती रही। बोलेवार्द हॉसमैन में एक मकान की दूसरी मंजिल में नाना रहती थी। पिछले साल मास्को का एक धनी व्यापारी पेरिस में जाड़ा बिताने आया था, उसी ने इस मकान का छः महीने का किराया पेशगी देकर नाना को यहाँ ठहरा दिया था। कमरे काफी बड़े थे इसलिए उनको उचित प्रकार से सजाना भी मुश्किल था। भड़कीली सजावट थी—कबाड़ी के यहाँ से खरीदी हुई मेज कुर्सियाँ थीं—नकली फानूस थे।

नाना पेट के बल औंधी सो रही थी और उसकी बाहें तकिये को आलिंगन में बाँधे हुए थीं। उसका चेहरा, जिस पर रात की थकान के चिन्ह थे—तकिये में छिपा हुआ था। कमरे का वातावरण बोझिल और गर्म था। नाना की नींद अचानक खुल गयी। पलंग पर उसके पास कोई नहीं है यह देख कर उसे आश्चर्य हुआ। बराबर के तकिये पर अभी तक एक हल्का-सा गड्ढा था जिस पर थोड़ी देर पहले तक किसी का सिर रहा होगा। नाना ने घंटी बजाई।

'क्या वह चला गया?' नाना ने नौकरानी से पूछा।

'जी हाँ—मदाम! मस्यो पॉल दस मिनट हुए चले गए। आप थकी हुई थीं इसलिए आपको उन्होंने जगाया नहीं। वह कह गये हैं कि कल फिर आयेंगे। नौकरानी जो, खिड़कियाँ खोल रही थी। चमकदार धूप सारे कमरे में भर गयी थी।

'कल ! क्या उनका दिन है ?' नाना अभी पूरी तरह नहीं जागी थी।

'जी हाँ ! मास्यो पॉल तो हमेशा बुधवार को ही आते हैं !'

'ओह ! याद आया लेकिन अब तो सारा क्रम ही बदल गया है—मैं सोच रही थी कि सो कर उठूँगी तो उसे बता दूँगी। कल वह आया तो ठीक न होगा—कल तो किसी दूसरे आदमी का दिन है।'

'आपने पहले से तो बताया ही नहीं। भविष्य में आप अगर दिन बदलें तो मुझे बता दिया करें ताकि कोई गड़बड़ न हो।' जो ने कहा।

बात यह थी कि दो व्यक्ति—एक धनी व्यापारी और एक काउन्ट नाना के यहाँ आया करते थे; उन्हीं की बदौलत नाना का खर्च चलता था। बीच-बीच में डगेनेट मौका देख कर आ जाया करता था—नाना उसे पसन्द करती थी और उस पर उसकी विशेष कृपा थी।

'कोई हर्ज नहीं ! मैं पॉल को पत्र लिख दूँगी और अगर उसे पत्र नहीं मिल सके और वह रात को आ जाय तो उसे किसी तरह अन्दर मत आने देना।' नाना ने कहा।

जो कमरे में इधर-उधर चीजें ठीक कर रही थी। नाना की पिछली रात की सफलता की उसने चर्चा की। और नाना के गुणों की प्रशंसा की। 'अब भविष्य की चिन्ता तो खत्म हुई !' जो ने कहा।

नाना अब तक बिस्तर पर ही पड़ी थी। उसका रात का गाउन कन्धों से सरक कर नीचे आ गया था और पीठ पर उसके भूरे बाल बेतरतीबी से बिखरे हुए थे।

'ठीक है लेकिन तब तक भी इन्तजार कैसे किया जा सकता है। आज तो कितनी ही परेशानियाँ हैं—समस्याएँ हैं। क्या मकान मालिक का आदमी आया था ?'

काफी दिनों का किराया देना बाकी था और मकान मालिक निकालने की धमकी देता था। इसके अलावा नौकर, दर्जी, कपड़े वाले,

कोयले वाले और न जाने किस-किस के पैसे देने थे। सब के न रात को आकर जोने के पास वाले कमरे में बैठ जाते थे पैसे वसूल करने के लिए। लेकिन नाना को इन सबसे ज्यादा लुई की चिन्ता थी। लुई उसके बच्चे का नाम था जो उसकी सोलह वर्ष की अवस्था में हुआ था। अपने बेटे को उसने पास के एक गाँव में एक नर्स के पास पालन-पोषण के लिए छोड़ रखा था। नाना चाहती थी कि लुई को अपनी चाची मदाम लेरॉ के पास छोड़ दे ताकि वह अक्सर उसे देखने जा सके। नाना का मातृत्व बड़े वेग से जाग उठा था। लेकिन उस नर्स को अभी तीन सौ फ्रैन्क देने थे ताकि वह लुई को वहाँ से ला सके। जो ने निवेदन किया कि इसका जिक्र तो नाना को अपने उस धनी व्यापारी से करना चाहिए था।

'मैंने कहा तो था उससे लेकिन उसने कहा कि अभी तो धन की जरा तंगी है। वह बराबर की तरह हर महीने केवल एक हजार फ्रैन्क ही दे सकता है और रहा वह फाउन्ट, तो उसकी हालत तो बहुत ही खराब है। और 'मिमि' बेचारे को सट्टे में घाटा बहुत हो गया है; वह तो मुझे कोई छोटा-सा उपहार भी नहीं भेंट कर पाता है।' अन्तिम शब्द डगेनैट के लिए कहे गये थे। 'क्या होगा! मुझे तीन सौ फ्रैन्क आज चाहिए— अभी चाहिए! ओह! क्या मुसीबत है! क्या कोई ऐसा आदमी नहीं है जो मुझे तीन सौ फ्रैन्क दे दे!' झुँझलाहट में वह तेजी से अपने बालों में उँगलियाँ फिरा रही थी।

नाना इतना धन पाने का कोई उपाय सोच रही थी। मदाम लेरॉ तो आती ही होंगी कुछ देर में कितना अच्छा होता कि वह फौरन उन्हें तीन सौ फ्रैन्क देकर लुई को नर्स के पास से बुलवा सकती! रात की सफलता का उल्लास इन परेशानियों ने खत्म कर दिया था। कल रात न जाने कितने लोगों ने उसकी प्रशंसा में तालियाँ बजायी थीं—न जाने कितनों को उसके रूप ने पागल कर दिया था; लेकिन आज उसके पास

! फ्रैन्क तक नहीं हैं—कहीं से मिल भी नहीं सका। ...
......और उसे अपने बच्चे की—नन्हें से लुई की याद आ गई—
ी तोतली आवाज की—उसकी नीली आँखों की.........

बाहर की घंटी बजी। जो ने नाना के पास आकर हल्के से कहा :
ई औरत आपसे मिलने आई है।' कम से कम बीस बार तो जो ने
खा होगा इस औरत को लेकिन जो जान-बूझ कर यह छिपाती थी कि वह
स औरत को जानती है या यह कि इसका क्या व्यवसाय है—सुसीबत
में पड़ी हुई लड़कियों से इसका क्या सम्बन्ध है। 'अपना नाम मदाम
त्रिकॉन बता रही है!' जो ने कुछ रुक कर कहा।

नाना जैसे नाम सुन कर उछल पड़ी, 'अरे बुला लाओ, जो, मैं तो
उसे भूल ही गयी थी।'

मदॉम त्रिकॉन को कमरे में पहुँचा कर जो खानेशी से बाहर चली
गयी।

मदॉम त्रिकॉन बैठी नहीं। 'आज तुम्हारे लिए एक आदमी है!
तैयार हो?'

'हाँ! कितना देगा?'

'बीस लुई।'[1]

'ठीक है—लेकिन कितने बजे पहुँचना है?'

'तीन बजे—बात पक्की हो गयी न?'

'बिल्कुल!'

कुछ इधर-उधर की बातें करके मदॉम त्रिकॉन चली गयी। न...
के सिर से चिन्ता का भार हट गया। उसने आराम से आँखें मूँ...
और थोड़ा-सा मुस्करा दिया। वह सोच रही थी कि कल वह लु...
देखेगी, उसे सुन्दर कपड़े पहनायेगी—प्यार करेगी। धीरे-धीरे ना...

---

[1] लुई—फ्रेंच सिक्का, बीस फ्रैन्क के बराबर।

नींद आ गयी और उस नींद में उसे ख्वाब आए अपनी कल रात की सफलता और नींद की घाटियों में कल रात की तालियाँ गूँज गयीं। लगभग बारह बजे जब जो मदाम लेरों को लेकर कमरे में आयीं, नाना सो रही थी लेकिन उन लोगों की आवाज से उठ गयी।

'अच्छा। तुम आ गयीं! लुई को लिवाने जाओगी!'

'उसी के लिए तो आयी हूँ!' चाची ने उत्तर दिया, 'बारह बज कर बीस पर एक गाड़ी जाती है। उसी से जा सकती हूँ।'

'नहीं—उससे कैसे जाओगी। रुपया तो मुझे तीन बजे के बाद मिलेगा।' नाना ने उत्तर दिया—उसने अँगड़ाई ली और उसके मांसल वक्ष और ज्यादा उभर आये।

खाना-खाने के बाद लगभग तीन बजे नाना बाहर चली गयी। मदाम लेरों नाना की एक अन्य परिचित मदाम मलॉयर के साथ ताश खेलती रही। दरवाजे की घंटी बार-बार बज उठती थी। पौने चार बज गये थे लेकिन नाना अब तक नहीं लौटी थी। इस बीच में कई लोगों ने फूलों के गुलदस्ते नाना के लिए भेजे थे। एक नौजवान लड़का भी आया था जिसे जो ने तरस खा कर इन्तजार करने दिया था। जो को आश्चर्य हो रहा था कि नाना को इतनी देर क्यों लग रही है। जब कभी उसे इस तरह से जाना पड़ता था तो वह बहुत जल्दी ही लौट आती थी। दरवाजे की घंटी फिर बजी। इस बार जब जो बाहर से लौट कर आई तो बहुत खुश थी।

'मोटा स्टीनर है!' जो ने हँसते हुए कहा। तीनों में स्टीनर के बारे में बात होने लगी। बहुत रईस था वह। क्या उसने रोज मिनॉन को छोड़ दिया। जो कुछ कहने ही वाली थी कि घंटी फिर बजी और जो को फिर उठ कर जाना पड़ा।

'क्या मुसीबत है! वह काउन्ट इस वक्त भी आ धमका, उसे तो शाम को आना था। मैंने उससे बार-बार कहा कि मदाम नहीं हैं—

हर गयी हुई है लेकिन वह नहीं टला और बीन के अन्दर से झुक कर
ापान से हट गया है।'

सवा चार बज गया था और नाना अब तक नहीं लौटी थी। न जाने कहाँ थी वह—क्या कर रही थी? दो मुलाकाती और आये। तीनों औरतें बात करते-करते ऊँघने लगीं। साढ़े चार हो गया—कुछ न कुछ विघ्न अवश्य पड़ गया होगा नाना के आने में! और तभी पीछे के जीने पर कदमों की आहट आई। नाना किवाड़ खोल कर हाँफती हुई अन्दर में घुसी। उसका चेहरा लाल हो गया था, उसके कपड़े फट गये थे और मैले हो गये थे।

'बहुत देर कर दी आपने—बहुत से लोग आपका इन्तजार कर रहे हैं।' दो ने तनिक क्रोध से कहा।

नाना को गुस्सा आ गया—वह तो थकी हुई और परेशान लौटी है और कोई उससे सीधे बात भी नहीं कर रहा है। तभी मदाम लेरॉ
पूछा, 'रुपए मिल गये?'

'हुँह! यह भी कोई पूछने की बात है!' नाना ने कुर्सी पर
कर कपड़ों के अन्दर से एक लिफाफा निकाला जिसमें सौ-सौ फ्रैंक
चार नोट थे। बहुत देर से गयी थी और मदाम लेरॉ का आग्र
सम्भव नहीं था। नाना उन्हें लुई के बारे में बहुत-सी बातें ब
लगी।

'मदाम! कुछ लोग आपका इन्तजार कर रहे हैं,' नाना को
क्रोध आ गया। लोग इन्तजार कर रहे हैं तो करने दो। प
अपना काम खत्म कर लेगी तब देखा जायगा; इन कमबख्तों ने
कर रखा है। चाची ने नोट लेने के लिए हाथ बढ़ाए।

'नहीं-नहीं—अब नहीं! यह तीन सौ फ्रैंक तुम्हारे आने
और पचास फ्रैंक मैं रखूँगी।' नाना बोली।

मदाम लेरों अगले दिन लुई को ले आने का वायदा करके चली गयीं। तब कहीं नाना ने दूसरी तरफ ध्यान दिया।

'तुम कह रही थीं कि कुछ लोग इन्तजार कर रहे हैं!' नाना ने आराम से बैठते हुए जो से पूछा।

'जी! हाँ! तीन व्यक्ति हैं," जो ने उत्तर दिया। सबसे पहले उसने स्टीनर का नाम लिया। नाना फिर चिढ़ गयी। आखिर स्टीनर समझता क्या है! कल उसने उस पर फूल फेंकवा दिये तो समझता है जैसे उसने नाना को खरीद ही लिया!

'नहीं—जो—नहीं! आज मैं किसी से नहीं मिलूँगी, बहुत थक गयी हूँ। जाकर सबसे कह दो।'

'लेकिन मदाम! जरा सोचिए तो! कम से कम मस्यो स्टीनर से तो मिल लीजिए!' जो नाना की नासमझी से नाराज थी। स्टीनर जैसे रईस आदमी से न मिलना मूर्खता ही तो है! जो ने यह भी बताया कि वह रात वाला काउन्ट भी इसी समय से आ गया है और सोने वाले कमरे में बहुत देर से अकेला बैठा है। लेकिन नाना का क्रोध बढ़ गया और उसे जिद हो गयी। नहीं—वह किसी से भी नहीं मिलेगी! गदहे कहीं के।

'भगा दो सब को—निकाल दो! मैं मदाम मलॉयर के साथ ताश खेलूँगी।'

फिर घंटी बजी! तोबा कोई सीमा भी है इन लोगों के आने की। नाना ने जो से कहा कि दरवाजा न खोले लेकिन जो ने जैसे सुना ही नहीं। लौट कर उसने दो कार्ड नाना के हाथ में दे दिये। 'मैंने दोनों सज्जनों को ड्राइंग-रूम में बैठा दिया है।'

नाना क्रोध में उछल पड़ी लेकिन कार्डों पर मार्क्विस द शॉर्द और काउन्ट मफ़ेट के नाम पढ़कर वह कुछ शांत हुई और कुछ देर खड़ी होकर सोचती रही।

'कौन हैं ये लोग—क्या तुम जानती हो?' नाना ने पूछा।

'मार्क्विस को मैं थोड़ा-सा जानती हूँ।' नाना ने जो की तरफ़ गौर से देखा। जो ने फिर कहा, 'मैंने उन्हें एक स्थान पर देखा था!'

अनिच्छा से नाना कपड़े बदलने ड्रेसिंग रूम में चली गयी। नाना का गुस्सा अभी पूरी तरह से शान्त नहीं हुआ था। वह तमाम पुरुष वर्ग को धीरे-धीरे गालियाँ दे रही थी। लेकिन फिर भी उसने अपनी आकृति को जरा सँवार लिया और शान्ति से मुस्कुराती हुई वह ड्राइंग-रूम के दरवाज़ों की तरफ बढ़ रही थी कि जो ने जल्दी से मार्क्विस द शॉर्द और काउन्ट मफेट को उसी कमरे में बुला लिया।

'क्षमा कीजिएगा! आपको बहुत देर प्रतीक्षा करनी पड़ी!'

नाना ने शिष्टता से कहा। दोनों आगन्तुक अभिवादन करके बैठ गये।

ड्रेसिंग रूम सबसे ज्यादा सजा हुआ कमरा था। खिड़की पर सुनहरे काम के पर्दे पड़े हुए थे, एक खूबसूरत-सी शृङ्गार मेज थी और कीमती गद्देदार कुर्सियाँ और फानूस थे। शृङ्गार मेज पर ढेरों फूल रखे थे जिनसे बहुत गहरी और मादक सुगंध निकल रही थी। नाना ने अपना अधखुला गाउन जल्दी से लपेट लिया था मानों वह लोग अचानक उसके शृङ्गार करते समय आ गये हों। वह अपने सुहाने कपड़ों में लिपटी हुई! बड़े आराम से मुस्कुरा रही थी।

'मदाम, हमारे इस तरह आने को क्षमा कीजिएगा' काउण्ट मफेट बड़ी गम्भीरता से बोले, 'हम लोग एक चंदे के सिलसिले में आये हैं। यह सज्जन और मैं एक निर्धन-सहायक समिति के सदस्य हैं।'

मार्क्विस भी नाना की तारीफ करते हुए जल्दी से बोले, 'जब हमें पता लगा कि मकान में एक महान अभिनेत्री रहती है तो हमने निश्चय किया कि स्वयं जाकर गरीबों की सहायता की माँग करें। हर प्रतिभावान व्यक्ति उदार होता ही है।'

नाना बड़ी शिष्टता से व्यवहार कर रही थी लेकिन मन ही मन बहुत नाराज भी थी—झुँझला रही थी। यह बुड्ढा ही होगा जो दूसरे को साथ लाया होगा—उसकी आँखों में ही कितनी बदमाशी मालूम पड़ रही है। नाना यही सोच रही थी। यह दूसरा भी कोई भला आदमी नहीं लगता।

'अवश्य, आप लोगों ने अच्छा ही किया यहाँ आ गये।' नाना की आवाज में बहुत माधुर्य था। तभी बाहर की घंटी एक बार और बजी और नाना चौंक पड़ी। अभी लोगों का आना बन्द नहीं हुआ।

'मुझे किसी भी सहायता करने में हमेशा बहुत खुशी होती है।' नाना ने बात जारी रखते हुए कहा। वास्तव में वह इस बात पर बहुत खुश थी कि इन लोगों ने उसके सामने सहायता के लिए माँग पेश की थी। मार्क्विस ने नाना को अनेक विभिन्न परिवारों की दुखभरी दास्तान सुनायी। नाना पर उसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा—उसकी खूबसूरत आँखों में आँसू भर आये। 'बेचारे गरीब लोग।' सहानुभूति से नाना विह्वल हो गयी थी। क्षणिक उत्तेजना में बनावट के हाव-भाव खत्म हो गये और वह आगे को झुक पड़ी; अधखुला ड्रेसिंग-गाउन और ज्यादा ढीला हो गया; उसका गला और जवान वक्ष और ज्यादा चमक उठा और गाउन के नाजुक कपड़े में से उसके शरीर की मांसल गोलाइयाँ और उभार अधिक स्पष्ट हो गये। मार्क्विस का बूढ़ा चेहरा उत्तेजना से सुर्ख हो गया और काउन्ट मफेट ने जो कुछ कहने ही वाले थे, निगाहें नीची कर लीं। उस छोटे से कमरे में उन्हें और ज्यादा घुटन और गर्मी महसूस होने लगी।

नाना अपनी जगह से उठी। दरवाजे की घंटी एक बार फिर जोर से बज उठी। ओफ! आनेवालों का सिलसिला क्या कभी खत्म नहीं होगा? काउन्ट मफेट और मार्क्विस द शोर्द ने एक बार एक दूसरे की तरफ देखा

'कौन हैं ये लोग—क्या तुम जानती हो ?' नाना ने पूछा ।

'मार्क्विस को मैं थोड़ा-सा जानती हूँ ।' नाना ने जो की तरफ गौर से देखा । जो ने फिर कहा, 'मैंने उन्हें एक स्थान पर देखा था !'

अनिच्छा से नाना कपड़े बदलने ड्रेसिंग रूम में चली गयी । नाना का गुस्सा अभी पूरी तरह से शान्त नहीं हुआ था । वह तमाम पुरुष वर्ग को धीरे-धीरे गालियाँ दे रही थी । लेकिन फिर भी उसने अपनी आकृति को जरा सँवार लिया और शान्ति से मुस्कुराती हुई वह ड्राइंग-रूम के दरवाज़ों की तरफ बढ़ रही थी कि जो ने जल्दी से मार्क्विस द शॉर्द और काउन्ट मफेट को उसी कमरे में बुला लिया ।

'क्षमा कीजिएगा ! आपको बहुत देर प्रतीक्षा करनी पड़ी !'

नाना ने शिष्टता से कहा । दोनों आगन्तुक अभिवादन करके बैठ गये ।

ड्रेसिंग रूम सबसे ज्यादा सजा हुआ कमरा था । खिड़की पर सुनहरे काम के पर्दे पड़े हुए थे, एक खूबसूरत-सी शृङ्गार मेज थी और कीमती गद्देदार कुर्सियाँ और फानूस थे । शृङ्गार मेज पर ढेरों फूल रखे थे जिनसे बहुत गहरी और मादक सुगंध निकल रही थी । नाना ने अपना अधखुला गाउन जल्दी से लपेट लिया था मानों वह लोग अचानक उसके शृङ्गार करते समय आ गये हों । वह अपने सुहाने कपड़ों में लिपटी हुई ! बड़े आराम से मुस्कुरा रही थी ।

'मदाम, हमारे इस तरह आने को क्षमा कीजिएगा' काउण्ट मफेट बड़ी गम्भीरता से बोले, 'हम लोग एक चंदे के सिलसिले में आये हैं । यह सज्जन और मैं एक निर्धन-सहायक समिति के सदस्य हैं ।'

मार्क्विस भी नाना की तारीफ करते हुए जल्दी से बोले, 'जब हमें पता लगा कि मकान में एक महान अभिनेत्री रहती है तो हमने निश्चय किया कि स्वयं जाकर गरीबों की सहायता की माँग करें । हर प्रतिभावान व्यक्ति उदार होता ही है ।'

नाना बड़ी शिष्टता से व्यवहार कर रही थी लेकिन मन ही मन बहुत नाराज भी थी—झुँझला रही थी। यह बुड्ढा ही होगा जो दूसरे को साथ लाया होगा—उसकी आँखों में ही कितनी बदमाशी मालूम पड़ रही है। नाना यही सोच रही थी। यह दूसरा भी कोई भला आदमी नहीं लगता।

'अवश्य, आप लोगों ने अच्छा ही किया यहाँ आ गये।' नाना की आवाज में बहुत माधुर्य था। तभी बाहर की घंटी एक बार और बजी और नाना चौंक पड़ी। अभी लोगों का आना बन्द नहीं हुआ।

'मुझे किसी भी सहायता करने में हमेशा बहुत खुशी होती है।' नाना ने बात जारी रखते हुए कहा। वास्तव में वह इस बात पर बहुत खुश थी कि इन लोगों ने उसके सामने सहायता के लिए माँग पेश की थी। मार्क्विस ने नाना को अनेक विभिन्न परिवारों की दुखभरी दास्तान सुनायी। नाना पर उसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा—उसकी खूबसूरत आँखों में आँसू भर आये। 'बेचारे गरीब लोग।' सहानुभूति से नाना विह्वल हो गयी थी। क्षणिक उत्तेजना में बनावट के हाव-भाव खत्म हो गये और वह आगे को झुक पड़ी; अधखुला ड्रेसिंग-गाउन और ज्यादा ढीला हो गया; उसका गला और जवान वक्ष और ज्यादा चमक उठा और गाउन के नाजुक कपड़े में से उसके शरीर की मांसल गोलाइयाँ और उभार अधिक स्पष्ट हो गये। मार्क्विस का बूढ़ा चेहरा उत्तेजना से सुर्ख हो गया और काउन्ट मफेट ने जो कुछ कहने ही वाले थे, निगाहें नीची कर लीं। उस छोटे से कमरे में उन्हें और ज्यादा घुटन और गर्मी महसूस होने लगी।

नाना अपनी जगह से उठी। दरवाजे की घंटी एक बार फिर जोर से बज उठी। ओफ! आनेवालों का सिलसिला क्या कभी खत्म नहीं होगा! काउन्ट मफेट और मार्क्विस द शोर्ट ने एक बार एक दूसरे की तरफ देखा

और फिर जल्दी ही निगाहें फेर लीं। प्रकट था कि दोनों को एक दूसरे का वहाँ होना अच्छा नहीं लग रहा था।

नाना जब लौटकर आयी तो पाँच-पाँच फ्रैंक के कुछ सिक्के उसके हाथ में थे। उसके चेहरे पर मस्ती के भाव लौट आये थे और वह उत्फुल्ल रही थी।

'यह लीजिये! यह उन बदनसीब गरीबों के लिए है। काश, कि मैं इससे ज्यादा दे सकती! लेकिन अगली बार फिर देखा जायगा!'

काउन्ट ने सिक्के उठा लिये, केवल एक आखिरी सिक्का नाना की हथेली पर रह गया। उसे उठाने के प्रयत्न में काउन्ट की उँगलियाँ नाना के हाथ से छू गयीं। उस खाल में इतनी जवान गर्मी थी—इतनी सुखायनिश्चित थी कि काउन्ट के शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गयी।

बात खत्म हो गयी थी। और अधिक रुकने का तो अब कोई कारण था नहीं। काउन्ट और मार्किस उठ पड़े। बाहर दरवाजे की घंटी फिर ज़ोर से बज उठी। नाना ने पल भर को इन लोगों को रोक लिया ताकि जो इतने सारे लोगों के बैठने का प्रबन्ध ठीक से कर दे। इतने लोग आ चुके थे कि अब तक तो सारा घर खचाखच भर गया होता। लेकिन जब नाना ने दरवाजा खोला तो देखा कि ड्राइंग रूम बिल्कुल खाली पड़ा है। नाना को आश्चर्य हुआ। तो क्या जो ने सब लोगों को अलमारियों में छिपा दिया है? नाना ने दोनों लोगों को विदा दे दी। काउन्ट मफेट ने झुक कर अभिवादन किया। इतने अनुभवी और दुनियादार होने के बावजूद भी काउन्ट नाना की मुस्कुराहट और उमङ्गभरी दृष्टि के सामने घबड़ा-से गये थे। कमरे का गर्म माहौल, फूलों की तेज और गहरी सुगन्ध और नाना की जवानी की स्फूर्त मादकता उन पर पूरी तरह छा गयी थी, धमनियों में रक्त का संचार ज्यादा वेगपूर्ण हो गया था, नथुनों से गर्म साँस तेज़ी से आने लगी थी। काउन्ट को ताज़ी हवा की

सख्त जरूरत थी। मार्क्विस द शोर्द काउन्ट के पीछे-पीछे थे; उनका चेहरा अन्दर करवटें लेती हुई बूढ़ी वासना से विकृत हो गया था। यह समझ कर कि उन्हें कोई देख नहीं रहा है, उन्होंने चलते-चलते नाना की तरफ आँख मार दी।

नाना जब ड्रेसिंग-रूम में वापस आयी तो जो ने उसे बहुत से पत्र दिये।

'कितने चालाक थे दोनों—कमबख्त—मुझसे पचास फ्रैन्क मार ले गये।' नाना ने हँसते हुए कहा। उसे इस बात पर बहुत हँसी आ रही थी कि लोग उससे भी धन माँग सकते हैं—एक कौड़ी भी नहीं बची अब उसके पास—नाना हँसे जा रही थी। लेकिन पत्र और कार्डों को देखकर उसे फिर से गुस्सा आ गया। भाड़ में जायें सब के सब। उसने जो से कहा कि सब को बाहर निकाल दे। आज रात तो कम से कम वह आराम की नींद सो ले। एक बार उसे ख्याल आया कि डगेनेट से आने के लिए कहलवा दे जिसे कुछ देर पहले वह मना करवा चुकी थी लेकिन आज रात को तो वह सोयेगी ही—रोज कोई न कोई आ जाता था और उसे जागना पड़ता था लेकिन आज—आज वह थियेटर के बाद आराम से सोयेगी। नाना इस विचार से बहुत खुश हो गयी।

जो फिर भी खड़ी रही।

'मदाम! तो क्या मस्यो स्टीनर से भी चले जाने को कह दूँ!'

'बिल्कुल! सब से पहले उसी को निकालो यहाँ से!'

नाना ने झुँझलाहट से कहा। जो हिली नहीं। जो का ख्याल था कि स्टीनर को निकाल देना केवल मूर्खता होगी। इतने रईस आदमी को फँसाना चाहिए। फिर स्टीनर को फँसा कर तो एक और लाभ भी होता, नाना अपने प्रतिद्वन्द्वी रोज मिनॉन को नीचा दिखा सकती थी। अब तक स्टीनर पर रोज का ही जाल बिछा था लेकिन आज तो स्टीनर स्वयं ही नाना के पास आया था।

जाओ-जाओ। निकालो स्टीनर को—मुझे उससे चिढ़ है!
मनोभावों को पूर्णतया समझ गयी थी। लेकिन एकदम से उसको
ख्याल आया। शायद कभी उसे स्टीनर की जरूरत पड़ सकती है!
की आँखों में शरारतभरी मुस्कान भर गयी। और अगर उसे फँसाना
है तब भी उसे आज तो भगा ही देना चाहिए। इस प्रकार उसकी
ष्णा और बढ़ जायगी।'

जो अचम्भे में रह गयी। नाना से उसका सारा विरोध खत्म हो
गया। उसने आदर से अपनी मालकिन की तरफ देखा—सच—स्टीनर
को पूर्णतया फँसाने की कितनी अच्छी युक्ति थी। वह फौरन वहाँ से चली
गयी।

नाना ने सन्तोष की साँस ली। फ्रान्सिस उसके बाल बनाने के लिए
आ गया था। बाहर लगातार घंटी बजी जा रही थी। नाना को भी इस
बात में मजा आने लगा था कि लोग उसका इन्तजार कर रहे हैं। जो
थक गयी थी किवाड़ खोलते-खोलते। कुछ फुर्सत पाकर जो ने आकर
नाना को कपड़े पहनाने शुरू किये। लेकिन बीच-बीच में घंटी लगातार
बज उठती थी और जो को बार-बार बाहर जाना पड़ता था। बाहर बुरी
तरह भीड़ हो गई थी और मजबूरन जो को एक कमरे में कई आदमियों
को बैठाना पड़ गया था। अपने कमरे में बन्द नाना इन लोगों की
मूर्खता पर हँस रही थी। जो लेवॉरदेत को अन्दर बुला लाई। उसे दे
कर नाना बहुत खुश हुई। कितना अच्छा आदमी था लेवॉरदेत! कभी उ
न चाहता था—उसे कभी परेशान न करता था! हर काम में सहा
ही करता था! नाना खुश हो कर बोली, 'चलो—मुझे थियेटर
चलो। उसके बाद हम साथ-साथ खाना खायेंगे।' बहुत काम का आ
था वह। उसने आते ही सब कर्ज वालों को, जो नाना को परेशा
रहे थे, वापस भेज दिया। नाना अब तक तैयार हो गयी थी
लेवॉरदेत से कहा, 'चलो जल्दी अब निकल चला जाय।'

तभी जो परेशान कमरे में आयी। 'मदाम! अब घंटी सुनने का मेरा बस नहीं। इस बार तो पूरी भीड़ चली आ रही है।'

फ्रान्सिस भी मुस्कुरा पड़ा हालांकि वह कभी ऐसा करता नहीं था। लेवॉरदेत का हाथ पकड़ कर नाना चुपके से बाहर निकल गयी। लेवॉरदेत पर उसे विश्वास था और लोगों की तरह वह उसे परेशान नहीं करता था।

# ४

अपनी सफलता की खुशी मनाने के लिए नाना ने एक शानदार दावत देने का निश्चय किया था। बहुत-से लोगों को निमंत्रण दिया गया था। नाना ने फॉशेरी से कहा था कि काउन्ट मफेट को भी आने का निमंत्रण दे दे। मंगलवार को काउन्ट मफेट के यहाँ उनके मित्रों की बैठक होती थी। काउन्ट मफेट और काउन्ट की पत्नी, काउन्टेस सैबाइन, के मित्र और परिचित उस दिन वहाँ एकत्रित होते थे। हेमर के साथ फॉशेरी भी उस दिन वहाँ गया था। उस दिन थियेटर में हेक्टर ने काउन्ट और काउन्टेस से उसका परिचय कराया था। फॉशेरी काउन्टेस के करीब आना चाहता था। लेकिन काउन्ट के घर पर इतनी भीड़ थी कि काउन्टेस का ध्यान विशेष रूप से फॉशेरी की तरफ नहीं जा सका था। काउन्ट वाँद्युवरे थे, मदाम ह्यूगाँ और उसका बेटा जार्ज था, स्टीनर था, और बहुत-सी महिलाएँ और पुरुष थे। जार्ज की उम्र अभी बहुत कम थी—चेहरे पर बच्चों का-सा भोलापन था लेकिन उस दिन वैराइटी थियेटर में उसने नाना को देखा था और बाद में वह नाना के घर भी गया था। उसके खिंचाव में युवक की वासना नहीं थी बल्कि बचपन का आवेश था, पागलपन था। नाना की कोई भी चीज अगर

वह छू भी लेता था तो खुशी में मग्न हो जाता था। नाना भी उसके सरल आकर्षण को दुतकार नहीं सकी थी और उसे अपने पास आने-जाने देती थी। नाना के यहाँ की दावत में वह भी निमंत्रित था और इस बात पर वह फूला नहीं समाता था। जार्ज और नाना के इस संबंध का किसी को पता न था।

समय आया तो फॉशिरी ने काउन्ट से नाना के निमंत्रण का जिक्र किया। वाँन्दूवरे भी पास ही खड़ा था। पहले तो काउन्ट मफेट ने बिल्कुल ही मना किया कि वह नाना को नहीं जानते लेकिन वाँन्दूवरे ने कटाक्ष करते हुए कहा कि उस दिन तो मार्क्विस द शौर्द के साथ वह नाना के यहाँ गये थे। काउन्ट के गम्भीर चेहरे पर परेशानी की लहर दौड़ गयी।

'वह तो किसी चन्दे के सम्बन्ध में उसके यहाँ गया था। मैं उस औरत को अच्छी तरह नहीं जानता, इसलिए निमंत्रण स्वीकार करने में असमर्थ हूँ।'

धर्म की मजबूत पाबन्दियों से काउन्ट का ही क्या, सारे परिवार का, उस मकान का, काउन्टेस का व्यक्तित्व कभी मुक्त नहीं हो पाया था। घर के माहौल में धार्मिक नियमों की गम्भीरता समायी हुई थी। धर्म के प्रभाव वाले के नीचे उस घर का जीवन जैसे कुंठित हो गया था। काउन्टेस सैबाइन की उम्र तो ज्यादा नहीं थी लेकिन लगता था जैसे उनका यौवन प्रतिबन्धों की इन बर्फीली दीवारों के पीछे ठिठुर गया हो।

'काउन्टेस खूबसूरत तो हैं हालाँकि उनका रूप ढला हुआ मालूम पड़ता है।' फॉशिरी ने सोचा।

काफी देर हो गयी थी और लोग विदा होने लगे थे। फॉशिरी और वाँन्दूवरे ने काउन्ट से एक बार फिर नाना के यहाँ की दावत के निमंत्रण की बात की लेकिन काउन्ट ने साफ-साफ मना कर दिया।

अगले दिन बुधवार की रात को नाना के यहाँ दावत थी। सुबह से ही जो काम में फँसी हुई थी। सारा सामान—खाने की चीजों के अतिरिक्त मेजपोश, नैपकिन, छुरी-काँटे, गिलास, प्लेट्स आदि—सब किसी रेस्तोराँ से आये थे। ड्राइंग रूम घर का सबसे बड़ा कमरा था—उसी में दावत का प्रबन्ध था। उस कमरे का सारा सामान ड्रेसिंग-रूम में ठूस दिया गया था। नाना चाहती थी कि अपनी सफलता की खुशी में ऐसी शानदार दावत दे कि लोग भी याद करें। पच्चीस आदमियों के खाने का प्रबन्ध किया गया था।

रात को जब नाना थियेटर से लौट कर आयी थी तो डगेनेट और जार्ज उसके साथ ही वहाँ से आ गये थे। नाना ने जो से पूछा :

'कहो—सब इन्तजाम ठीक है न ?'

जो ने झुँझला कर उत्तर दिया, 'क्या बताऊँ ! होटल वाले न जाने क्या कर रहे हैं। और फिर पहले वाले यह दोनों लोग आ गये थे—उन्हें बड़ी मुश्किल से भगा मिला।'

जो का मतलब उन दो व्यक्तियों से था जो कुछ दिन पहले तक नाना के यहाँ बराबर आते रहते थे और जिनके द्वारा नाना का खर्च चलता था लेकिन अपनी इस नयी सफलता के बाद उसने उनसे नाता तोड़-लेने का निश्चय कर लिया था। अब तो भविष्य निश्चित दिखायी पड़ता था—अब नाना को उन पर निर्भर रहने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

डगेनैट और जार्ज नाना के साथ ही थियेटर से लौट आये थे। बाकी कोई मेहमान अब तक नहीं आया था। जो नाना को तैयार करने आयी। जो ने उसके बालों में और गाउन में सफेद गुलाब लगा दिये और उसके बाल सँवार दिये। ड्रेसिंग रूम में न जाने कहाँ-कहाँ की ऊट-पटाँग चीजें भरी हुई थीं। नाना जैसे ही तैयार होकर वहाँ से हटने को हुई, उसका गाउन किसी चीज में फँसा और फट गया। नाना को गुस्सा

ा—यह अभी ही होना था । उलझन में उसने वह गाउन उतार
लेकिन और कोई दूसरा उसे पसन्द भी नहीं आया; उसने फिर
गाउन पहन लिया । गुस्से और उलझन में वह रुआँसी हो गयी ।
ट और जार्ज ने फटा हुआ हिस्सा पिनों से जोड़ दिया और जो ने
वार फिर वाल सँवार दिये । जार्ज को वहुत आनन्द मिल रहा था
ना की सेवा करने में । तभी वाहर दरवाजे की घंटी वजी । नाना वाहर
ली गयी । जार्ज जमीन पर वैठा था । डगेनैंट उसकी तरफ गौर से
ख रहा था—जार्ज शर्मा गया । दोनों में आपस में एक अजीव तरह
की मैत्री हो गयी थी । दोनों नाना को चाहते थे लेकिन दोनों में तनिक-
सी भी ईर्ष्या नहीं थी ।

सवसे पहले आने वाले मेहमानों में हेक्टर और क्लेरिस थे । नान
हेक्टर को जरा भी नहीं जानती थी और न ही उसने हेक्टर को निमंत्रण
दिया था लेकिन नाना ने इस वात पर कोई ध्यान नहीं दिया और उन्हें
वड़े प्रेम और सत्कार से वैठाया । इतने में ही अपने पति और स्टीनर के
साथ रोज मिनॉन कमरे में आयी । नाना ने वहुत तपाक और शिष्टता
से इन लोगों का स्वागत किया । उनके आपसी व्यवहार में ईर्ष्या का
कोई भाव नहीं मालूम पड़ रहा था । स्टीनर अवश्य कुछ घवड़ाया हुआ-
सा था । वह नाना से ज्यादा वात करना चाहता था लेकिन रोज की
कड़ी निगाह देखकर वह सहम गया था । इसके वाद काउन्ट वांद्रवरे
साथ व्लांश द शिवरी आयी और इनके पीछे ही फॉशिरी और लूसी
लूसी नाना से व्यक्तिगत रूप से परिचित नहीं थी लेकिन उसने न
की और उसके अभिनय कौशल की वहुत प्रशंसा की । नाना इस
से वहुत प्रसन्न थी कि पहली वार एक गृहस्वामिनी की तरह वह
लोगों की खातिर कर रही है ।

फॉशिरी के कमरे में आते ही नाना को इस वात का ध्यान आ
कि उसने काउन्ट मफेट को भी निमंत्रण दिया था । निमंत्रण

फॉशेरी के द्वारा कहलवाया था, इसलिए वह फॉशेरी से काउन्ट का उत्तर सुनने के लिए अधीर थी। अवसर मिलते ही नाना के पास जाकर हल्के से पूछा :

'क्या वह आयेंगे ?'

'नहीं—उन्होंने मना कर दिया !' फॉशेरी ने रूखेपन से सीधा-सादा उत्तर दे दिया, हालाँकि उसने सोच रखा था कि मफेट की तरफ से कोई ऐसा बहाना बना देगा कि नाना का दिल न दुखे। नाना ने प्रश्न एका-एक पूछ लिया था और फॉशेरी बहाना न ढूँढ़ सका था। लेकिन उसने देखा कि उसके रूखे उत्तर का प्रभाव नाना पर बहुत खराब पड़ा इसलिए उसने जल्दी से कहा, 'वह इसलिए नहीं आ सके कि उन्हें पहले से ही काउन्टेस के साथ किसी सरकारी दावत में जाना था।'

लेकिन नाना को किसी तरह विश्वास हो गया था कि फॉशेरी ने मफेट से कहा ही नहीं होगा। दोनों एक दूसरे से नाराज हो गये। इसी बीच में बाहर से और लोगों के हंसने की आवाज आयी और अचानक लेबोरदेत कमरे में आ गया और उसके साथ पाँच-छः औरतें हंसती हुई कमरे में आ गयीं। तभी फॉशेरी ने पूछा, 'और बार्दिनेव नहीं आया !' नाना ने फौरन उत्तर दिया, 'बड़े अफसोस की बात है लेकिन वह आज की दावत में शामिल नहीं हो सकेगा !' साथ ही रोज मिनॉन ने भी कहा कि बार्दिनेव के पैर में मोच आ गयी है, इसलिए वह आ नहीं सकेगा। बार्दिनेव के न आने पर सबने खेद प्रकट किया। बार्दिनेव के बिना तो दावत में मजा नहीं आता। लेकिन इतने में ही पीछे से आवाज आयी।

'अच्छा ! तो तुम लोग मुझे बिल्कुल ही भूल गये !'

सब लोगों ने पीछे मुड़ कर देखा। साइमोन के कंधे पर झुका हुआ बार्दिनेव खड़ा था। उसे देखकर सब लोग खुश हो गये।

'सोचा, तुम सब यहाँ पर हो—मैं अकेला पड़ा-पड़ा ऊब जाता

ए चला आया। और पैर खराब है तो क्या हुआ—पेट तो बिल्कुल
है देखना कितना खाता हूँ! ओफ! कमबख्त!' बात कहते-कहते
दिनेव पीड़ा से कराह उठा। साइमोन जरा आगे बढ़ गयी थी और
दिनेव के जिस पैर में मोच थी वह हिल गया था।

अब तक लगभग सभी मेहमान आ चुके थे—खाने के कमरे में चीजें भी लग गयी थीं। नाना बेसब्री से सोच रही थी कि आखिर बैरा आकर कहता क्यों नहीं कि खाना लग गया। तभी कुछ मर्द और औरतें कमरे में आ गयीं। नाना को ताज्जुब हुआ; वह इनमें से किसी को भी नहीं जानती थी। कोई और भी नहीं जानता था कि यह सब कौन हैं? वाँधूवरे ने बताया कि इन लोगों को उन्होंने बुला लिया था। नाना हैरान हो गयी, उसने फिर भी काउन्ट को धन्यवाद दिया और लेवॉरदेत से कहा कि बैरा से सात और व्यक्तियों के लिए प्रबन्ध करने के लिए कह दे। इस समय तीन व्यक्ति और आ गये। क्या मजाक है आखिर यह? नाना को क्रोध आने लगा था लेकिन तभी दो लोग और कमरे में आ गये और नाना हँस पड़ी। यह तो वास्तव में खूब ही मजाक है! इतनी जगह भी कहाँ है—कहाँ बैठेंगे इतने सारे लोग?

वादिनेव ने कहा, 'सब लोग तो आ गये—अब खाने में क्या देर है?'

'हाँ! लोग तो सभी आ गये हैं!' नाना कह कर हँस दी। लेकि वह उठी नहीं। उसके चेहरे पर जो भाव था उससे यह मालूम होता कि वह किसी की प्रतीक्षा कर रही है। उस आने वाले व्यक्ति का इन्तजार करना ही था। थोड़ी ही देर में वह व्यक्ति आ भी गया। देखने में बहुत शानदार लगता था—लम्बा कद और खूबसूरत दाढ़ी। आश्चर्य की बात यह थी कि उस व्यक्ति को कमरे में आ किसी ने नहीं देखा था। अवश्य ही वह नाना के सोने के कमरे में दाखिल हुआ होगा। लोगों में कुछ कानाफूसी हुई। कोई

जानता था। केवल काउन्ट वांडूवरे ही उस नये व्यक्ति को जानते थे और उन्होंने उस व्यक्ति से हाथ मिलाया। लोग उसके बारे में अजीब धारणाएँ बना रहे थे। काफी लोगों का विचार था कि इसी आदमी के पैसे से दावत दी गयी है।

बैरे ने आकर घोषणा की—'मदाम! खाना लग गया।'

नाना स्टैनर के साथ खाने के कमरे में घुसी। बाकी सब लोग बिना तकल्लुफ के हँसते हुए खाने के कमरे में घुसे। जितने लोगों के बैठने का प्रबन्ध था उससे कहीं ज्यादा लोग कमरे में थे। थार्दिनेव का पैर खराब था, इसलिए उसको आराम से बैठा दिया गया। अभी बैरों ने खाना परसना शुरू ही किया था कि अभी बैठक और खाने के कमरे के बीच की किवाड़ खुली और तीन व्यक्ति—दो आदमी और एक औरत—कमरे में आ गये। नाना ने देखा, वह उनमें से किसी को नहीं जानती थी। ओफ आखिर कब तक यह मजाक चलेगा! नाना को हल्का-सा गुस्सा भी आ गया।

'नाना! यह हैं मरयो फूकॉरमां।' वांडूवरे बोला, 'मैंने इन्हें अपनी ओर से निमंत्रण दे दिया था।'

फूकॉरमां ने झुककर अभिवादन किया, 'मैंने भी अपने एक-दो मित्रों को लाने की धृष्टता की है। आशा है आप क्षमा करेंगी।'

'कोई बात नहीं—ठीक है। बैठ जाइये। तुम लोग जरा थोड़ा-थोड़ा सा खिसक जाओ।' नाना बोली।

सब लोग सट-सटकर पास-पास बैठ गये। इतनी भीड़ थी मेज पर कि लोग ठीक-ठीक खा भी नहीं पा रहे थे। खाने के साथ बातें भी खूब जोर से हो रही थीं। अधिकतर औरतें अपने बच्चों के बारे में बातें कर रही थीं। जार्ज ने डगेनेंट से आश्चर्य से पूछा कि क्या इन सब औरतों के बच्चे हैं। उत्तर में डगेनेंट ने जार्ज को लगभग हर औरत के विषय में कुछ न कुछ बताया। लूसी, ब्लांश, रोज इधर-उधर की बातें करती

रहीं। स्टीनर नाना की बगल में बैठा था और जब कभी नाना उसके कान में कोई बात कह कर हँस देती थी तो वह चुकन्दर की तरह सिर से पैर तक लाल हो जाता था। दूर बैठा हुआ मिनॉन यह देख कर परेशान हो रहा था कि स्टीनर नाना के जाल में खूब फँसता जा रहा है। उधर रोज फॉशिरी से खूब घुल-मिल कर बात कर रही थी। यह औरतें मूर्ख होती हैं न ? फॉशिरी तो एक मामूली पत्रकार है—उससे क्या मिल सकता है ? ज्यादा से ज्यादा रोज की प्रशंसा में एक लेख लिख देगा। गागा हेक्टर को फँसाने का प्रयत्न कर रही थी हालाँकि गागा हेक्टर की दादी की उम्र की थी। लूसी वांब्रूवरे से रोज और फॉशिरी और मिनॉन की बुराई कर रही थी। वादिनेव की तरफ से उसके पास बैठी हुई औरतों का ध्यान हट गया था—उसे खाने में कष्ट हो रहा था और वह बिगड़ रहा था। भोजन काफी देर से चल रहा था। शराब के दौर तो शुरू से ही चल रहे थे और इस समय तक लगभग हर एक ने काफी शैम्पेन आदि पी ली थी। बातों का प्रवाह तेज हो गया था और नाना का विचार था कि बातों में भद्दापन भी आ गया है। नाना को इस बात पर क्रोध आ भी रहा था। लोगों के चेहरे पर शुरूर की हल्की लाली थी—कमरे में हल्की-हल्की गर्मी थी, बातों और कहकहों में उच्छृङ्खलता थी।

फूकॉरमां गप मार रहा था : 'मैंने हर प्रकार की शराब पी है—तेज से तेज जो आदमी को इतना नशे में कर दे कि वह मर ही जाय—लेकिन मेरे ऊपर किसी चीज का असर ही नहीं होता—मुझे कभी नशा नहीं होता।' और यह कहते हुए वह अपनी कुर्सी पर बैठा हुआ पीता चला गया। वह हेक्टर और लेबॉरदेत से मजाक कर रहा था। नौबत इस बात तक आ गयी थी कि वांबूवरे को बीच-बचाव करके फूकॉरमां को चुप कराना पड़ा। मिनॉन, स्टीनर और वादिनेव सबके सब इतने नशे में थे कि वह भी जोर-जोर से बोलने लगे थे।

नाना इन लोगों से अब तक इतना नाराज हो गयी थी कि उसने

इन लोगों में बहुत देर से दिलचस्पी लेनी बन्द कर दी थी। सब लोग ऐसे व्यवहार कर रहे थे मानों किसी रेस्तोरां में बैठे हों। नाना ने खुद भी न्यू शैम्पेन पी ली थी। वह केवल स्टीनर से ही बात कर रही थी। शराब के नशे से उसका रंग सुर्ख हो चला था, होंठों और गालों पर चमक आ गयी थी, आँखों में मस्ती की मौजें अँगड़ाइयाँ लेने लगी थीं। उसके हर अन्दाज में वासना के अनगिनत सोते फूटे पड़ रहे थे। स्टीनर मोम की तरह, नाना की निगाहों से पिघला जा रहा था—नाना की खाल की चिकनाहट और आकर्षण उसे पागल करे दे रही थीं और वह धीरे-धीरे उसे बहुत बड़ी-बड़ी रकमें देने का प्रस्ताव कर रहा था। दावत खत्म होते-होते नाना को बहुत नशा हो गया। उसे एकाएक यह सनक हो गयी कि बाकी सब औरतें छिछोड़ेपन का व्यवहार करके उसका निरादर कर रही हैं। उसे नशा होने पर स्वयं अपने ऊपर भी झुँझलाहट आ रही थी। नाना का क्रोध और सनक और भी बढ़ गये थे। आखिर उसने इन सब निम्नकोटि की औरतों को बुलाया ही क्यों? कॉफी के लिए ज्योंही सब लोग दूसरे कमरे में गये, नाना उठकर अपने कमरे में चली गयी। वह इन भद्दे लोगों के साथ ज्यादा देर नहीं बैठ सकती।

दूसरे कमरे में सब लोग कॉफी पीने में व्यस्त थे—किसी ने नाना की अनुपस्थिति पर ध्यान नहीं दिया। रोज ने अपने पति से कहा—'ऑगस्टस! मस्यो फॉशेरी को एक दिन हमारे यहाँ खाना खाने अवश्य आना चाहिए!'

मिनॉन को रोज पर गुस्सा आ रहा था—फॉशेरी जैसे मामूली पत्रकार के लिए यह भावुकता कोरी मूर्खता थी। लूसी को बुरा लग रहा था कि रोज फॉशेरी को उससे छीने ले रही है और वांदूवरे लूसी को समझा न लेता तो अवश्य दोनों में झगड़ा हो जाता। क्लेरिस ने भी हेक्टर को झिड़क दिया क्योंकि वह गागा के पीछे बहुत लगा हुआ था। फूँकारमां लेबॉरदेत की तरफ बड़बड़ाता हुआ बढ़ा—उसे पता नहीं

त से क्यों इतनी चिढ़ हो गयी थी—लेकिन थोड़ा चलकर ही वह
ड़ा। वह नशे में बुरी तरह धुत था। तभी वांद्रूवरे को ध्यान
, 'अरे नाना कहाँ गयी?' सब लोग एकाएक नाना के बारे में
तत हो गये। आखिर वह गयी कहाँ; लेकिन कुछ ही देर में बातों
ले में वे फिर नाना की अनुपस्थिति के बारे में भूल गये। वांद्रूवरे
देखा कि डगेनॅट उसे संकेत से नाना के सोने के कमरे की तरफ बुला
। है। कमरे में पहुँच कर उसने देखा कि डगेनॅट और जार्ज खड़े हैं
ौर नाना गम्भीर और खामोश बैठी है।

वांद्रूवरे ने आश्चर्य से पूछा—'क्या हुआ तुम्हें?'

कुछ देर बाद नाना ने उत्तर दिया—'अपने ही घर पर मैं बेवकूफ
नहीं बनना चाहती और यह सब औरतें मुझे बेवकूफ बनाने का प्रयत्न
कर रही हैं।' नाना के दिमाग से वह सनक निकली नहीं थी। वांद्रूवरे
ने उसे समझाया लेकिन वह अपने इस वहम पर स्थिर रही। उसका
विचार था कि फॉशेरी ने ही काउन्ट मफेट को आज पार्टी में नहीं आने
दिया, लेकिन वांद्रूवरे ने उसे समझाया कि मफेट इस प्रकार का व्यक्ति
नहीं—वह तो अगर नाना की तरफ एक बार देखता भी तो जाकर
प्रायश्चित करता—फॉशेरी का इसमें कोई दोष नहीं।

'काउन्ट मफेट की बात जाने दो—लेकिन स्टीनर को तो अपने जा
में अवश्य फँसा ही लो।' वांद्रूवरे ने गम्भीरता से नाना को सलाह दी

कुछ देर चुप रह कर नाना ने अपना चेहरा ठीक किया। वांद्रू
बैठक में वापस चला आया। नाना एकदम से भावुक हो उठी
आवेश में उसने डगेनॅट को आलिंगन में बाँध लिया। 'ओह! मि
तुम ही सबसे अच्छे हो। मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ। कितना
होता अगर हम हमेशा साथ रह सकते। औरतें आखिर इतनी
क्यों होती हैं?'

नाना को डगेनॅट की बाहों में देख कर जार्ज दुखी हो

लेकिन उसे झिझकते देख कर नाना ने उसे भी चूम लिया। वह चाहती थी कि डगेनॅट और जार्ज में कभी ईर्ष्या न हो और वे एक दूसरे के हमेशा मित्र रहें। बराबर के कमरे से किसी के खुर्राटे लेने की आवाज आ रही थी—बात यह थी कि वान्दिनेव वहाँ दो कुर्सियों पर लेटा-लेटा सो गया था। नाना हँसती हुई बैठक के कमरे में वापस आ गयी।

एक बार फिर लोगों में चहल-पहल हुई लेकिन अब तक सवेरा हो चला था। कुछ मेहमान थक कर सोने लगे थे—कुछ ताश खेलते रहे। स्टीनर अब तक बिल्कुल नाना के फंदे में आ चुका था। स्टीनर ने नाना से कहा—'चलो! कहीं चल कर ताजा-ताजा दूध पिया जाय। बड़ा मजा आयेगा।'

नाना को प्रस्ताव पसन्द आया। खिड़की से बाहर आसमान में मटियालापन-सा आने लगा था और स्याह बादल इधर-उधर मँडरा रहे थे। दूसरी तरफ के मकान अभी तक नींद में डूबे हुए खामोश थे और उनकी भीगी-भीगी छतों पर उगते हुए दिन के प्रकाश का हल्का प्रतिबिंब पड़ रहा था। सुनसान सड़कों पर सफाई करने वाले मेहतरों की लड़कियों के जूतों की आवाज गूँज रही थी। इस खूबसूरत शहर पर एक उदास दिन जाग रहा था और यह देख कर नाना के अन्दर एक मासूम युवती के जज्बात एक बार फिर जाग उठे थे—एक सुन्दर, शान्त और आदर्श जीवन जीने की इच्छा।

## ५

'पर्दा उठ गया।' 'पर्दा उठ गया।'

थियेटर के एक कार्यकर्त्ता की बूढ़ी-नीरस आवाज स्टेज के पीछे के तंग बरामदों में क्षण भर को गूँज उठी और फिर गायब हो गयी। कदमों के तेजी से चलने की आहट आयी—बरामदे के आखीर में एक

जा खुला और बन्द हो गया। वाहर वजाते हुए आर्केस्ट्रा से उठी संगीत की एक लहर पल भर को खुले हुए दरवाजों में से निकली र वरामदे में क्षण भर को लहरा कर गुम हो गयी। और काँपती हुई ज की लहर के साथ-साथ वाहर का शोरोगुल भी थोड़ी-सी देर को सुनायी दिया। एक वार फिर ग्रीन-रूम्स[1] में पहले-सी निस्तब्धता छा गयी मानो वे वाहर मचते हुए शोरगुल से मीलों दूर हों।

वैराइटी थियेटर में 'ब्लान्ड वीनस' का आज चौंतीसवाँ दिन था। साइमोन और क्लेरिस नाना के वारे में वातचीत कर रही थीं।

'आज भी प्रिंस खेल देखने आये हैं? मुझे तो विश्वास नहीं होता था लेकिन अभी-अभी खुद देख कर आयी हूँ?'

'तीन दफा आ चुके हैं एक ही हफ्ते में—वास्तव में आश्चर्यजनक वात तो है ही। नाना सचमुच वहुत भाग्यवान् है।'

'मालूम होता है कि प्रिंस लट्टू हो गया है नाना पर। नाना के यहाँ जाना उसकी प्रतिष्ठा के खिलाफ है इसलिए वह नाना को ही अपने घर ले जाता है। काफी धन ऐंठ लिया होगा नाना ने अब तक उससे।'

विदूषक फोन्तां, वॉस्क और प्रूलेयर भी वहीं वैठे थे। फोन्तां आज जन्मदिन था और उसने कहा था कि उसके उपलक्ष में वह को शैम्पेन पिलायेगा। फोन्तां साइमोन और क्लेरिस को प्रिंस और न के वारे में और भी कुछ वातें वता रहा था। प्रूलेयर ने कहा—'अ ऐयाशी के लिए धन तो खर्च करना ही पड़ता है।' फोन्तां की दोनों औरतें वड़ी दिलचस्पी से सुन रही थीं। वॉक्स अलग वैठ दूसरी वात सोच रहा था।

एक वार फिर आवाज उठी: 'पर्दा उठ गया—पर्दा उठ ग

[1]ग्रीन-रूम—नाटकशाला के वे कमरे जिनमें अभिनेता लिये पोशाकें वदलते हैं।

साइमोन और क्लेरिस अब तक नाना के बारे में ही बातें कर रही थीं। पर्दा भले ही उठ जाय लेकिन नाना कभी स्टेज पर पहुँचने की जल्दी नहीं करती। उस दिन को ही तो बात है कि एक अंक में उचित अवसर के बाद नाना स्टेज पर आयी। इसी समय खिड़की खुली और एक लम्बी-सी लड़की झाँक कर हट गयी—वह शायद किसी दूसरे कमरे में जाना चाहती थी। यह लड़की सैटिन थी, साइमोन ने बताया। कभी नाना की सहेली थी लेकिन अब बुरे दिन थे—कोई बात न पूछता था उसको। नाना उससे दोबारा मिलकर आकर्षित हो गयी थी और बार्दिनेव पर जोर डाल रही थी कि उसे भी कोई पार्ट दे दे।

'कहो कैसे हो तुम लोग!' मिनॉन और फॉशेरी ने फोन्ता से हाथ मिलाया। यह लोग अभी-अभी आये थे। साइमोन और क्लेरिस ने मिनॉन को गले लगाया।

'आज भीड़ कैसी है!' फॉशेरी ने पूछा।

'ओह। बहुत। लगता है दर्शक पागल हो गये हैं।' प्रूलेयर ने उत्तर दिया।

इसी समय आवाज आयी: 'मस्यो बॉस्क—मामजेल साइमोन।'

दोनों के स्टेज पर उतरने का समय आ गया था। दोनों फौरन ही चल दिये।

'तुमने अपने पिछले लेख में नाटक की बहुत प्रशंसा की थी,' फोन्ता ने फॉशेरी से कहा, 'लेकिन यह क्यों लिखा था कि विदूषकों में छिछलापन होता है।'

'हाँ—फॉशेरी—क्यों लिखा था तुमने यह!' मिनॉन ने यह कहते हुए फॉशेरी की पीठ पर इतने जोर का हाथ मारा कि वह बेचारा तिलमिला गया।

प्रूलेयर और क्लेरिस बड़ी मुश्किल से हँसी रोक पाये। बात यह थी कि मिनॉन इस बात से बहुत ज्यादा नाराज था कि रोज फॉशेरी के प्रति

इतना आकर्षित हो जब कि फॉशेरी से उन्हें जरा भी धन नहीं मिल पाता था। इसलिए फॉशेरी से बदला लेने की मिनॉन ने यह तरकीब निकाली थी कि वह दोस्ती के बहाने फॉशेरी की इतनी मरम्मत करता रहता था कि फॉशेरी परेशान हो जाता था। कहने को पीठ ठोंकना, घूँसे जमाना मिनॉन की मैत्री का प्रदर्शन था। फॉशेरी बेचारा दुखी हो गया था लेकिन रोज के पति से खुल कर लड़ाई नहीं लड़ना चाहता था। नाटक कम्पनी के और सब लोगों को यह राज मालूम था और उनके लिए यह हँसने का एक खासा अच्छा विषय था।

और उसी बनावटी मजाक में मिनॉन ने फॉशेरी के सीने पर एक घूँसा ऐसा तान कर जमाया कि वह बेचारा कराह कर खामोश बैठ गया। इसी समय रोज कमरे में आयी—रोज ने सब-कुछ देख लिया था। वह अपने पति की परवाह किये बगैर सीधे अपने प्रेमी के पास पहुँच गयी और फॉशेरी ने उसका माथा चूम लिया। मिनॉन ने चेहरा घुमा लिया मानो उसने वह चुम्बन देखा ही नहीं। बरामदे का दरवाजा एक बार फिर खुला और हॉल में लगातार बजती हुई तालियों का शोर ग्रीन-रूम में सुनायी दिया। साइमोन ने लौट कर कहा : 'बुड्ढे बॉरक ने तो आज कमाल ही कर दिया—सारा हॉल, यहाँ तक कि प्रिंस भी हँसते-हँसते लोट गये.........। प्रिंस के पास न जाने कौन लम्बा-सा शानदार व्यक्ति बैठा था ?'

'वह हैं काउन्ट मफेट।' फॉशेरी ने उत्तर दिया।

'और साथ में काउन्ट के ससुर—मार्क्विस द शॉर्द हैं। उन्हें तो मैं जानती हूँ।' रोज ने बात पूरी की।

ब्रूलेयर ने रोज को जल्दी चलने के लिए आवाज दी। दोनों के पार्ट का समय आ गया था। थियेटर की एक सेविका—मदाम ब्रान—एक बड़ा-सा गुलदस्ता लिये हुए उधर से निकलीं। साइमोन ने मजाक में पूछा : 'क्या मेरे लिए लायी हो ?'

मदाम ब्रॉन ने बिना उत्तर दिये नाना के कमरे की तरफ संकेत किया। साइमोन के दिल में नाना के प्रति हल्की-सी ईर्ष्या दौड़ गयी। नाना कितनी भाग्यवान है। लोग उसके लिए कितने पागल हो गये हैं। फोन्तां ने लपक कर कहा—'मदाम ब्रॉन। सुनो तो। मेरे लिए छः बोतल शैम्पेन भिजवा देना।' तभी आवाज आयी—'मस्यो फोन्तां। जल्दी चलिए।'

अभिनेताओं को उनके पार्ट के लिए पुकारने वाला आदमी, बूढ़ा बैरिलों, पल भर को मिनॉन से बात करने ठहर गया। 'अभी तो मदाम नाना को भी बुलाना है लेकिन वह कभी मेरे पुकारने पर थोड़े ही आती हैं। जब उनकी तबियत में आता है तब जाती हैं—वह किसी की भी परवाह नहीं करती हैं।'

तभी अचानक नाना बरामदे में दिखाई दी। वह अपनी भूमिका के कपड़े पहने हुए तैयार थी। बैरिलों को आश्चर्य हुआ, 'अच्छा। आज जल्दी तैयार हो गयी हैं। मालूम है न कि प्रिंस आये हुए हैं।'

नाना अगले दृश्य की मछुओं की पोशाक पहिने थी। उसने मिनॉन और फोशिरी को अभिवादन किया और मिनॉन से तो हाथ भी मलाया। उसके पीछे एक औरत बराबर उसकी पोशाक ठीक करती आ रही थी। नाना किसी मलका की तरह रोब से चल रही थी। सबसे पीछे सैरिन थी।

'और स्टीनर आज दिखाई नहीं पड़ता!' नाना के चले जाने के बाद मिनॉन ने बैरिलों से पूछा।

'मस्यो स्टीनर लोदरेट गये हुए हैं—वहाँ कोई मकान खरीदेंगे शायद।'

'अच्छा—नाना के लिए कोठी खरीदी जा रही है?' मिनॉन को बहुत दुःख हुआ। पहले तो स्टीनर ने रोज को एक कोठी उपहार रूप भेंट करने का वायदा किया था; लेकिन अब तो अवसर निकल गया।

कोई और मौका ढूँढ़ना पड़ेगा—बीती बातों पर ज्यादा अफसोस करने से क्या लाभ।

एक अंक उसी समय समाप्त हुआ था। तालियों के शोर से सारा हॉल गूँज रहा था, स्टेज के पीछे के धुँधलके में भगदड़-सी मची हुई थी। अभिनेता, अभिनेत्रियाँ और थियेटर के और नौकर सब इधर-उधर तेजी से आ-जा रहे थे। कोई रोशनी का प्रबन्ध ठीक कर रहा था—कोई ग्रीन-रूम की तरफ तेजी से जा रहा था—कोई अगले अंक के लिए 'सीनरी' बदल रहा था।

इस भगदड़ में से बार्दिनेव परेशान और बड़बड़ाता हुआ निकला। मिनॉन और फॉशेरी को पास बुलाकर उसने उन्हें बताया कि प्रिंस नाना से खेल के बीच में ही उसके ड्रेसिंग-रूम में मिलना चाहते हैं। एक अंक अभी खत्म ही हुआ था इसलिए वह तेजी से बाहर चला गया प्रिंस का स्वागत करके अन्दर बुलाने के लिए।

स्टेज के ठीक पीछे कुछ कारीगर अगले अंक का दृश्य खड़ा कर रहे थे। बार्दिनेव बिगड़ रहा था—'जल्दी करो—बेवकूफो—जल्दी करो! क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारी बल्लियों से प्रिंस का सिर टूट जाय। जल्दी करो।' कारीगर लोग जल्दी-जल्दी काम करने लगे। एकाएक मिनॉन ने फॉशेरी को झपट कर जोर से दबोच लिया और उसे हटा कर दूर खड़ा करते हुए उसकी पीठ बहुत जोर से ठोंकी, 'बचा न लिया होता तो वह बाँस ठीक तुम्हारे सिर पर ही गिरता।'

कारीगर जोर से हँस पड़े—उन्हें मालूम था कि इस मित्रता के पीछे क्या भेद है। फॉशेरी क्रोध से काँप रहा था। तभी आवाज आयी: 'प्रिंस आ रहे हैं—प्रिंस आ रहे हैं।'

सब लोगों की आँखें उस छोटी-सी किवाड़ की तरफ मुड़ गयीं जो हॉल और अन्दरूनी बरामदे के बीच में थी। लोगों को केवल इतना दिखाई पड़ा कि बार्दिनेव का मोटा शरीर आदर और नम्रता से झुकता-

झुकता दोहरा हुआ जा रहा है। वार्दिनेव के ठीक पीछे प्रिंस आता हुआ दिखाई दिया। प्रिंस तन्दुरुस्त और लम्बा-तड़ङ्गा आदमी था—मुँह पर स्वस्थ गुलाबीपन था और एक हल्की भूरी दाढ़ी। उनके पीछे काउन्ट मफेट और मार्क्विस द शॉर्ट चले आ रहे थे। घबड़ाहट में वार्दिनेव कहे जा रहा था, 'इधर से पधारें—योर एक्सेलेंसी—जरा बच के हुजूर! रास्ता तो ठीक है महाराज!'

किसी राजकुमार का यहाँ इस तरह आना अस्वाभाविक बात अवश्य थी।

लेकिन प्रिंस को कोई परेशानी या जल्दी नहीं थी। स्टेज के पीछे कारीगरों को काम करते हुए देखने में राजकुमार का बहुत मनोरंजन हो रहा था। काउन्ट मफेट के लिए तो यह एक निराली ही दुनिया थी और वह आश्चर्य में डूबे हुए थे। कारीगर दूसरे अंक के दृश्य सजाने की तैयारी कर रहे थे। चौखटे, रस्सियाँ, पुली, पर्दे, बल्लियाँ, गैस-बत्तियाँ और अजीब सूरत के, अजीब पोशाक पहने हुए कारीगर—कुछ ऐसा माहौल था जो काउन्ट मफेट की चेतना पर धीरे-धीरे छाने लगा था और काउन्ट को इस प्रभाव से नफरत थी—डर लगता था।

ऊपर से लटकती हुई बल्ली के नीचे से प्रिंस ने काउन्ट मफेट को जल्दी से खींच लिया। वार्दिनेव ने घबड़ाकर माफी माँगते हुए कहा: "क्षमा करें—योर हाइनेस—हमारी नाट्यशाला बहुत छोटी है, मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ। देखिए बचके हुजूर—इधर से आइए।'

काउन्ट मफेट इस रास्ते की तरफ बढ़ गये थे जो अभिनेत्रियों के शृङ्गार करने के कमरे की तरफ गया था। लकड़ी की सीढ़ियाँ थीं जो उनके जूतों के नीचे हिल रही थीं। सीढ़ियों से लगे हुए चोर-दरवाजों से नीचे को स्टेज के पीछे जलती हुई गैस बत्तियों का नीला प्रकाश दिखायी पड़ रहा था। समाज के खुले हुए स्वाग के पीछे छिपा हुआ

एक दूसरा संसार था जिसकी अँधेरी और अदृश्य गुफाओं में से वात-
ा की फुसफुसाहट और वासी गन्ध निकल रही थी।
इन्हीं में किसी लम्बी-चौड़ी फैली हुई छाया के पीछे से एक लड़की
ा आवाज आयी : 'अहा ! क्या भौंडी सूरत है।' वार्दिनेव शर्म और
ोध से खीझ गया, प्रिंस ने हँसकर उस छोकरी की तरफ देखा; लेकिन
उस लड़की ने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। हाँ ! काउन्ट मपेट
जिन पर यह छींटा कसा गया था हड़वड़ा गए थे—माथे पर पसीना आ
गया था। उस तंग और गर्म जगह में उनका दम घुटने लगा था। उस
वन्द वातावरण की उष्णता धीरे-धीरे वढ़ती ही जा रही थी—पूरा माहोल
भारी और गँदला होता जा रहा था और उसमें एक अजीव तरह की गन्ध
समाने लगी थी—जली हुई गैस की लकड़ी में लगी हुई सरेस और गोंद
की, कोनों में पड़े हुए कूड़े की और नौकरानियों के विना धुले शरीरों की
वासी गंध !

जिस वरामदे के दोनों तरफ ड्रेसिंग-रूम वने हुए थे वहाँ तो वह
घुटन और भी ज्यादा वढ़ गयी थी। गंदे पानी की सड़ाँध और सस्ते
सावुनों की महक न जाने कितने आदमियों की साँसों से मिल कर ड्रेसिंग-
रूम से निकल रही थी। इन शृङ्गार-कमरों में आदमी और औरतें एक
दूसरे से वात कर रहे थे—मजाक कर रहे थे—हँस रहे थे; किवाड़ों के
खुलने-वन्द होने की आवाज आ रही थी और औरतों के जिस्मों
क्रीम-पाउडर और इत्रों की सुगन्ध पसीने की वदबू के साथ मिली
निकल रही थी। काउन्ट रुके नहीं—उनके कदम और भी तेज हो
उन अनगिनत अजनवी जज्वातों के कारण जो इस अपरिचित दुनि
की एक झलक ने उनके अन्दर जगा दिये थे।

'थियेटर भी कितनी अजीव—कितनी उम्दा जगह है।' मा
द शॉर्द वोले। ऐसा लगता था कि उन्हें इस वातावरण में वहुत
आ रहा है।

इतने में ही चार्दिनेव नाना के कमरे के पास पहुँच गया था जो बरामदे के अन्त में था। दरवाजा खोलते हुए उसने कहा : 'मेहरबानी करके अन्दर आइये, हुजूर !'

एकदम किवाड़ खुलने से नाना आश्चर्य से चिल्ला पड़ी। कमरे में नाना बिल्कुल नंगी थी। उसकी नौकरानी हाथ में तौलिया लिए उसका जिस्म सुखा रही थी। नाना भाग कर एकदम पर्दे के पीछे छिप गयी।

'यह क्या बदतमीजी है कि बिना कहे कमरे में आ गए। लौट जाइए।' नाना पर्दे के पीछे से बोली।

चार्दिनेव नाना के इस शर्मीलेपन से थोड़ा नाराज हो गया। 'भागो मत, नाना ! राजकुमार ही तो हैं। सामने निकलो—बचपना मत करो ! खा तो नहीं जायेंगे तुम्हें !'

'इसका भी क्या ठीक।' प्रिंस ने मुस्कुराते हुए कहा। सब लोग प्रिंस के इस विनोद पर जोर से हँस दिये। नाना खामोश थी। काउन्ट मफेट का चेहरा, बिल्कुल सुर्ख हो गया था, उन्होंने कमरे में चारों तरफ निगाह दौड़ाई। कमरा चौकोर था और उसकी छत काफी नीची थी। एक तरफ दो खिड़कियाँ थीं जो थियेटर के मैदान में खुलती थीं—बाकी कमरे में पर्दे लटके हुए थे। एक तरफ पर्दा लगा कर कमरे का कुछ भाग अलग कर दिया गया था। खिड़कियों से बाहर के मैदान की दीवार दिखाई दे रही थी जो कोठरियों की तरह चितकबरी थी और जिस पर खिड़की से निकलते हुए कमरे के प्रकाश ने पीले चौखटे-से डाल दिये थे। एक तरफ एक बड़ी शृङ्गार-मेज पड़ी थी जिस पर शृङ्गार करने के सब तरह का सामान—क्रीमें और पाउडर आदि रखे थे। उधर से निकलते हुए काउन्ट को अपना सुर्ख चेहरा शृङ्गार-मेज के शीशे में दिखाई [illegible]— माथे पर पसीने की बड़ी-बड़ी बूँदें दिखायी दीं। काउन्ट के [illegible] का अनुभव हुआ जो उन्हें तब हुआ था जब वह [illegible] के

घर गए थे। उन्हीं भावनाओं ने फिर से काउन्ट की चेतना पर कब्जा कर लिया। उन्हें ऐसा लगा कि वह कालीन के अन्दर गहरे धँसते चले जा रहे हैं। दोनों तरफ जलती हुई गैस-बत्तियाँ ऐसी लगीं कि जैसे कनपटी के दोनों तरफ लहकते हुए अंगारे धधक रहे हों। काउन्ट मफेट ने महसूस किया कि इस भारी गन्धभरे माहौल में उनका दम घुट जायगा।

'जल्दी करो!' वार्दिनेव ने पर्दे के पीछे झाँक कर नाना से कहा।

प्रिंस बड़े इतमीनान से मार्क्विस द शॉर्द से बातें कर रहे थे; मार्क्विस उन्हें अभिनेत्रियों के शृङ्गार की बारीकियाँ समझा रहे थे। सैटिन एक कोने में खामोश बैठी हुई इन सज्जनों को गौर से देख रही थी। नाना को कपड़ा पहिनाने वाली सेविका एक तरफ खड़ी हुई अगले अंक की पोशाक ठीक कर रही थी।

'क्षमा कीजिएगा। आप लोग एक दम आ गए थे और मैं तैयार नहीं थी।' पर्दा हटा कर नाना बाहर निकल आयी।

हर एक की आँखें नाना की तरफ घूम गयीं। अब भी उसके शरीर पर पूरे कपड़े नहीं थे; उसने बस एक छोटी सी अँगिया पहिन ली थी जो उसके जवान उरोजों के उभार को पूरी तरह ढक भी नहीं पा रही थी। उसकी नंगी सुडौल बाहों पर, मांसल कंधों पर और वक्ष की गठीली ऊँचाइयों पर इन लोगों की निगाह जम गयी थी। नाना अब तक उसी दिलकश अन्दाज में एक हाथ से पर्दा थामे हुए थी। लगता था कि फिर घबराकर वह अपने आप को पर्दे में छिपा लेगी।

'सच! आप लोग एकदम आ गए वर्ना मैं आपके सामने इस तरह आने का साहस न करती!' नाना की आवाज में कुछ ऐसी झिझक थी कि मालूम पड़ता था कि वह बहुत घबराई हुई है। उसका चेहरा और गर्दन सुर्ख हो गए।

'अरे नहीं! तुम ऐसे भी बहुत अच्छी लग रही हो।' वार्दिनेव बोला।

नाना कुछ देर उसी तरह मुस्कुराती, झिझकती और शर्माती रही और उसी लुभावनी अदा से बोली : 'इस तरह आकर आपने मुझे बहुत सम्मान दिया है—योर हाइनेस। मैं आपसे क्षमा माँगती हूँ.........'

प्रिंस ने वाक्य के बीच में ही उत्तर दिया : 'नहीं, नहीं। अगर दोष है तो हमारा कि बिना सूचना दिये चले आये। आपसे मिलने की इच्छा की तीव्रता को अधिक देर रोकने में हम असमर्थ थे।'

इसी बीच में नाना इन लोगों के बीच में होती हुई अपनी शृङ्गार मेज की तरफ बढ़ गयी। काउन्ट मफेट खामोशी से खड़े थे। नाना ने उन्हें फौरन ही पहचान लिया और बड़ी आत्मीयता से उनसे हाथ मिलाया। दावत में न आने का भी उसने उलहना दिया। अपने गर्म हाथ से नाना की ठंडी, नाजुक उँगलियाँ छूकर काउन्ट मफेट सिर से पैर तक सिहर उठे। अपनी घबड़ाहट को छिपाने के लिए वे केवल इतना ही बोल पाये : 'यहाँ बहुत ज्यादा गर्मी है, इतनी गर्मी में आप लोग कैसे रह लेती हैं।'

बाहर दरवाजे पर लोगों की आवाज आयी। बार्दिनेव ने खिड़की से देखा। फोन्ता के साथ प्रूलेयर और बॉस्क हाथ में शैम्पेन की बोतलें लिये खड़े थे। फोन्ता जोर-जोर से कह रहा था—'आज मेरा जन्म दिन है; आज मैं सब को शैम्पेन पिलाऊँगा।'

नाना ने प्रिंस की तरफ देखा। हाँ-हाँ आने दो इन लोगों को अन्दर। प्रिंस ने उसी भाव से उत्तर दे दिया। उन्हे इन लोगों के खुशी मनाने में क्यों आपत्ति हो। इस बीच में फोन्ता स्वयं ही अन्दर हँसता हुआ घुस आया लेकिन प्रिंस को देख कर दरवाजे पर ही झिझक कर खड़ा हो गया।

'महाराज डेगोवर्ट बाहर खड़े हैं और हुजूर के साथ शराब पीने की आज्ञा चाहते हैं। फोन्ता ने बात बनाते हुए कहा। 'महाराज डेगोवर्ट, रात के नाटक का एक पात्र था जिसकी भूमिका कॉस्क ने अदा की थी।

सब लोग इस मजाक को सुन कर खूब हँसे। प्रूलेयर और वॉस्क भी कमरे में आ गये। कमरे में जगह बहुत कम थी इसलिए सब लोग अर्धनग्न नाना के चारों तरफ भीड़ लगाये खड़े थे। शैम्पेन गिलासों में ढाली गयी। सब गिलास मुँह पर लगाते हुए बोले :

'योर हाइनेस के लिए।' बूढ़े वॉस्क ने बड़ी शान से कहा।

'सेना के लिए!' प्रूलेयर बोला।

'वीनस के लिए!' फोन्ता ने कहा।

गिलास एक घूँट में खाली हो गये। सब लोग ऐसे गम्भीर थे मानो वास्तव में किसी शाही दरबार में हों। अर्धनग्न नाना रूप की देवी वीनस की तरह शान से खड़ी थी। इन स्वाँगभरे हुए नकली राजाओं और दरबारियों के बीच एक असली राजकुमार बैठा हुआ सस्ती शराब पी रहा था—वास्तव में यह एक अनोखा ही दृश्य था।

नाना वासनाभरी आँखों से फोन्ता की तरफ देख रही थी—उसके चौड़े भद्दे चेहरे ने नाना को बहुत आकर्षित किया था। उसी प्यारभरी आँखों से देखते हुए वह फोन्ता से एकदम बोली :

'बड़े बुद्धू हो—गिलासों में शराब और क्यों नहीं ढालते।' फोन्ता ने गिलासों में फिर से शैम्पेन डाली। फिर आवाजें उठीं :

'हिज हाइनेस के लिए!'

'सेना के लिए।'

'वीनस के लिए।'

लेकिन नाना ने सब को खामोश कर दिया। अपना गिलास ऊँचा उठा कर नाना बोली : 'नहीं-नहीं! फोन्ता के लिए—फोन्ता के लिए आज तो फोन्ता का जन्म दिन है।' सब लोग बोल पड़े 'फोन्ता फोन्ता!'

प्रिंस समझ गये कि नाना फोन्ता से कितना आकर्षित है। 'मस्टर फोन्ता! आपकी सफलता के लिए!' प्रिंस ने आदर से कहा।

उस नीचे पटे हुए कमरे में शृङ्गार की चीज़ों की खुशबू के साथ सीमेन्ट की खट्टी बू मिल कर फैल गयी थी। भीड़ इतनी थी कि शरीर हिलाते वक्त प्रिंस और काउन्ट के हाथ नाना के वक्ष और नितम्बों से छू जाते थे। एक कोने में बैठी हुई सेटिन इन लोगों को बहुत गौर से देख रही थी—भद्र समाज के इन सदस्यों की बढ़िया पोशाकों के पीछे वही आम नंगा आदमी था जिसमें शरीर के वही दोष थे—वह उतने ही गुलदस्तार थे।

बैरिलों घण्टी बजाता हुआ उधर से निकला। अगले अंक के लिए अभिनेताओं को तैयार होने को आगाह करना था—बहुत कम देर रह गयी थी दूसरा अक शुरू होने में। लेकिन जब उसने फोन्ता, प्रूलेयर और बॉस्क को वहीं बैठे शराब पीते हुए देखा तो वह स्तम्भित रह गया।

'ओफ! आप लोग अभी यहीं बैठे हैं—जल्दी करिये। अक शुरू होने की घण्टी बज गयी है।'

'कोई बात नहीं। दर्शक कुछ देर इन्तजार कर लेंगे तो क्या हो जायगा।' बार्दिनेव ने शांति से कहा।

लेकिन तब तक शराब की बोतलें खाली हो चुकी थीं और इसलिए तीनों अभिनेता कपड़े बदलने चले गये। प्रिंस, काउन्ट मफेट और मार्क्विस द शॉर्द अभी नाना के कमरे में ही थे। बार्दिनेव बैरिलों के साथ चला गया था। उसने कह दिया था कि बिना नाना की सूचना दिए पर्दा न उठे।

'क्षमा कीजियेगा!' यह कहते हुए नाना ड्रेसिंग टेबिल पर बैठ कर शृङ्गार करने लगी। इस अगले अक में नाना को वीनस के नग्न रूप में स्टेज पर उतरना था और इस कारण वह बहुत ध्यान से अपने हाथ और मुँह का शृङ्गार कर रही थी। प्रिंस और मार्क्विस सोफे पर [illegible] गये थे और काउन्ट मफेट खड़े ही हुए थे। उस [illegible]

शैम्पेन से भी काफी नशा हो गया था इन दोनों को। बातचीत अधिक नहीं हो रही थी क्योंकि नाना श्रृङ्गार करने में काफी व्यस्त थी। सैटिन चुपचाप पर्दे के पीछे खिसक गयी थी।

तौलिया के एक कोने से नाना अपने चेहरे पर सफेद रंग लगा रही थी। मार्क्विस को श्रृङ्गार की इन बारीकियों में बहुत मजा आ रहा था। मदाम ज्यूल्स जमीन पर झुकी हुई नाना की पोशाक ठीक कर रही थी। नाना अपने शरीर पर पाउडर लगा रही थी। प्रिंस ने बातों-बातों में कहा कि अगर वह लन्दन आये तो वहाँ लोग उसका बहुत सम्मान और स्वागत करें। पाउडर के सफ़ेद बादलों के बीच में नाना उनकी तरफ क्षण भर को मुड़कर मुस्कुरा दी। इसके बाद वह श्रृङ्गार मेज की तरफ फिर मुड़ गयी और बड़ी गम्भीरता और सावधानी से गालों के ऊपरी भाग में लाली लगाने लगी। इसके बाद तीनों व्यक्ति खामोश रहे।

काउन्ट मफेट तो शुरू से ही लगभग बराबर चुप रहे थे। खामोश खड़े-खड़े वह अपनी जवानी और शैशव के बारे में सोच रहे थे। बचपन में जिस कमरे में वह रहते थे वह बहुत ठण्डा था; कुछ और बड़े होने पर वह केवल रात को सोते समय अपनी माता का चुम्बन लेते थे और रात भर उन्हें ऐसा लगता था कि जैसे माँ का ठण्डा आलिंगन उन्हें बराबर जकड़े हुए है। उस ठंड ने, उस मौत की-सी सर्दी ने उनके जवान खून को भी सर्द कर दिया था; उनकी आत्मा को बर्फीले पञ्जों ने दबोच रखा था। केवल एक दिन उन्होंने एक नौकरानी को भूल से नहाते हुए देख लिया था; उस अर्धनग्न शरीर की थोड़ी-सी झलक ने काउन्ट को अपनी जवानी में बहुत परेशान कर दिया था। शादी के बाद भी दाम्पत्य जीवन को वह घृणा की दृष्टि से देखते थे—पति-पत्नी के सम्बन्ध में उन्हें कभी आनन्द नहीं मिल सका था। शरीर की इच्छाओं, प्रेरणाओं और उत्तेजनाओं से अनभिज्ञ वह जवान हुए थे—उनकी अवस्था बढ़ी

थी। इन्सान के शरीर की शिराओं-उपशिराओं में बहते हुए गर्म—ताजे खून की स्वाभाविक कसमसाहट धार्मिक रूढ़ियों और पाखंडों के नीचे दब कर भुलस गयी थी। संयम की कठोरता में बँधा हुआ इतना लम्बा जीवन बिताने के बाद आज काउन्ट ने अपने आप को एकाएक अर्धनग्न अभिनेत्री के शृङ्गार-कक्ष में पाया था। दिन के उँजाले में तो उन्होंने अपनी पत्नी का भी शरीर उघरा हुआ नहीं देखा था और आज भिन्न-भिन्न प्रकार की मोहक सुगन्धियों से भरे हुए बन्द माहौल के बीच वह लगभग नंगी नाना को शृङ्गार करते देख रहे थे। उनका पूरा व्यक्तित्व अपने आपसे विद्रोह कर उठा। नाना के जवान शरीर का मांसल आकर्षण जल्दी-जल्दी उनकी चेतना पर अधिकार करता जा रहा था और वह स्वयं इससे डर गये थे। काउन्ट धार्मिक उपदेशों को स्मरण करने लगे। नहीं—शैतान उन्हें ललचा रहा था। नाना—अपनी मुस्कुराहटों और गुनाहों से भरे शरीर के साथ—काउन्ट को शैतान का दूसरा रूप मालूम हुई। वह अपने आपको शैतान से अवश्य बचायेंगे—अवश्य.........

'तो आप अगले वर्ष लन्दन अवश्य आइयेगा और वहाँ हम लोग आपकी इतनी खातिर करेंगे कि आप फ्रांस वापस लौटने का नाम तक न लेंगी। काउन्ट मफेट—आप लोग अपने देश की सुन्दर स्त्रियों का उचित आदर नहीं करते, हम उन सब को अपने देश ले जायेंगे।' प्रिंस ने कहा।

'काउन्ट का सुन्दर स्त्रियों से क्या सरोकार—काउन्ट तो सच्चरित्रता की मूर्त्ति हैं!' मार्क्विस ने अपने दामाद पर मजाक करते हुए धीरे कहा।

काउन्ट की सच्चरित्रता की बात सुनते ही नाना ने मफेट की ओर कुछ ऐसे देखा कि उन्हें उसके ऊपर जोर से क्रोध आ गया। लेकिन फिर एकदम उन्हें इस बात पर अपने ऊपर भी गुस्सा आया। सच्चरित्र

होना कोई कलंक की बात तो नहीं जो वह इस औरत के सामने इस तरह घबड़ा जायँ! तभी नाना ने भवें बनाने की पेंसिल उठाने के बहाने जमीन पर गिरा दी। उसे उठाने के लिए वह झुकी लेकिन तभी काउन्ट मफेट पेंसिल जल्दी से उठाकर नाना को देने के लिए खुद भी झुके। उनकी गर्म साँसें एक दूसरे से उलझ गयीं और 'वीनस' के सुनहरे बाल काउन्ट के हाथों से छू गये। काउन्ट का शरीर सुख से काँप गया' लेकिन उस सुख के पीछे पश्चात्ताप था—एक प्रकार डर कि शरीर के इस सुख में पाप है।

तभी बाहर से बैरिलॉ की आवाज आयी: 'मादम! क्या आप तैयार हो गयीं? दर्शक अधीर हो उठे हैं।'

बिना जल्दी किये नाना ने उत्तर दिया: 'बस—थोड़ी देर में।'

नाना फिर झुकी और शीशे में देखकर बड़ी सावधानी से अपनी भौंहें बनाने लगी। उसका चेहरा शीशे से बिल्कुल सटा हुआ था और एक आँख बन्द थी। पीछे खड़े हुए, काउन्ट नाना का यह सुहाना रूप शीशे में देख रहे थे—उसके गोल और चिकने कन्धे और उसकी भरी हुई गर्दन जिन पर हल्का-हल्का-सा गुलाबीपन था—और वह अपनी आँखें चाहते हुए भी उस मनमोहक रूप पर से हटा नहीं पा रहे थे, जिसके हर परिमाणु में मानो वासना झिलमिला रही थी।

'मदाम! लोग पैर पटक रहे हैं—शोर मचा रहे हैं। दर्शकों का शान्ति से बैठना असम्भव है। क्या आप तैयार हो गयीं?'

बैरिलॉ दोबारा आया, वह घबड़ाया हुआ था।

'भाड़ में जायँ—कमबख्त!' नाना क्रोध में बोली। 'जाओ संकेत कर दो! अगर मैं तैयार देर में होऊँगी तो उन्हें देर तक मेरी प्रतीक्षा करनी होगी।' उन तीनों महानुभावों की तरफ मुड़कर वह कुछ शान्त होकर बोली: 'थोड़ी देर भी यह लोग आराम से बातें नहीं करने देते।'

नाना का शृङ्गार लगभग खत्म हो चुका था लेकिन काउन्ट मफेट अब तक उतना ही उत्तेजित थे—रङ्गों और पाउडर का काउन्ट की

चेतना पर अब भी उतना ही प्रभाव था, पहले से भी ज्यादा अब वह इस रँगी-पुती गुड़िया को पा जाना चाहते थे—उसे अपने आलिंगन में जकड़ लेना चाहते थे। नाना अगले अंक के लिए 'वीनस' की पोशाक पहनने चली गयी।

'अब आप जल्दी से कपड़े बदल लीजिये—देर हो रही है।' मदाम ज्यूल्स ने कहा।

नाना पर्दे के पीछे से वीनस की पोशाक पहिने हुई निकली। उस झीने कपड़े के नीचे उसका शरीर लगभग पूरा ही नग्न दिखाई पड़ रहा था। अधखुली आँखों से प्रिंस नाना का सुडौल और मांसल शरीर निहार रहे थे—रूप के वह चतुर पारखी थे। मार्क्विस पूर्णतया मग्न हो गये थे। सफेद कालीन की तरफ नीचे देख रहे थे—वह नाना की तरफ न देखने का प्रयत्न कर रहे थे।

'ठीक हो गया, न—अह!' नाना ने शीशे में अंतिम बार देखते हुए कहा।

तीसरा और अंतिम अंक शुरू हो गया था। इस बार बार्दिनेव स्वयं घबड़ाया हुआ आया।

'तैयार तो हो गयी मैं—तुम लोग बेकार का शोर बहुत मचाते हो!'

सब लोग शृङ्गार कक्ष से बाहर निकले। प्रिंस ने ही विदा नहीं ली क्योंकि तीसरा अंक वह स्टेज के पीछे से ही देखना चाहते थे। नाना ने इधर-उधर आँखें दौड़ायीं जैसे वह किसी को ढूँढ़ रही हो।

'अरे वह कहाँ गयी?' नाना जोर से बोली। वह सैरिन को ढूँढ़ रही थी। पर्दे के पीछे सैरिन एक बक्स पर चुपचाप बैठी थी। 'उतने सब लोगों के बीच में बेकार बाधा क्यों बनती?' सैरिन बोली। उसने कहा कि अब वह जाना चाहती है लेकिन नाना ने उसे रोक दिया। जब बार्दिनेव उसे पार्ट देने को तैयार हो गया तो यूँ ही चला जाना मूर्खता है। सैरिन कुछ झिझक कर ठहरने को तैयार हो गयी।

सब लोग स्टेज के पीछे खड़े थे। अपने झीने कपड़ों पर फर का कोट डाले हुए नाना इन लोगों से बातें कर रही थी। नाटक चल रहा था। ऊपर के बरामदों में बिल्कुल खामोशी थी। सब कारीगर अपने-अपने काम पर बड़ी सावधानी से लगे हुए थे। विंग्स[1] में कुछ कार्यकर्त्ता आपस में चुपके-चुपके बात कर रहे थे और धीरे-धीरे पंजों के बल पर चल रहे थे। दूर पर दर्शकों के विशाल समुदाय की साँसों का शोर आर्केस्ट्रा संगीत के ऊपर सुनायी पड़ रहा था।

प्रिंस एक ओर खड़े नाना से अकेले बात कर रहे थे। प्रिंस की आंखों में उत्तेजना और चाह की लहरें तैर रही थीं। नाना स्टेज पर उतरने के संकेत का इन्तजार कर रही थी और इस कारण प्रिंस की बातों पर विशेष ध्यान नहीं दे पा रही थी। काउन्ट मफेट भी जो किसी और तरफ थे, इन लोगों के पास आ गये लेकिन प्रिंस को उनका उस समय वहाँ आना अच्छा नहीं लगा।

और एकदम नाना फर का कोट गिराकर लगभग नग्न अवस्था में स्टेज पर आ गयी।

'खामोश—खामोश! बार्दिनेव ने हल्के से कहा। प्रिंस और काउन्ट अचम्भे में रह गये। उस प्रशान्त खामोशी के बीच में से एक गहरी लम्बी आह निकलती हुई सुनाई दी। उस आह में—जो दर्शकों के समुदाय की आह थी—छटपटाती हुई उत्तेजना की तड़प थी। और ऐसा लगभग हर रोज रात को होता था—जब नाना वीनस के रूप में बिल्कुल नग्न स्टेज पर उतरती थी तो हजारों आदमियों के शरीर काँप जाते थे, आहें खिंच जाती थीं।

थोड़ी देर बाद पर्दा अंतिम बार गिर गया—नाटक खत्म हो

---

[1]विंग्स—स्टेज के दोनों ओर लकड़ी के रास्ते जिनसे क[...] आते-जाते रहते हैं।

था। सीढ़ियों पर लोग तेजी से चढ़ रहे थे ताकि पेंट वगैरह धोकर जल्दी से जल्दी घर पहुँच जायँ। काउन्ट मफेट, जो कुछ समय के लिए फोशेरी के साथ फिर ऊपर चले गये थे, वापस लौट रहे थे। उन्होंने देखा कि प्रिंस के साथ नाना चली आ रही है। एकाएक रुक कर नाना ने मुस्कुराते हुए धीरे से प्रिंस से कहा : 'अच्छा ! अभी थोड़ी देर में चलती हूँ।'

प्रिंस स्टेज की तरफ वापस लौट पड़े; वान्दिनेव वहाँ उनका इन्तजार कर रहा था। नाना और मफेट बिल्कुल अकेले रह गये। मफेट के दिल में उत्तेजना का जो तूफान मचल रहा था—टूट पड़ा ! वासना का सैलाब उमड़ पड़ा। जल्दी लपक कर काउन्ट ने पीछे से नाना की गर्दन को जोर से चूम लिया। नाना नाराज होकर मुड़ी लेकिन यह देखकर कि काउन्ट मफेट हैं, मुस्कुरा दी।

'ओह ! आप ! आपने तो मुझे डरा ही दिया था।'

नाना की मुस्कुराहट में शर्म थी, झिझक थी, खुशी थी और समर्पण था—लगता कि जैसे काउन्ट के इस चुम्बन की वह देर से प्रतीक्षा कर रही थी। लेकिन उस चुम्बन का उत्तर वह नहीं दे सकती थी—अभी वह मजबूर थी। काउन्ट को अभी कुछ और देर इन्तजार करना पड़ेगा। नाना की आँखों में यह सन्देश था। लेकिन वास्तव में अगर वह मजबूर न भी होती तब भी वह काउन्ट को काफी देर इंतजार कराती।

'आपको मालूम नहीं होगा, मैं अब एक मकान की मालकिन हो गयी हूँ। ओर्लियन्स के पास मैंने एक कोठी खरीद ली है। आप भी वहाँ आया करते हैं अक्सर—जार्ज ने मुझे बताया था। जार्ज ह्यूगों को तो आप जानते हैं न ?' नाना ने दबे शब्दों में वहाँ आने का निमंत्रण दिया।

काउन्ट अपने व्यवहार पर शर्मिन्दा थे। नाना को निमंत्रण के लिए धन्यवाद देकर वह चले गये। काउन्ट को लग रहा था कि जैसे वह सपनों

के संसार में हैं। एकाएक ग्रीनरूम से सैरिन के चीखने की आवाज उनके कानों में पड़ी :

'हटो—बदमाश—जानवर—मुझे छोड़ दो।'

मार्क्विस द शॉर्द को कोई और औरत नहीं मिल सकी थी इसलिए वह सैरिन को ही ले जाना चाहते थे।

वादिनेव ने पीछे से निकलने के लिए एक खास रास्ता खुलवा दिया था ताकि प्रिंस को बाहर निकलने में कोई परेशानी न हो।

'हुजूर! इधर से तशरीफ लावें!'

वादिनेव रास्ता दिखा रहा था। नाना उसके पीछे थी और नाना के पीछे प्रिंस, मफेट और मार्क्विस द शॉर्द थे। रास्ता सुरंग की तरह तङ्ग था और उसमें घुटन और सीलन बहुत काफी थी।

बाहर निकल कर प्रिंस नाना को अपनी गाड़ी पर बैठा कर चल दिये। मार्क्विस कुछ औरतों का पीछा करते हुए दूसरी तरफ चल दिये। मफेट बिल्कुल अकेले रह गये।

मफेट का सिर आग की तरह जल रहा था। वह पैदल अपने घर की तरफ चले जा रहे थे। उनके अन्दर पाप और पुण्य में जो भयङ्कर संघर्ष चल रहा था, वह अब खत्म हो चुका था। उनके लिए एक नया जीवन शुरू हुआ था—नये अनुभवों, नयी इच्छाओं के बहाव में चालीस वर्ष पुराने विश्वास और मान्यताएँ बह गयी थीं। सड़क पर चलती हुई गाड़ियों के पहियों की घड़घड़ाहट से 'नाना' का नाम निकल रहा था—उस शोर से काउन्ट के कान बहरे हुए जा रहे थे। सड़क पर लगी हुई गैस-बत्तियों की रोशनी में भी काउन्ट की आँखों के सामने नाना का वही रूप नाच गया—चिकने गोरे हाथ, उभरे हुए वक्ष, सुडौल कंधे और काउन्ट को लगा कि अब वह बिल्कुल उसी के हो गये हैं। उस रात को नाना को अपनी बाहों में समेट लेने के लिए, अपने सीने से चिपका लेने के लिए—वह अपना सब कुछ न्योछावर कर सकते थे—लुटा सकते थे—

धर्म और नैतिकता को ठुकरा सकते थे। उनकी जवानी इतने देर में जागी थी और उसकी भूख—उसकी इच्छा इतने दिन रुके रहने से और ज्यादा तीव्र हो गयी थी।

## ६

जार्ज की माँ, मदाम ह्यूगॉ, ने काउन्ट मफेट, उनकी पत्नी काउन्टेस सैवाइन और पुत्री एस्टील को अपनी जागीर 'लॅ फान्टे' में एक सप्ताह बिताने के लिए निमंत्रित किया था। मदाम ह्यूगॉ की कोठी पुराने जमाने की बनी हुई थी लेकिन उसके बगीचे बहुत सुन्दर थे और उसमें कितने ही शानदार फव्वारे खेला करते थे। पैरिस से ऑर्लियन्स वाली सड़क से यह कोठी बहुत ही खूबसूरत दिखायी पड़ती थी—दृष्टि से क्षितिज के छोर तक फैले हुए सपाट खेतों के बीच में वह एक हसीन गुलिस्तान की तरह लगती थी।

ग्यारह बजे खाने की मेज पर सब लोग इकट्ठे हुए। मदाम ह्यूगॉ ने बहुत स्नेह से काउन्टेस के गालों का चुम्बन लिया और एस्टील को बड़े प्यार से थपथपाया। वह लोग खाने के बड़े हॉल में बैठे थे; खिड़कियों में से बाग का बहुत सुहाना दृश्य दिखायी पड़ रहा था। सैवाइन बहुत प्रसन्न थी—बचपन की मधुर और कोमल स्मृतियाँ इस वातावरण में ताजी हो गयी थीं—वह स्मृतियाँ जो बाद के जीवन तक में अतीत के धुँधलके में से उभर कर दिल को गुदगुदा जाती हैं। जार्ज ने काउन्टेस को कई महीने के बाद देखा था—उसे लगा कि सैवाइन की मुखाकृति और मुद्रा में कुछ परिवर्तन हो गया है—कुछ ऐसा जो पहिले उसने कभी नहीं देखा था। उनकी लड़की एस्टील पहिले से कहीं ज्यादा कम-जोर और दुबली दिखायी पड़ रही थी और खामोश थी। मदाम ह्यूगॉ

ाने की चीजों के सन्तोषजनक न होने की और मौसम की शिकायत कर
ही थीं।

'मैं तुम लोगों की पिछले जून से प्रतीक्षा कर रही थी और तुम लोग अब आये हो सितम्बर में जब बाग के फल-फूल भी पीले पड़ने शुरू हो गये हैं।' मदाम ह्यूगाँ ने कहा। आसमान में बादल थे—नीले कुहांसे ने सारे क्षितिज को ढँक रखा था और एक उदास खामोशी भी छायी हुई थी।

'अभी तो कुछ और लोग भी आने वाले हैं और तब तुम लोगों की तबियत ज्यादा लग जायगी। जार्ज ने मस्यों फॉशेरी और मस्यो डगेनॅट को निमंत्रण दिया है। तुम तो जानते होगे इन दोनों को। और काउन्ट वांबूवरे ने भी आने का वायदा किया है।'

'और फिलिप?' काउन्ट ने पूछा।

फिलिप मदाम ह्यूगाँ का लड़का और जार्ज का बड़ा भाई था और सेना में अफसर था।

'फिलिप ने छुट्टी की अर्जी तो दी है लेकिन जब तक वह आयेगा तब तक तुम लोग शायद जा चुके होगे।' मदाम ह्यूगाँ ने कहा।

बातचीत में स्टीनर का भी जिक्र आ गया। स्टीनर का नाम सुनकर मदाम ह्यूगाँ कुछ क्रोध से बोलीं :

'अरे वही मस्यो स्टीनर जिन्होंने एक अभिनेत्री के लिए पास में ही कोई कोठी खरीदी है। कितनी भद्दी बात है! तुम्हें यह बात मालूम थी काउन्ट?'

'नहीं—बिल्कुल नहीं! मुझे यह क्यों मालूम होता।' काउन्ट ने फौरन ही उत्तर दिया।

जार्ज को आश्चर्य हुआ कि काउन्ट ने इस बात पर झूठ क्यों बोला काउन्ट को कुछ शक हुआ कि जार्ज उनकी तरफ ऐसे क्यों देख रहा है—क्या उसे कुछ मालूम है? मदाम ह्यूगाँ ने इस विषय में कुछ और

बतायीं—उस कोठी का नाम 'लॉ मिनॉत' था और वहाँ पहुँचने के लिए एक लम्बे रास्ते से जाना पड़ता था—वैसे नदी पार करके वहाँ जल्दी भी पहुँचा जा सकता था।'

'उस अभिनेत्री का नाम क्या है?' काउन्टेस ने प्रश्न किया।

'क्या नाम है उसका?' मदाम ह्यूगों नाम याद करने की चेष्टा करते हुए बोली।' जार्ज तुम तो वहाँ थे जब माली बता रहा था.........'

जार्ज ने भी सोचने का उपक्रम किया। मफेट भी कुछ घबड़ाए हुए थे। सैवाइन ने कहा : 'मस्यो स्टीनर का सम्बन्ध तो वैराइटी थियेटर की किसी अभिनेत्री नाना से है न?'

'नाना—हाँ नाना! बहुत दुश्चरित्र औरत है वह!' मदाम ह्यूगों ने कुछ क्रोध से कहा, 'सुना है कि वह जल्दी ही अपनी कोठी में आने वाली है। क्यों जार्ज, माली कह रहा था कि शायद आज शाम को ही वह वहाँ पहुँच जाय।'

काउन्ट मफेट आश्चर्य से उछल पड़े। जार्ज ने जल्दी से उत्तर दिया : 'नहीं माँ! माली को क्या मालूम उसने तो यूँ ही कह दिया था। कुछ लोगों का ख्याल है कि वह परसों तक नहीं आयेगी।'

यह कहते हुए जार्ज ने काउन्ट के चेहरे की तरफ बहुत गौर से देखा। काउन्ट अब तक काफी सँभल चुके थे। काउन्टेस नीले आकाश की गहराइयों में खोयी हुई इन लोगों से कहीं बहुत दूर थीं। शायद उनके दिल में कोई छिपा हुआ भाव आया था और उनके चेहरे पर पल भर को एक छोटी-सी मुस्कान खेल गयी थी।

'लेकिन छोड़ो! उस अभिनेत्री पर नाराज होने से क्या लाभ! हाँ! अगर वह हमें कभी घूमती हुई दिखायी देगी तो हम उसकी तरफ देखेंगे भी नहीं।'

सब लोग भोजन समाप्त करके उठ गए। मदाम ह्यूगों ने काउन्टेस सैवाइन से फिर शिकायत की कि उन्होंने यहाँ आने में इतनी देर क्यों

...। कान्उटेस ने कहा कि काउन्ट के कारण ही वह देर में आ सके थे।
...वार तो वह लोग तैयार भी हो गये थे लेकिन काउन्ट ने न जाने क्यों
अन्त समय इरादा बदल दिया था और फिर अभी अचानक उन्होंने यहाँ
आने का निश्चय कर लिया। मदाम ह्यूगॉ ने कहा कि जार्ज ने भी
'लॅ फान्दे' आने का निश्चय एकाएक ही किया था। उस दिन दोपहर से
ही जार्ज कहने लगा था कि उसके सिर में दर्द हो रहा है और शाम तक
वह दर्द बहुत तेज हो गया था। जार्ज ने कहा कि इसका सबसे अच्छा
इलाज यह होगा कि शाम से ही वह अपने कमरे में जा कर सो जाय।
कमरे में जाकर जार्ज ने अन्दर से सिटकनी लगा दी। लेकिन वह पलंग
पर लेट कर सोया नहीं, उसने फौरन ही दूसरे कपड़े बदले। उसके चेहरे
पर एक विशेष प्रकार की चमक और खुशी थी। कपड़े बदलने के बाद
वह चुपचाप प्रतीक्षा करने लगा। दस मिनट के बाद जब वह यह
समझा कि कोई उसे देखेगा नहीं, तो वह दबे पाँव खिड़की से बाहर
निकला और पाइप के सहारे जमीन पर उतर गया। झाड़ियों में छिपता-
छिपता वह मकान के अहाते के बाहर निकला। उसका पेट खाली था
लेकिन दिल में नादान उत्तेजना वेग से मचल रही थी। नाना के
मकान की तरफ वह तेजी से भागा। अन्धकार पूरी तरह घिर आया था
और हल्की-हल्की वर्षा होने लगी थी।

वास्तव में उसी दिन शाम को नाना 'लॉ मिनॉन' में आने वाली
थी। मई से ही—जब से स्टीनर ने उसे यह कोठी खरीद कर दी थी—
नाना अपने इस नये मकान में जाने के लिए बहुत उत्सुक थी। लेकि...
वार्दिनेव हमेशा उसे छुट्टी देने को मना कर देता था। नाना के बजा...
उस भूमिका में और कौन पार्ट कर सकता था? वह कहता था
सितम्बर में उसे छुट्टी दे देगा। लेकिन अगस्त में उसने फिर वहा...
किया कि छुट्टी अक्टूबर में ही मिल सकेगी। नाना क्रोध से पागल
गयी। उसने निश्चय कर लिया कि १५ सितम्बर तक वह 'लॉ मिन...

अवश्य पहुँच जायगी। वार्दिनेव के सामने ही उसने उन तारीखों के लिए कई व्यक्तियों को निमंत्रित भी कर दिया। एक दिन काउन्ट मफेट से भी जिन्हें वह जानबूझ कर अब तक टालती रही थी, उसने यह कह दिया था कि वह 'लॉ मिनॉन' पहुँच कर उसकी इच्छा-पूर्ण करेगी और उन्हें भी उसने १५ सितम्बर की तारीख दे रखी थी। लेकिन फिर अचानक नाना ने १२ तारीख को ही पेरिस छोड़ने का निश्चय कर लिया था। शायद बाद को वार्दिनेव कोई विघ्न डाले इसलिए समय से पहिले ही वहाँ से उड़ जाना अच्छा होगा और फिर उस नयी कोठी में पहुँच कर वह दो दिन बिल्कुल एकांत में भी तो रह सकेगी; नाना को यह युक्ति बहुत अच्छी लगी। जो से उसने फौरन ही सामान ठीक करने को कहा। स्टेशन पहुँच कर उसे ध्यान आया कि स्टीनर को तो सूचना दे देनी चाहिए और उसने स्टीनर को भी यही लिख दिया कि वह पन्द्रह को ही 'लॉ मिनॉन' पहुँचे नहीं तो वह उससे नाराज हो जायगी। अपनी चाची को उसने सूचना दी कि वह लुई को लेकर फौरन ही 'लॉ मिनॉन' पहुँच जायँ। बच्चे को गाँव की खुली हवा में रहने से बहुत लाभ होगा! नाना इतनी भावुक हो गयी थी कि पेरिस से ऑर्लियन्स तक रेल में उसने जो से कोठी की तारीफ के अलावा कोई दूसरी बात नहीं की, फूल-पत्ते, पेड़-पौदे, चिड़ियाँ और उसका प्यारा बेटा लुई—नाना के अन्दर माता का सरल स्नेह एकदम जोर से उमड़ पड़ा था।

'लॉ मिनॉन' ऑर्लियन्स के स्टेशन से कुछ दूर थी। बड़ी मुश्किल से एक ऐसी बड़ी सवारी मिल सकी जो इन लोगों को वहाँ तक पहुँचा दे। गाड़ी वाले से नाना ने कोठी तथा उस इलाके के सम्बन्ध में इतने प्रश्न पूछे कि वह अवश्य ही परेशान हो गया होगा। नाना उत्साह के कारण उतावली हो गयी थी बच्चों की तरह; लेकिन जो नाराज और खामोश थी। वह पेरिस छोड़ कर गाँव में नहीं आना चाहती थी। गाड़ी किसी कारण पल भर को कहीं रुकी। नाना ने एकदम गाड़ी वाले से पूछा : 'क्या हम पहुँच गये?'

किन गाड़ी वाला उत्तर में मौन रहा और उसने गाड़ी आगे को
ी। बादलों से घिरे हुए आकाश और विस्तृत मैदानों को देखकर
झुंझला उठी थी।
जो ने झुँझला कर कहा :
'लगता है नदाम कभी देहातों में नहीं आयी है।' जो बिल्कुल
ाहित नहीं थी।
कुछ देर बाद गाड़ी एक तरफ को मुड़ी। गाड़ीवाले ने धीरे से कहा :
ह है आपकी कोठी!'
नाना बच्चों की तरह उछल पड़ी : 'कहाँ—कहाँ! अच्छा वह!
खो जो वह देखो! अहा! कितनी बड़ी, कितनी प्यारी जगह है!'
सामने के बड़े दरवाजे के सामने जाकर गाड़ी रुकी। कोठी का माली
नयी मालकिन का स्वागत करने के लिए आया। नाना गम्भीर बनने का
प्रयत्न करती हुई गाड़ी से उतरी। उसके जी में आया कि वह फौरन ही
भाग कर माली से तरह-तरह के प्रश्न करे लेकिन उसने अपने आपको
प्रयत्न करके रोका। माली भी बातूनी कम नहीं था। उसने नाना से इस
बात की क्षमा माँगी कि कोठी अभी ठीक तरह साफ नहीं थी क्योंकि उसे
मालकिन के आने की सूचना बहुत देर में मिली थी। नाना फिर भी
बहुत तेजी से मकान की तरफ बढ़ गयी थी।
'मैं हुजूर को कोठी दिखा दूँ अगर आज्ञा हो!' माली ने कहा।
लेकिन नाना काफी आगे जा चुकी थी; उसने वहीं से उत्तर दिया
कि माली कष्ट न करे, वह स्वयं ही मकान देखना पसन्द करेगी। मतवाली
होकर नाना मकान का कोना-कोना, कमरा-कमरा देखने लगी और जो
को उसके गुन सुनाने लगी। उस खाली मकान में उसकी सुनहरी हँसी
की आवाज गूँज उठी। नाना दौड़-दौड़ कर मकान के हर कमरे को देख
रही थी। जो को इतना उत्साह नहीं था। वह नाना के पीछे-पीछे चुप-

नाप आ रही थी। नाना की आवाज बहुत दूर से आयी, जो—कहाँ हो तुम, जो। देखो यह कितनी खूबसूरत जगह है!'

नाना मकान की सब से ऊँची छत पर चढ़ी हुई नीचे की लम्बी-चौड़ी जमीन देख रही थी। विशाल फैले हुए क्षितिज पर धुँधला-सा कोहरा फैला हुआ था और तेज हवा के साथ पानी की वारीक बूँदें गिरने लगी थीं।

'जो—देखो—इन क्यारियों में कितनी फूल और सब्जियाँ लगी हैं!'

वर्षा तेजी से होने लगी थी—नाना अपना सफेद सिल्क का छाता खोले इधर-उधर नटखट बच्चे की तरह भाग रही थी।

'मदाम-मदाम! आप बीमार पड़ जायेंगी।' जो बरामदे में खड़ी-खड़ी नाना से बोली। नाना जो को भी बाहर बुला रही थी लेकिन जो बीमार तो पड़ना नहीं चाहती थी। मदाम तो पागल हो गयी हैं। और नाना पागल भी क्यों न हो जाती। आज उसे वह मिल गया था जिसकी कल्पना वह उस जमाने से किया करती थी जब वह पेरिस की सड़कों पर परेशानी और बेकारी में अपनी एड़ियाँ घिसा करती थी। तब उसे अपने वह ख्वाब आसमान से भी ज्यादा दूर मालूम पड़ते थे लेकिन आज..........

वर्षा ज्यादा होने लगी थी लेकिन नाना को इसकी बिल्कुल चिन्ता नहीं थी—केवल अफसोस यह था कि रात का अँधियारा बहुत जल्दी ही घिरा आ रहा है। नाना अब तक लगभग बिल्कुल भीग चुकी थी। एकाएक उसे लगा जैसे पास की झाड़ी में कोई चल रहा है।

'देखो। कोई जानवर है शायद!' लेकिन नाना चकित रह गयी। झाड़ीवाली चीज जानवर नहीं थी—एक आदमी था जिसे नाना ने फौरन ही पहिचान लिया :

'ओह! तुम हो जार्ज! यहाँ क्या कर रहे हो!' नाना बोली। जार्ज

साथ वह हमेशा ऐसा व्यवहार करती थी जो बच्चों के साथ किया ता है। जार्ज की अवस्था भी बहुत कम थी।

'तुमसे मिलने आया हूँ।' जार्ज ने झाड़ी में से निकलते हुए उत्तर दिया।

'तुम्हें कैसे पता लगा मेरे आने का—अच्छा समझी—माली ने बता दिया होगा!' नाना बहुत आश्चर्य में थी, 'अरे! तुम तो बिल्कुल भीग गये हो।'

जार्ज ने बताया कि रास्ते में पानी आ गया था और जैसे ही वह नजदीक के रास्ते से आने के लिए नदी में उतरा था वैसे ही फिसल गया था। नाना के दिल में दया और सहानुभूति उमड़ पड़ी। बेचारा 'जार्ज' इतना भीग गया था! नाना उसे फौरन ही अन्दर ले गयी। अँधेरे में नाना को रोक कर जार्ज बोला: 'तुम जानती हो, मैं, क्यों छिप रहा था? मैं डर रहा था कि बिना कहे आ गया हूँ—कहीं डाँट न प जाय।'

नाना उत्तर में हँस पड़ी और उसने जार्ज का माथा चूम लिय उस दिन तक नाना ने जार्ज को केवल बच्चा ही समझा था और उ प्रेम की बातों को वह बिल्कुल मजाक ही समझती थी। अन्दर ले ज उसने जार्ज को आराम पहुँचाने का विशेष प्रबन्ध किया। अपने वाले कमरे में उसने आग जलवा दी ताकि जार्ज को ठंड न लग गर्म कमरे में बहुत सुख मिलेगा दोनों को! कमरे में लैम्प जला गया था। इतनी रात को एक अजनबी के मदाम को कमरे में माली स्तम्भित रह गया था।

ठंड के कारण जार्ज के दाँत से दाँत बज रहे थे। नाना हुई। अगर कपड़े नहीं बदले जायँगे तो जार्ज बीमार पड़ जाय मर्दाने कपड़े घर में थे नहीं। नाना माली को बुलाने ही वाली

उसे एक बड़ा अजीब-सा ख्याल आया। जो दूसरे कमरे से नाना के बदलने के कपड़े लायी थी।

'यह ठीक है! आज यह कपड़े तो पहन सकता है। [illegible] तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं है मेरे कपड़े पहनने में। जब तुम्हारे कपड़े सूख जायँ तो बदल लेना ताकि सुबह घर पर डाँट न पड़े। इन्हें पहन लो—मैं भी अभी थोड़ी देर में कपड़े बदल कर आती हूँ।'

जब थोड़ी देर बाद नाना कपड़े बदल कर लौटी तो [illegible] को देख कर वह हँस पड़ी :

'ओह—कितने प्यारे लगते हो तुम औरतों के कपड़ों में।' [illegible] नाना का फूलदार ड्रेसिंग गाउन पहने था। उसके [illegible] अब तक भीगे हुए थे। वह इतना जवान और [illegible] के औरतों के कपड़ों में वह बहुत ही प्यारा लग रहा था। [illegible] को इस रूप में देखकर खूब हँस रही थी। [illegible] सुखाने ले गयी। नाना ने पूछा कि इन कपड़ों में [illegible]—जाड़ा तो नहीं लग रहा है? नाना के [illegible] सुख अनुभव कर रहा था—उसने उत्तर दिया कि औरतों के कपड़ों में ज्यादा गर्मी और आराम और कहीं [illegible] था जैसे उन कपड़ों में नाना के बदन [illegible] समायी हुई है।

'मुझे बड़ी जोर से भूख लग रही है—खाने को कुछ है?' [illegible] देर बाद कहा।

कितना बेवकूफ है यह [illegible] आया। लेकिन नाना को भी तो [illegible] थी। खाने का कुछ प्रबन्ध तो करना ही पड़ेगा। पर घर में था ही क्या? [illegible] के पास जाकर कुछ 'सूप' ले आयी जो उसने [illegible] बना लिया था कि शहर के बाद कहीं यह लोग भूखे न [illegible]। इधर-उधर कुछ चीजें और रखी हुई मिल

गयीं। नाना ने अपने 'बैग' से भी कुछ चीजें निकाल लीं जो उसने रास्ते में खाने के लिए रख ली थी—पेस्ट्री, नमकीन, संतरे। खाने के बाद इन लोगों को कमरे में मुरब्बे का एक डिब्बा भी मिल गया; उसे भी यह लोग खा गये। दोनों को खूब भूख लगी थी—जैसे जवानी में स्वस्थ लोगों को लगा ही करती है—दोनों में जवानी की मित्रता थी और उन दोनों के परस्पर व्यवहार में कोई भेद-भाव, तकल्लुफ या कृत्रिमता नहीं थी।

'ओह! आज तो खूब ही खाना खाया गया। बहुत दिनों से इतनी भूख नहीं लगी थी।' नाना बहुत खुश थी। जो जा चुकी थी। खामोश मकान में अब वह दोनों बिल्कुल अकेले रह गये थे। रात बहुत सुहानी थी। भट्ठी में जलती हुई आग मद्धिम हो चली थी—कमरे में एक गर्म और मादक-सी घुटन थी। नाना ने उठकर खिड़की खोल दी।

'देखो, जार्ज देखो—बाहर कितनी खूबसूरत रात है।' नाना खुशी के आवेश में बोली।

जार्ज कुर्सी से उठकर नाना के पास आकर खड़ा हो गया। बाहर ठंडी और भीनी हवा चल रही थी। जार्ज ने नाना की कमर में बाहें डाल दीं और उसके कंधों पर अपना सिर टेक दिया। मौसम बिल्कुल साफ हो गया था—बादल छँट गये थे—आसमान बिल्कुल खुल गया था और उसमें अनगिनत सितारे टँगे हुए थे; एक सुनहरी चादर में सारा प्रदेश ढँका हुआ था। हर चीज पर शान्ति का साम्राज्य फैला था—विस्तृत मैदानों में नीचे लेटी हुई वादी पिघली जा रही थी—और पेड़ों के लम्बे-चौड़े साये चाँदनी के खामोश समन्दरों में जज़ीरों की तरह लग रहे थे। नाना के दिल में जज्बातों की मौजें अँगड़ाइयाँ ले रही थीं—उसमें बच्चों की-सी सरलता आ गयी थी। नाना को लग रहा था जैसे पेरिस से आये उसे कई वर्ष हो गये हैं। पिछला दिन भी जैसे अब बहुत दूर मालूम पड़ रहा था। उसे कुछ बहुत अच्छा-अच्छा-सा लग रहा था।

जार्ज धीरे-धीरे नाना की गर्दन पीछे से चूम रहा था और नाना को हल्की-हल्की गुदगुदाहट महसूस हो रही थी। नाना उसे बार-बार हाथ से हटा देती थी जैसे कोई नटखट बच्चा उसे छेड़ रहा हो—प्यार से झिड़क देती थी वह उसे।

'जाओ जार्ज, अब घर जाओ। बहुत देर हो गयी है और तुम परेशान भी कर रहे हो।

नाना और जार्ज—दोनों ख्वाब की दुनिया में खोये हुए थे। जार्ज ने मना नहीं किया—अभी जल्दी क्या है! पास लगी हुई झाड़ी में एक चिड़िया चिहुंक पड़ी।

'सुनो—रोशनी बहुत बुरी लग रही है—इसे बन्द कर दें।' जार्ज ने जलते हुए लैम्प को बुझा दिया और वापस आकर नाना की कमर में फिर बाहें डाल दीं। नाना जार्ज को मना भी कर रही थी लेकिन उसे कुछ-कुछ अच्छा भी लग रहा था। यह सुहाना मौसम—यह ठंडी हवा—यह चाँद-तारे और झाड़ी में रात के पंछी का कभी कभी बोल उठना—जार्ज नाना के शरीर से बिलकुल सट गया था। कभी पहले धुँधले अतीत में—नाना इन बातों की सुखद कल्पना कर सकती थी—आसमान में पूनम का चाँद, पंछियों का संगीत और पास में एक प्यार भरा युवक! कितना अच्छा लग रहा था—नाना चाहती थी कि खुशी से रो पड़े। नाना की भी तो इच्छा हो सकती थी कि पवित्र जीवन बिताये—विशेष रूप से जब कि पवित्रता में इतना सुख हो—सन्तोष हो—शांति हो। जार्ज की उद्दंडता बढ़ती ही जा रही थी—उत्तेजना से काँपता हुआ उसका शरीर नाना से और ज्यादा करीब सट गया था। नाना ने फिर उसे अपने पास से झिड़क कर हटा दिया।

'अरे! हटो जार्ज—क्या कर रहे हो! तुम्हारी जैसी छोटी उम्र में यह सब ठीक नहीं है। और फिर मेरी और तुम्हारी अवस्था में अन्तर भी कितना ज्यादा है!'

लाज के मारे नाना का चेहरा लाल हो गया था लेकिन जार्ज यह सब नहीं देख पा रहा था। उनके पीछे कमरे के अन्दर रात का अन्धकार भरा हुआ था और उनकी आँखों के सामने एकाकीपन की खामोश और स्थिर घाटियाँ दूर तक फैली हुई थीं। पहले तो कभी उसे इतनी शर्म नहीं लगी थी! लेकिन उस माहोल में कुछ ऐसी रूमानियत थी जिससे नाना को एक नादान कुँवारी जैसा बना दिया था जिसका नन्हा-सा दिल प्यार की पहली छेड़-छाड़ से लाज और गुदगुदाहट से थिरक उठता है। और जार्ज की बाहें ज्यों-ज्यों उसके शरीर से ज्यादा कस रही थीं वैसे ही वैसे उसका विरोध उत्तेजना के अंगारों के नीचे पिघला जा रहा था। जार्ज को औरतों की पोशाक पहने देखकर वह अब भी हँस रही थी—नाना को लग रहा था जैसे यह कोई मर्द नहीं, उसी की कोई सहेली है जो उसे केवल छेड़ रही है।

'ओह!' जार्ज—नहीं-नहीं! क्या कर रहे हो!' विरोध के यह शब्द नाना के मुँह से अन्तिम बार निकल पाये। और उसके बाद..... रंगीन रात की पलकों के नीचे वह जार्ज के शरीर के नीचे खो गयी। नाना के उस समर्पण में कुँवारेपन की लाज, झिझक और मादकता थी। सारा घर रात की खामोशी में डूबा हुआ था।

× × ×

अगले दिन दोपहर के भोजन के समय तक 'लॉ फान्दे' में बहुत से मेहमान आ गये थे। सबसे पहले फॉशेरी और डगेनॅट वहाँ पहुँचे थे और उसके बाद वाली गाड़ी से काउन्ट द वांदूवरे आये थे। भोजन के समय जार्ज सबसे अन्त में मेज पर पहुँचा था। उसकी आँखों के आस-पास और चेहरे पर एक भारीपन-सा था। उसकी माँ तथा और लोगों ने पूछा कि अब उसकी तबियत कैसी है और जार्ज ने केवल यही उत्तर दिया कि वह ठीक तो हो गया, लेकिन कल के दर्द का भारीपन अब तक बाकी है। सब लोग बात कर ही रहे थे कि एक और गाड़ी से

मार्क्विस द शाँर्दे उतर कर कमरे में आ गये। सब लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ।

'ओह! तो ऐसा लगता है कि आज सुबह तुम लोग सब जान कर यहाँ इकट्ठे हुए हो! इस बार आखिर कौन-सी ऐसी बात है? मैं तो तुम लोगों को कई साल से यहाँ आने का निमन्त्रण दे रही थी लेकिन तुम लोग पहले तो कभी नहीं आये और अब आये हो तो सब एक साथ।' मदाम सूगों के स्वर में आश्चर्य भी था और मजाक भी।

खाने की मेज पर मार्क्विस के लिए भी प्रबन्ध कर दिया गया। फोशिरी काउन्टेस सैबाइन के बिल्कुल पास बैठा हुआ था। इस बार फोशिरी काउन्टेस का एक नया रूप देख रहा था और उसे आश्चर्य हो रहा था। काउन्ट मफेट की पेरिसवाली कोठी के ठण्डे और बेजान वातावरण में फोशिरी ने काउन्टेस में केवल गम्भीरता और उदासीनता देखी थी, लेकिन यहाँ सैबाइन में एक नयी स्फूर्ति उसे दिखायी दी, उसने उनकी आँखों में उमंगों के दीप फिर से जगमगाते हुए देखे। डगेनेंट काउन्ट की पुत्री—एस्टील के बराबर में बैठा हुआ ज्यादा खुश नहीं दिखाई दे रहा था। मफेट और द शाँर्दे ने एक दूसरे की तरफ कनखियों से देखा। वांदूवरे किसी मजाक पर हँस रहा था।

तभी किसी बात के सिलसिले में मदाम सूगों बोली—'तुम लोगों को मालूम है हमारी एक नयी पड़ोसिन हो गयी है—नाना!'

वांदूवरे ने बनावटी आश्चर्य से कहा—'अच्छा! तो नाना का मकान यहाँ पास में ही है।'

फोशिरी और डगेनेंट ने भी यही दिखाया कि उन्हें आश्चर्य हुआ है। मार्क्विस खाना खाने में व्यस्त थे और ऐसा लगता था कि जैसे उन्हें इस वार्तालाप में कोई दिलचस्पी नहीं है।

'बिल्कुल पास में ही तो है उसकी कोठी और वह कल रात को

यहाँ पहुँच भी गयी है। आज सुबह ही माली ने यह सूचना दी थी।' मदाम ह्यूगॉ ने बात पूरी की।

इस बार सब लोग वास्तव में चकित रह गये और एक दूसरे की तरफ देखने लगे। क्या? नाना आ गयी! वे लोग तो सोच रहे थे कि कल तक नाना आयेगी और वे उससे पहले ही पहुँच जायँगे। केवल जर्ज इन लोगों में से किसी की तरफ नहीं देख रहा था।

खाना लगभग खत्म हो चुका था और वे सब बाद को घूमने जाने की बात कर रहे थे। फॉशिरी काउन्टेस सैबाइन के प्रति और भी ज्यादा आकर्षित हो गया था। फॉशिरी ने फलों की तश्तरी उनकी तरफ बढ़ायी और उन दोनों के हाथ छू गये—आँखें मिल गयीं और सैबाइन की आँखों की रहस्यपूर्ण गहराइयों में फॉशिरी खो गया। ऊदे रंग के रेशम के गाउन के नीचे से उभरती हुई सैबाइन के शरीर की नाजुक मगर उत्तेजक गोलाइयों ने फॉशिरी को पूर्णतया मोहित कर लिया। सैबाइन की उस एक गहरी दृष्टि में फॉशिरी को एक नया सन्देश मिला।

सब लोग खाने की मेज से उठ पड़े—सबसे पीछे डगेनॅट और फॉशिरी रह गये थे। डगेनॅट एस्टील के दुबले—लकड़ी की तरह सूखे हुए शरीर के बारे में भद्दे मजाक कर रहा था लेकिन वह फौरन ही गम्भीर हो गया, जब फॉशिरी ने उसे बताया कि एस्टील के साथ शादी करने वालों को चार लाख फ्रैंक दहेज में मिलेंगे।

वर्षा होनी शुरू हो गयी थी इसलिए उन लोगों में से कोई बाहर घूमने नहीं जा रहा था। जार्ज खाना खत्म होने के बाद फौरन ही अपने कमरे में चला गया था। जितने लोग बाहर से आये थे वे सब जानते थे कि इस विशेष समय पर वे लोग वहाँ क्यों इकट्ठे हुए हैं। लेकिन 'वीनस' के इतने चाहने वालों में काउन्ट मफेट ही सिर्फ ऐसे थे जिनके दिल को इच्छा, वासना, क्रोध और उत्तेजना झकझोर डाल रही थी। उनके अन्दर तड़प थी—आग थी जो उनके व्यक्तित्व को

अन्दर ही अन्दर जलाये डाल रही थी। उनको गुस्सा आ रहा था। नाना ने तो उनसे वायदा किया था—नाना उनकी प्रतीक्षा कर रही थी फिर क्यों वह यहाँ दो दिन पहले चली आयी ! काउन्ट ने निश्चय कर लिया कि वह रात को खाने के बाद नाना के यहाँ अवश्य जायेंगे।

रात को जब काउन्ट नाना के यहाँ जाने के लिए 'लॉ फान्टे' के अहाते के बाहर निकले तो जार्ज उनके पीछे-पीछे था। काउन्ट लम्बे रास्ते से नाना के घर की तरफ बढ़े और जार्ज नजदीक रास्ते से नदी पार करके नाना के घर पहुँच गया। उसकी आँखों में क्रोध और निराशा के आँसू थे। मफेट उससे क्यों मिलने आ रहा था ! नाना ने अवश्य ही उससे मिलने का वायदा किया होगा। नाना को आश्चर्य हुआ जार्ज की इस ईर्ष्या पर, उसने जार्ज को अपने आलिंगन में बाँध कर समझाया। वह गलत समझ रहा है, उसने किसी से मिलने का वायदा नहीं किया था। मगर मफेट आ रहा था तो उसमें नाना का क्या दोष ! जार्ज भी कितना बुद्धू है कि बिना कारण इतना दुखी और परेशान हो गया। नाना ने अपने बच्चे की कसम खाकर कहा कि वह जार्ज के अतिरिक्त किसी और से प्रेम नहीं करती। यह कहते हुए उसने जार्ज को चूम लिया और उसके आँसू पोंछ दिये। और जब जार्ज कुछ शांत हुआ तो नाना बोली—

'तुम जानते हो कि यह सब तुम्हारे ही लिए तो है। लेकिन, जार्ज स्टीनर भी आ गया है और ऊपर कमरे में है; उसे यहाँ से भेज देना तो असम्भव है !'

'स्टीनर के यहाँ होने में मुझे कोई आपत्ति नहीं !'

'स्टीनर अभी अपने कमरे में ही है—मैंने बहाना कर दिया है कि मेरी तबियत ठीक नहीं है। तुम जाकर मेरे कमरे में छिप जाओ—मैं अभी थोड़ी देर में आती हूँ।' नाना ने कहा।

जार्ज हर्ष से उछल पड़ा। तब तो यह सत्य मालूम पड़ता है कि

ाना उससे थोड़ा-वहुत प्रेम अवश्य करती है। और जार्ज सोचने लगा
कि कल की भाँति आज फिर वही सब कुछ होगा। तभी वाहर घण्टा
वजी और जार्ज नाना के कमरे में जाकर एक पर्दे के पीछे छिप
गया।

काउन्ट मफेट के आने से नाना कुछ परेशान हो गयी थी। उसने
वास्तव में पेरिस में काउन्ट से वायदा कर दिया था और वह यह चाहती
थी कि अपना वायदा निभाये भी। काउन्ट जैसे वड़े आदमी को फँसा कर
लाभ ही लाभ था। लेकिन कल जो कुछ हुआ था वह नाना पहले तो
नहीं जानती थी और उस वात ने वहुत अन्तर ला दिया था। जो कुछ
कल हुआ था वह कितना शांत, सुखद और सुन्दर था, और वैसा अगर
हमेशा हो सकता तो कितना अच्छा होता! लेकिन अव तो यह मफेट आ
गया था! पिछले तीन महीनों से नाना उसे वरावर टालती आ रही थी
और इस कारण काउन्ट की उत्तेजना दूनी-चौगुनी वढ़ गयी थी। काउन्ट
को अभी और इन्तजार करना पड़ेगा। उन्हें अच्छा न लगे तो चले
जायँ। जार्ज से वेवफाई करने से अच्छा तो यह है कि वह इन स
को—इनके धन और उपहारों को छोड़ दे।

काउन्ट एक कुर्सी पर वैठे हुए थे। वैसे ऊपर से वह काफी श
दिखायी पड़ते थे लेकिन उनके हाथ काँप रहे थे। नाना के प्रलोभ
ने उनके अन्दर तूफान जैसी उत्तेजना पैदा कर दी थी—एक भय
वासना जो उनके शरीर को अन्दर ही खाये जा रही थी। वादशाह
एक सम्मानित दरवारी-समाज का एक प्रतिष्ठित सदस्य रात को अ
कमरे की तनहाई में अक्सर रो-रो पड़ता था, चीख उठता था,
उत्तेजना से। उनकी आँखों के सामने नाना का वही नग्न और म
रूप हमेशा नाचा करता था और उनके शरीर का हर परमाणु उ
को पाने की तीव्र इच्छा से पैदा हुई पीड़ा से तिलमिला उठता था।

फान्दे' आते समय भी उनके दिल में वही ख्वाब मचल रहे थे—इस बार वहाँ पहुँच कर वह अपने दिल में धधकती हुई उत्तेजना को अवश्य शांत कर लेना चाहते थे—अगर जरूरत होती तो वह जबरदस्ती करने को भी तैयार थे। थोड़ी देर बात करने के बाद ही काउन्ट ने नाना को अपनी बाहों में भर लेने का प्रयत्न किया।

'नहीं-नहीं! यह क्या कर रहे हैं आप!' नाना ने बिना नाराज हुए—मुस्कुराते हुए कहा।

लेकिन काउन्ट ने नाना को आलिंगन में जकड़ ही लिया—उनके दाँत भिंचे हुए थे। और जितना ही नाना ने उनके बाहुपाश से छूटने का प्रयत्न किया, उतनी ही उनकी पाशविकता बढ़ती गयी। काउन्ट ने साफ-साफ कह दिया कि वह क्या चाहते हैं। अब तो कुछ देर भी इन्तजार करना काउन्ट के लिए असम्भव था। नाना अब बहुत प्रेम से बोल रही थी ताकि उसके मना करने से काउन्ट को उतनी पीड़ा न पहुँचे।

'सुनो—डार्लिङ्ग—इस समय यह कैसे सम्भव हो सकता है—स्टीनर ऊपर के कमरे में है!'

लेकिन मफेट को उत्तेजना ने बिल्कुल पागल बना दिया था। नाना को कुछ डर लगने लगा था काउन्ट से, इस अवस्था में देख कर। मफेट के मुँह से वासना के धधकते हुए शब्द निकल रहे थे। नाना ने उनके मुँह पर हाथ रख कर उन्हें शांत करने की कोशिश की। स्टीनर सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था—नाना अजीब दुविधा में थी। उसने मफेट से कहा: 'छोड़ दो—देखो स्टीनर आ रहा है—छोड़ दो!'

जब स्टीनर कमरे में घुसा तो नाना आराम कुर्सी पर लेटी हुई कह रही थी—'मुझे तो गाँव का जीवन बहुत ही प्यारा लगता है।'

स्टीनर को देखकर वह उसी शांत भाव से बोली: 'देखो, डार्लिङ्ग—

नाना उससे थोड़ा-बहुत प्रेम अवश्य करती है। और जार्ज सोचने लगा कि कल की भाँति आज फिर वही सब कुछ होगा। तभी बाहर घण्टी बजी और जार्ज नाना के कमरे में जाकर एक पर्दे के पीछे छिप गया।

काउन्ट मफेट के आने से नाना कुछ परेशान हो गयी थी। उसने वास्तव में पेरिस में काउन्ट से वायदा कर दिया था और वह यह चाहती थी कि अपना वायदा निभाये भी। काउन्ट जैसे बड़े आदमी को फँसा कर लाभ ही लाभ था। लेकिन कल जो कुछ हुआ था वह नाना पहले तो नहीं जानती थी और उस बात ने बहुत अन्तर ला दिया था। जो कुछ कल हुआ था वह कितना शांत, सुखद और सुन्दर था, और वैसा अगर हमेशा हो सकता तो कितना अच्छा होता! लेकिन अब तो यह मफेट आ गया था! पिछले तीन महीनों से नाना उसे बराबर टालती आ रही थी और इस कारण काउन्ट की उत्तेजना दूनी-चौगुनी बढ़ गयी थी। काउन्ट को अभी और इन्तजार करना पड़ेगा। उन्हें अच्छा न लगे तो चले जायँ। जार्ज से बेवफाई करने से अच्छा तो यह है कि वह इन सब को—इनके धन और उपहारों को छोड़ दे।

काउन्ट एक कुर्सी पर बैठे हुए थे। वैसे ऊपर से वह काफी शांत दिखायी पड़ते थे लेकिन उनके हाथ काँप रहे थे। नाना के प्रलोभनों ने उनके अन्दर तूफान जैसी उत्तेजना पैदा कर दी थी—एक भयंकर वासना जो उनके शरीर को अन्दर ही खाये जा रही थी। बादशाह का एक सम्मानित दरबारी-समाज का एक प्रतिष्ठित सदस्य रात को अपने कमरे की तनहाई में अक्सर रो-रो पड़ता था, चीख उठता था, कुंठित उत्तेजना से। उनकी आँखों के सामने नाना का वही नग्न और मांसल रूप हमेशा नाचा करता था और उनके शरीर का हर परमाणु उस रूप को पाने की तीव्र इच्छा से पैदा हुई पीड़ा से तिलमिला उठता था। 'लॉ-

फान्दे' आते समय भी उनके दिल में वही ख्वाब मचल रहे थे—इस बार वहाँ पहुँच कर वह अपने दिल में धधकती हुई उत्तेजना को अवश्य शांत कर लेना चाहते थे—अगर जरूरत होती तो वह जबरदस्ती करने को भी तैयार थे। थोड़ी देर बात करने के बाद ही काउन्ट ने नाना को अपनी बाहों में भर लेने का प्रयत्न किया।

'नहीं-नहीं! यह क्या कर रहे हैं आप!' नाना ने बिना नाराज हुए—मुस्कुराते हुए कहा।

लेकिन काउन्ट ने नाना को आलिंगन में जकड़ ही लिया—उनके दाँत भिंचे हुए थे। और जितना ही नाना ने उनके बाहुपाश से छूटने का प्रयत्न किया, उतनी ही उनकी पाशविकता बढ़ती गयी। काउन्ट ने साफ-साफ कह दिया कि वह क्या चाहते हैं। अब तो कुछ देर भी इन्तजार करना काउन्ट के लिए असम्भव था। नाना अब बहुत प्रेम से बोल रही थी ताकि उसके मना करने से काउन्ट को उतनी पीड़ा न पहुँचे।

'सुनो—डार्लिङ्ग—इस समय यह कैसे सम्भव हो सकता है—स्टीनर ऊपर के कमरे में है!'

लेकिन मफेट को उत्तेजना ने बिल्कुल पागल बना दिया था। नाना को कुछ डर लगने लगा था काउन्ट से, इस अवस्था में देख कर। मफेट के मुँह से वासना के धधकते हुए शब्द निकल रहे थे। नाना ने उनके मुँह पर हाथ रख कर उन्हें शांत करने की कोशिश की। स्टीनर सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था—नाना अजीब दुविधा में थी। उसने मफेट से कहा : 'छोड़ दो—देखो स्टीनर आ रहा है—छोड़ दो!'

जब स्टीनर कमरे में घुसा तो नाना आराम कुर्सी पर लेटी हुई कह रही थी—'मुझे तो गाँव का जीवन बहुत ही प्यारा लगता है।'

स्टीनर को देखकर वह उसी शांत भाव से बोली : 'देखो, डार्लिङ्ग—

आप काउन्ट मफेट हैं। बाहर से हमारे मकान में रोशनी दिखायी दी तो मिलने चले आये।'

स्टीनर और मफेट ने हाथ मिलाये। स्टीनर का मफेट को वहाँ होना बहुत बुरा लगा था—मफेट का चेहरा अँधेरे में था इसलिए किसी को पता न लगा कि उनके चेहरे पर क्या भाव हैं, वह कुछ देर खामोश खड़े रहे। दोनों में इधर-उधर की बातें होती रहीं और लगभग पन्द्रह मिनट बाद काउन्ट विदा लेकर चलने लगे। नाना उन्हें दरवाजे तक पहुँचाने गयी—काउन्ट ने अगले दिन शाम को मिलने का समय माँगा और चले गये। थोड़ी देर बाद ही स्टीनर भी यह बड़बड़ाता हुआ सोने चला गया कि औरतों के रोग भी बहुत ऊट-पटांग होते हैं!

चलो! इन दो बुड्ढों से तो छुट्टी मिली। नाना अपने कमरे में चली गयी, जहाँ जार्ज पर्दे के पीछे उसका इन्तजार कर रहा था। कमरे में गहरा अन्धेरा था। जार्ज ने नाना का हाथ पकड़ कर फर्श पर ही खींच लिया। दोनों बहुत खुश थे—बच्चों की तरह खेल रहे थे—बस, कभी-कभी उनकी हँसी चुम्बनों के नीचे दब कर हल्की पड़ जाती थी। काउन्ट सुनसान सड़क पर 'लॉ फान्दे' की तरफ लौट रहे थे और उन्होंने सिर से हैट उतार दिया था ताकि रात की शीतल हवा उनके जलते हुए माथे को ठंडा कर दे।

इस तरह अगले कुछ दिन तक नाना और जार्ज, दोनों का जीवन आदर्श रूप से सुखी रहा। जार्ज के साथ नाना को ऐसा लगता था जैसे वह फिर से पन्द्रह साल की हँसमुख और मासूम कुँवारी हो गयी हो। जार्ज के मासूम चुम्बनों ने नाना के दिल में प्यार का पहला फूल फिर से खिला दिया था, हालांकि उसी दिल में दुनियाँ के न जाने कितने कड़ुवे अनुभव भरे हुए थे जिनसे नाना को अब घृणा हो गयी थी। नाना का वह शरीर, जिसे अब से पहले न जाने कितने और लोग भोग चुके थे, मासूम प्यार के कुँवारे कम्पन से फिर थिरक उठा था। शरीरों के उस

मिलन में उसे वह सुख मिला था जो पहले उसे कभी नहीं मिला था—उसे कुछ अजीब-सा लगा था। नाना और जार्ज के इस सम्बन्ध में प्रथम प्यार की लज्जा, संकोच, डर और झिझक सब कुछ थे। नाना को इस नये अनुभव ने बहुत भावुक बना दिया था—वह घंटों चाँद की तरफ देखा करती थी—जार्ज के साथ गले में हाथ डाले चाँदनी रातों में बगीचे में घूमा करती थी—घास पर लेट जाती थी और शबनम से उसके गोरे गाल भीग जाते थे। नाना का बचपन अपने सब अधूरे सपनों और अतृप्त इच्छाओं को लिये हुए, फिर लौट आया था।

और जो कसर बाकी थी वह लुई के आने की वजह से पूरी हो गयी। नाना की भावुकता और भी ज्यादा बढ़ गयी थी—उस मातृ-स्नेह में पागलपन-सा था। वह लुई को जी भर कर खिलाती, लाड़ करती, बढ़िया-बढ़िया कपड़े पहनाती और दोपहर में घास पर उसके साथ हँसती-खेलती और लोटती थी। लेकिन लुई के आने से नाना और जार्ज के प्रेम में कोई अन्तर नहीं हुआ था, बल्कि शायद नाना जार्ज को कुछ ज्यादा ही प्यार करने लगी थी। लुई और जार्ज—उसके लिए बच्चे तो थे ही; दोनों के लिए उसका स्नेह एक-सा था। जार्ज को भी बड़ा सुख मिलता उस प्यार में जिसमें मातृत्व की इतनी कोमलता थी। नाना ने तो एक बार यहाँ तक कह दिया कि वह यहाँ से कभी न जायें। केवल वह तीन—जार्ज, नाना और लुई—इस खूबसूरत माहोल में हमेशा—हमेशा रहें। और भोर होते तक दोनों एक दूसरे के पाक और जवान आलिंगन में पड़े हुए न जाने कितने मीठे ख्वाब रचाया करते थे।

यह सुहाना क्रम लगभग एक सप्ताह तक चला। इन्हीं दिनों रोज रात को काउन्ट मफेट आते थे और लौट जाते—उनकी अतृप्त वासना की जलन अब तक शान्त नहीं हुई थी। एक दिन जब स्टीनर को किसी आवश्यक काम के कारण पेरिस चला जाना पड़ा था तो नाना मफेट से मिली भी नहीं थी—यह बहाना कर दिया गया था कि नाना की तबियत

बहुत खराब है। और हर दिन यह विचार और ज्यादा भद्दा लगता था नाना को कि वह जार्ज से बेवफाई करे—जार्ज के प्यार में कितनी मासूमियत थी और उसके नादान दिल को नाना के प्रेम में कितना विश्वास था ! इस विचार मात्र से ही उसे घृणा थी। जो, जो नाना और जार्ज के इस गुप्त सम्बन्ध को जानती थी, समझती थी कि यह मदाम का केवल एक पागलपन है।

लेकिन एक सप्ताह बाद इस सुहाने जीवन का अन्त हो गया। नाना भूल गयी थी कि उसने बहुत से लोगों को यहाँ आने का निमंत्रण दे रखा है। वह सोचती थी कि वे लोग नहीं आयेंगे और इस प्रकार का काल्पनिक जीवन सदैव चलता रहेगा। लेकिन छठे रोज ही बहुत से मेहमान नाना के यहाँ आ गये। मिनॉन और उसके दो बच्चे, लेबोरदेत, फैरोलीन हेरेट, लूसी, ताताँ नेने, मैरिया, हेक्टर लॉ फैलॉप, गागा और उसकी पुत्री एमिली—सब मिला कर, इग्यारह व्यक्ति ! नाना इतने लोगों को देखकर चिढ़ गयी। मेहमानों के सोने के कमरे तो पाँच ही थे, जिसमें से एक में मदाम लेरॉ और लुई सोते थे। खैर ! किसी तरह प्रबन्ध तो करना ही पड़ेगा, लेकिन थोड़ी देर बाद ही नाना खुश हो गयी कि आज वह अपनी कोठी में इतने मेहमानों का स्वागत कर रही है। सब औरतों ने उसे इतनी खूबसूरत कोठी की मालकिन होने के लिए बधाई दी। सब लोग खूब हँस रहे थे—बहुत खुश थे। नाना ने पूछा कि बार्दिनेव का क्या हाल था। नाना के इस तरह एकाएक चले आने के बाद इन लोगों ने बताया कि पहले तो वह बहुत परेशान और नाराज रहा लेकिन फिर बाद को उसने लुइसी वायलेन को नाना की भूमिका दे दी थी और उसे इस भूमिका में बहुत सफलता भी मिली थी। यह सुन कर नाना काफी गम्भीर हो गयी।

लेकिन शेष सब लोग बहुत खुश थे। रात के खाने के वक्त तो जैसे यह सब मस्ती से बिल्कुल पागल हो गये थे और नाना भी अपने मेह-

मानों के साथ मस्ती के इस प्रवाह में बिल्कुल बह गयी थी। सारे घर में ज़ोरदार कहकहे गूँज रहे थे। परसों इन सब लोगों को पेरिस लौटना था इसलिए यह तय किया गया कि इतवार को यह लोग आस-पास के प्रदेश में घूमने जायेंगे।

रोज की भाँति शाम को काउन्ट मफेट नाना के यहाँ आये लेकिन अन्दर इतने लोगों की हँसी और बातों का शोर सुनकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। मिनॉन की आवाज उन्हें अन्दर से आती हुई सुनायी दी और काउन्ट समझ गये कि क्या मामला है। उनकी इच्छाओं के रास्ते में यह एक नया विघ्न था; वह इस पर बिगड़ते हुए वापस लौट गये। जार्ज भी पीछे के दरवाजे से चुपचाप आया और नाना के कमरे में चुपचाप पहुँच कर नाना की प्रतीक्षा करने लगा। लगभग आधी रात को नाना आयी—उसने काफी पी ली थी और इस कारण वह बहुत नशे में थी। नाना ने जार्ज से जिद की कि वह भी कल उन लोगों के साथ अवश्य घूमने चले लेकिन जार्ज ने इसका विरोध किया। कहीं किसी ने उसे नाना के साथ देख लिया तो बहुत बदनामी हो जायगी। नाना रो पड़ी—जार्ज उसकी बिल्कुल परवाह नहीं करता—उससे प्रेम नहीं करता। जार्ज को अन्त में हाँ करना ही पड़ा।

'तो तुम सचमुच मुझसे प्रेम करते हो?' नाना ने खुश होकर कहा, "क्यों बहुत प्रेम करते हो न—मुझसे? कहो—हाँ! अगर मैं मर जाऊँ तो तुम बहुत दुःखी होगे न?' नाना जार्ज के शरीर से लिपट गयी।

उधर 'लॉ फांदे' में हर समय मदाम ह्यूगों नाना की बुराई किया करती थीं। अपने मेहमानों के प्रति भी उनकी यह धारणा बन गयी थी कि वे भी नाना की कोठी के चक्कर लगाया करते हैं। सबने बहाना किया कि उनका विचार बिल्कुल गलत है। वंदेनेंट ने नाना से मिलने का विचार ही छोड़ दिया था और वह 'लॉ फांदे' से बाहर कभी जाता ही नहीं था। वह इधर कुछ दिन से—जब से उसे चार लाख फ्रैंक के

ज की बात मालूम पड़ी थी—एस्टील की ओर अधिक ध्यान देने
गा था। फॉशिरी ज्यादातर काउन्टेस सेवाइन के साथ ही रहता था।
दाम ह्यूगॉ के ख्याल से यदि इन लोगों में कोई अच्छा व्यक्ति था तो
ाउन्ट मफेट, जिन्हें विशेष काम से रोज ऑलियन्स जाना पड़ता था
और जार्ज जिसके सिर का दर्द ठीक ही नहीं होता था और इस कारण
मदाम ह्यूगॉ को कुछ दिनों से चिन्ता रहने लगी थी।

रोज शाम को काउन्ट के बाहर चले जाने के कारण, फॉशिरी और सेवाइन एक दूसरे के काफी निकट आ गये थे और अक्सर साथ ही रहते थे। फॉशिरी की विनोदपूर्ण बातों में सेवाइन को बहुत मजा आता था। और जब कभी थोड़ी देर के लिए भी यह दोनों अकेले होते थे तो दोनों की आँखें मिल जाती थीं और एक दूसरे को अपने दिल का संदेश देने का प्रयत्न करती थीं। उन्हें लगता कि वे एक दूसरे को समझना चाहते हैं—एक दूसरे के करीब आना चाहते हैं। यौवन की वह उमंगें जो पहले कभी खिल न सकी थीं अब फिर से कसमसाने लगीं सेवाइन के दिल में।

## ७

पैरिस लौटने के एक दिन पहले—लॉ मिनॉन में रहते हुए ह
नाना ने काउन्ट मफेट की इच्छा एक बार तृत कर दी थी। नाना
एक विशेष मनोवैज्ञानिक उथल-पुथल अन्तिम दो दिनों में हो गयी थी
उसके अन्दर दौलत-इज्जत और सांसारिक द्रव्यों के लिए एक अजीव-
भूख जाग पड़ी थी और वह उस भविष्य की कल्पना करने लगी थी
वह एक धनी, प्रतिष्ठित और सम्मानित महिला होगी। और वह सु
सपना, जो कुछ दिन पहिले तक उसे इतना प्रिय था, यथार्थ की
आँच में पिघल कर बह गया। हालाँकि उस रात को नाना ने मफे

इच्छा पूरी कर दी लेकिन उससे उसे कोई सुख नहीं मिला। हाँ, भविष्य के सुख और सपनों की मंजिल मजबूत नींव पर अवश्य रख दी गयी थी।

तब से तीन महीने बीत चुके थे। दिसम्बर का महीना था। पैरिस की सड़कों पर काउन्ट अकेले पैदल घूम रहे थे। चारों ओर भीड़-भाड़ थी—शोरगुल था—जिन्दगी का तेजी से चलता हुआ कारवाँ था। वर्षा खत्म हो चुकी थी—गर्म और सीली हुई हवा हर तरफ फैली हुई थी। भीगी हुई सड़क पर कदमों की हल्की-हल्की छपछपाहट आ रही थी। दूकानों के शो-केसों में गैस बत्तियों की तेज रोशनी में तरह-तरह की चीजें दमक रही थीं।

लेकिन काउन्ट मफेट जैसे इन सबसे बहुत दूर थे। वह नाना के विषय में ही सोच रहे थे। नाना ने उससे फिर क्यों झूठ बोला था? सुबह काउन्ट को नाना का पत्र मिला था जिसमें लिखा था कि वह शाम को उसके यहाँ न आयें क्योंकि लुई की तबियत खराब होने के कारण वह मकान पर न रहेगी। लेकिन काउन्ट को कुछ शक था इसलिए वह नाना के मकान पहुँच गये थे। वहाँ उन्हें पता लगा कि नाना थियेटर गयी हुई है। मफेट यह भी जानते थे कि नये नाटक में नाना किसी भूमिका में नहीं है। फिर यह झूठ क्यों?

× × ×

इसी चिन्ता में घूमते-घूमते काउन्ट वैराइटी थियेटर पहुँच गये और थियेटर के पीछे वाले फाटक के पास खड़े होकर नाना के निकलने की प्रतीक्षा करने लगे। सड़क का वह भाग काफी गंदा था—कुछ छोटी-मोटी दूकानें, एक मोची जिसकी कोई बिक्री ही नहीं होती थी, पुराने और गन्दे फर्नीचर की दूकानें, एक छोटी सी लाइब्रेरी जिसमें सब कुछ सोया-सोया सा, धुँधला-धुँधला सा मालूम पड़ता था, शराब पिये हुए थियेटर के कुछ सेवक और सस्ते-भड़कीले कपड़ों में सस्ती सूरत वेश्याएँ!

दस बज गया! काउन्ट ने सोचा कि अन्दर जाकर क्यों न देख लें। शायद नाना अपने शृङ्गार के कमरे में हो। कुछ गंदी सीढ़ियाँ चढ़कर वह थियेटर के पीछे वाले मैदान में पहुँच गये। वहाँ पर एक अजीब-सी घुटन, सीलन और गन्दगी थी और एक मटियाला-सा चिपचिपा कुहासा हर तरफ फैला हुआ था। लेकिन ऊपर की मंजिल की एक खिड़की में रोशनी जल रही थी—काउन्ट इस सन्तोष से खुश हो गये थे कि नाना अपने शृङ्गार कक्ष में ही है। जहाँ काउन्ट खड़े थे वहाँ गन्दी दलदल थी—भयानक सड़ाँध थी, टूटे हुए नल से बड़ी-बड़ी बूँदें चू रही थीं। कहीं गैस की हल्की-सी रोशनी गन्दी जमीन पर लगी हुई थोड़ी सी काई पर और एक कोने में रखे हुए कूड़े के एक बड़े ढेर पर पड़ रही थी। टूटे हुए टिन और एक ढक्कन पर, जिसमें लगी हुई मिट्टी में एक छोटा सा पौधा जमने लगा था, भी उसी गर्द रोशनी का कुछ भाग पड़ रहा था।

यह सोचकर कि नाना कुछ देर में निकल ही आयेगी, काउन्ट फिर पीछे के दरवाजे के पास चले गये जहाँ वह पहिले खड़े थे। थोड़ी देर बाद जब नाना बाहर निकली तो काउन्ट मफेट को वहाँ देखकर घबड़ा-सी गयी।

'त.........तुम हो!' नाना बोली।

उसे देखकर कुछ लड़कियाँ, जो खड़ी-खड़ी बेहूदा मजाक कर रही थीं, एकदम खामोश हो गयीं।

काउन्ट का हाथ पकड़ कर नाना एक ओर जल्दी से चल दी। मफेट कुछ देर पहले नाना से बहुत कुछ पूछना-कहना चाहते थे लेकिन अब अवसर आने पर वह बिल्कुल चुप हो गये थे। नाना अपनी घबड़ाहट में काउन्ट से इधर-उधर के बहाने बना रही थी। काउन्ट जानते थे कि नाना जितने बहाने बता रही है वे सब झूठ थे। लेकिन नाना का जवान, गर्म और गुदगुदा शरीर उनसे बिल्कुल सट कर चल रहा था;

उनका सारा गुस्सा गायब हो गया था—केवल उनके शरीर को बाँहों में भर लेने की इच्छा शेष रह गयी थी।

'तो साथ घर चल रहे हो न?' नाना ने लापरवाही से पूछा।

'हाँ! क्यों नहीं तुम्हारा बच्चा तो अब टीक हो ही गया है। अब क्या आपत्ति है!' काउन्ट ने आश्चर्य से उत्तर दिया।

'हाँ! टीक तो है—आजकल तुम्हारी पत्नी भी तो कहीं बाहर चली गयी हैं।' नाना सम्हल कर बोली—तभी कोई रेस्तारॉं दिखायी पड़ा। नाना एकदम बोल पड़ी—'चलो यहाँ चलें! मुझे बड़े जोर की भूख लगी है—मैंने सुबह से कुछ भी नहीं खाया है।'

काउन्ट चाहते तो नहीं थे कि खुलेआम उन्हें कोई नाना के साथ देख ले, लेकिन नाना की इच्छा भी नहीं टाल सकते थे। रेस्तारॉं में पहुँचते ही वह एक अलग कमरे में घुस गये ताकि उन्हें कोई देख न ले लेकिन नाना हल्के-हल्के चल रही थी। किसी की आवाज पीछे से अचानक आयी।

'कहो, नाना!'

डगेनेट नाना को देख कर बाहर निकल आया था। उसने काउन्ट को भी देख लिया था। 'अच्छा—काफी उन्नति कर ली है! राज-दरबार के आदमियों पर भी हाथ मारने लगी हो अब तो।'

नाना भी हँस पड़ी लेकिन उसने संकेत किया कि हल्के बोलो। नाना डगेनेट के पिछले दिनों के व्यवहार से बहुत खुश नहीं थी लेकिन फिर भी वह उसे थोड़ा-बहुत पसन्द करती ही थी।

'कहो क्या कर रहे हो आजकल?' नाना ने पूछा।

'अब मैं एक नया जीवन शुरू करने वाला हूँ। व्यापार में तो जो धन कमाता हूँ वह पूरा नहीं पड़ता इसलिए सोचा है कि किसी रईस लड़की से शादी करके आराम का जीवन व्यतीत करूँ।'

नाना कुछ देर डगेनेट से बातें करती रही, और उसके बाद



उस कमरे की तरफ बढ़ी जहाँ मफेट बहुत देर से उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

'अच्छा—नाना—विदा! जाओ वह बौड़म तुम्हारा इन्तजार कर रहा होगा!' डगेनेट ने हँसते हुए कहा।

नाना चलते-चलते रुक गयी—'तुमने मफेट को बौड़म क्यों कहा?'

'क्योंकि वह बौड़म है—और क्यों? तुम्हें नहीं मालूम? काउन्टेस सैबाइन और फाशेरी में बड़े जोर का प्रेम है—उसी से छिप कर मिलने के लिए तो काउन्टेस ने यह बहाना कर दिया है कि वह कहीं बाहर गयी हुई हैं।'

कुछ क्षणों तक नाना आश्चर्य के कारण चुप रही। इस नयी घटना ने दिल के अन्दर न जाने कितनी भावनाएँ पैदा कर दी थीं। अन्त में वह बोली।

अच्छा ऐसा है! मैं तो बहुत दिन पहिले ही यह समझ गयी थी। क्या इस उच्च वर्ग की औरतें भी अपने पतियों को धोखा देकर दूसरे से प्रेम लीला रचाती हैं?'

'बिल्कुल! और काउन्टेस का यह कोई पहला अनुभव नहीं है!' डगेनेट बोला।

'सच! तो यह सम्मानित वर्ग के लोग भी इतने गन्दे होते हैं।' नाना की आवाज में उस पूरे वर्ग के प्रति घृणा थी।

होटल का एक बैरा उधर से एक ट्रे में खाने का सामान लिये हुए निकला। नाना डगेनेट से विदा लेकर उस कमरे की तरफ चल दी जहाँ मफेट बड़ी देर से उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। नाना के दिल में मफेट के प्रति घृणा और दया के भाव बड़ी तेजी से दौड़ रहे थे। बेचारे को उसकी दुश्चरित्र पत्नी कितना धोखा दे रही थी; नाना की इच्छा हुई कि वह उसे अपना प्यार दे कर सांत्वना दे। लेकिन फिर उसे इस बौड़म

आदमी के प्रति घृणा भी उमड़ पड़ी जो यह जानता ही नहीं कि औरतों के प्रति कैसे व्यवहार किया जाय और इसी कारण उसकी पत्नी भी उसे धोखा दे रही थी।

रेस्तारों में कुछ देर बैठ कर खाने-पीने के बाद करीब ग्यारह बजे तक वे दोनों नाना के घर पहुँचे। नाना ने सोचा था कि घंटे-दो घंटे में वह किसी ऐसे बहाने से मफेट को टाल देगी कि उसे बुरा न लगे! बाहर चुपके से उसने जो से कह दिया।

'अगर वह उस समय तक आ जाय जब तक काउन्ट यहाँ है तो उससे कह देना कि चुपचाप बैठ कर इन्तजार करे—शोर न मचाये।'

सोने के कमरे में पहुँच कर मफेट ने अपना ओवरकोट उतार दिया। भट्ठी में आग जल रही थी और कमरा खूब गर्म था। नाना ने कहा—'मुझे तो नींद नहीं लगी है—मैं अभी नहीं सोऊँगी।

काउन्ट जो नाना को नाराज नहीं करना चाहते थे, बोले—'जैसा तुम चाहो!' यह कहते हुए उन्होंने आराम से अपने जूते उतार दिये।

नाना की आदत थी—और इसमें उसे अपार आनन्द मिलता था—कि शीशे के सामने खड़े होकर वह अपने सब कपड़े उतार डालती थी और फिर अपने नगे शरीर को निहारने में मग्न हो जाती थी। उसे अपने शरीर से—रेशम-सी चिकनी खाल से, अपने शरीर की सुघड़ता से—बहुत प्रेम था। अपने नग्न शरीर के प्रतिबिम्ब के सामने खड़ी होकर वह ठीक उसी तरह बेसुध हो जाती थी जैसे कोई पुरुष उसकी नग्नता को देख कर पागल हो जाय। कभी-कभी फ्रान्सिस भी, जो उसके बाल सँवारता था, कमरे में आ जाता था लेकिन वह अपने शरीर के प्रेम में इतनी तन्मय रहती थी कि बहुत देर तक वह उसकी ओर जरा भी ध्यान नहीं देती थी।

उस दिन रात को नाना ने कमरे की सब बत्तियाँ जलवा दी थीं।

जब लगभग वह अपने सब कपड़े उतार चुकी तब एकाएक उसने मफेट से पूछा—'फॉशेरी ने मेरे ऊपर 'फिगारो' में एक कहानी लिखी है—'दि गोल्डेन फ्लाइ'। पढ़ कर देखो कैसी है!'

काउन्ट अखबार उठा कर वह कहानी पढ़ने लगे और नाना उसी प्रकार शीशे के सामने खड़ी-खड़ी अपने नंगे रूप को प्यारभरी आँखों से देखती रही। मफेट धीरे-धीरे फॉशेरी की लिखी हुई कहानी पढ़ रहे थे। यह कहानी एक ऐसी औरत की कहानी थी जो दरिद्रों और शराबियों के परिवार में से उभरी थी और जिसके शरीर के अन्दर पतन की तमाम शक्तियाँ केन्द्रित हो गयी थीं। पेरिस की गन्दी बस्तियों की औलाद थी यह औरत, और उसके जवान शरीर की मांसलता में एक अद्भुत आकर्षण था। उस आकर्षण के कारण उसने उस तमाम पतित वर्ग की तरफ से बदला लिया था जिसकी औलाद थी वह। उस औरत के द्वारा उस पतित वर्ग की सड़ाँध और उसका कोढ़ एक संक्रामक रोग की तरह उच्च वर्गों में भी फैल गये थे। ऐसा लगता था मानो प्रकृति उसके द्वारा सारे पेरिस को पतन और बरबादी के गहरे गर्त्त में ढकेल रही है। कहानी के अन्त में इस औरत की तुलना उस सुनहरे कीड़े से की गयी थी जो गन्दगी से पैदा होता है और वहीं से मृत्यु के कीड़े समेट कर इधर-उधर उड़ता है। उसका रंग सोने का-सा होता है और उसमें जवाहरातों की चमक होती है लेकिन जिसको वह एक बार छू भी लेता है वह फौरन उस जहर से सड़ कर मर जाता है।

कहानी वीभत्स और भयानक थी। नाना ने पूछा—'कहो! कैसी लगी यह कहानी?'

मफेट ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने चाहा कि वह कहानी को दोबारा पढ़े। सिर से पैर तक काउन्ट के शरीर के अन्दर एक गहरी सिहरन-सी दौड़ गयी। इस कहानी ने काउन्ट के अन्दर वह सब पैदा कर दिया था—कुछ ऐसी भावनाएँ जगा दी थीं—जिन्हें दबाने का

प्रयत्न वह बहुत दिनों से कर रहे थे। मफेट ने आँख उठा कर देखा—नाना अभी उसी तन्मयता से शीशे में अपने नंगे शरीर का प्रतिबिम्ब देख रही थी। उसमें अचम्भे के वही भाव थे जो उस लड़की में होते हैं जिसे पहली बार अपनी जवानी का ज्ञान होता है और जो चकित रह जाती है अपने उठते हुए उभारों को देख कर।

मफेट उसकी तरफ गौर से देखते रहे। उन्हें नाना से एक अजीब तरह का डर लग रहा था। उस कहानी ने जैसे उनकी सोई हुई चेतना को एक झटके से जगा दिया था—उन्हें अपने आप से घृणा होने लगी। वास्तव में वह सब बिल्कुल सच था—पिछले तीन महीनों में नाना ने उनके व्यक्तित्व को बिल्कुल गन्दा कर डाला था। और मफेट को लगा कि उनकी आत्मा एक गुनाहों में रँग गयी है। उस क्षण में उन्होंने यह जाना कि इस पाप का क्या अंजाम होगा। यह पाप उन्हें सड़ा कर बरबाद कर डालेगा—उनके परिवार को नष्ट कर देगा। समाज का एक हिस्सा टूट कर धूल में मिल जायगा। लेकिन नाना के शरीर के जवान और मांसल उभारों से वह अपनी दृष्टि न हटा सके और यह प्रयत्न करने लगे कि इस तरह देखते रहने से शायद उनके दिल में उसके प्रति घृणा और भी बढ़ जाय।

उन्होंने नाना के चेहरे की वह मोहनी मुस्कुराहट देखी—अधखुली आँखों को देखा—उसकी कसी हुई और तगड़ी छातियों को देखा जिसके गठे हुए स्नायु उसकी रेशमी खाल के नीचे लहराते हुए मालूम पड़ रहे थे और उसके बिखरे हुए बालों को देखा जो पिघले हुए सोने की तरह लग रहे थे। और फिर काउन्ट को औरत के उस रूप का ख्याल आया जिसे कभी वह शैतान का सबसे बड़ा प्रलोभन समझते थे—जिसमें पाशविकता थी। नाना के भी सारे शरीर पर सुनहरे रोयें थे जिनके कारण उसकी खाल मखमली लगती थी। उसके नितम्ब और जाँघें तगड़ी और कसी हुई थीं और उनकी छाया में उसका सौन्दर्य छिपा हुआ था।

के इस नग्न रूप में भी एक तगड़ी पशु की झलक थे। नाना
स्तव में उसी सुनहरे कीड़े की तरह ही थी जिसे अपनी शक्ति का भास
हीं था लेकिन जो छूने मात्र से ही सारे समाज को तबाह किये दे रही
ी। मफेट पर उस रूप का जैसे जादू हो गया था और जब उन्होंने वहाँ
। आँखें हटा कर नीची भी कर ली थीं तब भी उनकी अन्दरूनी दृष्टि
की अन्धेरी गहराई में औरत का वही पाशविक रूप खिंच आया था
और वहाँ वह पशु और ज्यादा विशाल, और भयानक लग रहा था।

नाना अब तक उसी प्रकार शीशे के सामने नग्न खड़ी थी। आवेश में उसने अपने उरोजों को अपने हाथों से कस कर दबा दिया। उसकी आँखों में आत्मप्रशंसा की चमक आँसू बन कर फैल गयी—उसने अपने उरोजों के ऊपर और बगल के पास अपने आप को चूस लिया।

मफेट के मुँह से एक लम्बी आह निकल गयी। जो कुछ वह सोच रहे थे—जितनी भी घृणा वह अपने अन्दर पैदा कर रहे थे वह सब उत्तेजना की एक लहर में बह गयी। उन्होंने पीछे से जाकर नाना को कमर से पकड़ लिया और पाशविक वासना के भयंकर आवेश में जमीन पर पटक दिया।

'अरे छोड़ो—मुझे चोट लग रही है।'

मफेट को मालूम था कि वह हार गये हैं। उन्हें मालूम था कि नान
एक ठगनी है और पाप से भरी हुई है लेकिन फिर भी वह नाना
चाहते थे—अपने खून की हर धड़कन से चाहते थे, चाहे उसमें कित
ही जहर हो।

'हटो—क्या कर रहे हो'! नाना ने जमीन से उठ कर नाराज
हुए कहा। लेकिन धीरे-धीरे वह शांत हो गयी। थोड़ी देर में तो
ही जायगा मफेट। ड्रेसिंग गाउन पहिन कर वह आग के सामने

गयी और मफेट को वहाँ से किसी तरह टालने का कोई ऐसा वहाना सोचने लगी जिससे वह नाराज न हो।

'तो कल सुबह तुम्हारी पत्नी वापस लौट रही हैं।' नाना ने कहा।

मफेट अब तक एक आराम कुर्सी पर बैठ गये थे—उनके चेहरे पर हल्की-सी थकान थी। काउन्ट ने उत्तर में अपना सिर हिला दिया।

'तुम्हारी शादी के कितने वर्ष हुए?' नाना ने कुछ देर बाद पूछा।

'उन्नीस साल!'

'और तुम्हारी पत्नी अच्छी तो हैं? तुम दोनों में पटती है?'

काउन्ट ने उत्तर नहीं दिया। नाना के इस वार्त्तालाप से वह खुश नहीं थे। 'मैं कह चुका हूँ कि इस सम्बन्ध में तुम बात न किया करो!'

'अच्छा! लेकिन क्यों? बात करने से तुम्हारी पत्नी को खा तो नहीं जाऊँगी मैं! सब औरतें एक-सी ही होती हैं—काउन्ट!' नाना को धीरे-धीरे गुस्सा आने लगा था। वह तो चाहती थी कि मफेट के साथ सहानुभूति दिखाये और वह हैं कि हाथ नहीं रखने देते। उसने काउन्ट को चिढ़ाने के लिए कहा—

'तुम्हें पता है फॉशिरी तुम्हारे बारे में क्या कहता फिरता है? वह कहता है कि शादी के समय योनि सम्बन्धों के बारे में तुम्हें कुछ भी पता नहीं था। क्या यह सत्य है?' नाना आग के सामने पड़ी-पड़ी अपनी पीठ सेंक रही थी।

'बिल्कुल सत्य है।' काउन्ट ने गम्भीरता से उत्तर दिया। नाना जोर से हँस पड़ी। ऐसा भी हो सकता है—यह बात नाना को बहुत अजीब-सी लगी। नाना ने मफेट से और भी बहुत-से प्रश्न किये उसके दाम्पत्य सम्बन्धों के और उनकी सुहागरात के बारे में। पहले तो काउन्ट इन बातों का जवाब देते हुए शर्माये लेकिन बाद को इन प्रश्नों का उत्तर देने में उन्हें कोई झिझक नहीं मालूम पड़ी। बाहर दरवाजा खुलने की सी आवाज हुई और ऐसा लगा मानों जो किसी से बात कर रही है।

...ट ने आश्चर्य से नाना की तरफ देखा। नाना ने फौरन बहाना कर ...या कि जो की बिल्ली होगी। उफ! साढ़े बारह बज गये। वह भी ...ा गया लेकिन यह बौड़म, जिसे इसकी पत्नी तक धोखा दे देती है, अब तक यहीं जमा है। अब इसे फौरन ही यहाँ से भगाना चाहिए! क्यों वह उससे इतनी बातें कर रही है? उससे क्या अगर मफेट की पत्नी उसे धोखा देकर दूसरों से प्रेम करती है! एकदम नाना जोर से चिढ़ गयी!

'अगर तुम लोग लोग इतने बेवकूफ न होते तो तुम्हारी अपनी पत्नियों से भी उतनी ही पटती जितनी हम लोगों से और तुम्हारी पत्नियाँ इतनी बुद्धू न होतीं तो वे भी तुम्हें इतना खुश रखतीं कि तुम हमारे पीछे-पीछे न घूमते। लेकिन तुम लोग अपने आपको न जाने क्या समझते हो— तुम्हारे विचार बिल्कुल उल्टे-सीधे हैं और तुम्हारा जीवन गुनाहों से भरा हुआ है।' नाना क्रोध में बोलती चली गयी।

'समाज के उच्च वर्ग की महिलाओं के बारे में तुम बात न करो— तुम उनके बारे में क्या जानो!' काउन्ट को बुरा लग रहा था कि ए... वेश्या समाज की देवियों की आलोचना कर रही है।

यह सुन कर नाना आवेश में उठ पड़ी। 'अच्छा! तो तुम्हारा ख्या... है कि तुम्हारी इन देवियों के बारे में मैं कुछ नहीं जानती। लेकि... तुम्हारी वह प्रतिष्ठित महिलाएँ तो सच्ची भी नहीं हैं—उनमें धोखा है... फरेब है। वह न केवल पाप करती हैं बल्कि उसे इतना छिपाती हैं... उनका व्यक्तित्व भीतर ही भीतर गन्दे पानी के तालाब की तरह ... लगता है। तुम्हारी उन महिलाओं की हिम्मत है कि मेरी तरह यहाँ... तरह नंगी बैठें! मुझे मजबूर मत करो कि मैं ज्यादा कड़वी... करूँ।'

मफेट क्रोध में धीरे से कुछ बड़बड़ाये। नाना कुछ देर त... की तरफ खामोशी से देखती रही। फिर साफ आवाज में बोली।

'तुम क्या करो अगर तुम्हें यह मालूम पड़े कि तुम्हारी पत्नी तुम्हें धोखा देती है !'

काउन्ट क्रोध में उसकी तरफ बढ़े।

'और मान लो मैं तुमसे बेवफाई करूँ ?'

'ओह ! तुम !' काउन्ट ने क्रोध में कंधे हिला दिये।

नाना नहीं चाहती थी कि काउन्ट को उसकी पत्नी के दुराचरण की बात बताये—वह उसका दिल नहीं दुखाना चाहती थी। लेकिन काउन्ट से वह धीरे-धीरे खीझने लगी थी और चाहती थी कि वह यहाँ से जल्दी से जल्दी चला जाय।

'अच्छा, तो अब तुम यहाँ से बिल्कुल चले जाओ। यहाँ तुम्हारा क्या काम ? तुम मुझे दो घंटे से परेशान कर रहे हो। अपनी बीबी के पास जाओ जो फशिरी के साथ प्रणय क्रीड़ा करके अपना दिल बहला रही है। खूब हैं तुम्हारी प्रतिष्ठित महिलाएँ। वह तो अब हमारे व्यवसाय में भी दखल देने लगी हैं।'

काउन्ट ऐसे हो गये जैसे उन पर दर्द के पहाड़ टूट पड़े हो—उनका सारा शरीर, उनकी आत्मा एक भयानक पीड़ा से तड़प उठी। घायल पशु की तरह वह कुर्सी से उठ पड़े। नाना को उठा कर उन्होंने जोर से फर्श पर पटक दिया और अपना पैर इस तरह उठाया मानो वह नाना का मुँह कुचल डालना चाहते हों। नाना को एकाएक बहुत ज्यादा डर लगा लेकिन क्रोध के तूफान ने जैसे मफेट को बिल्कुल अन्धा कर दिया था और वह पागल की तरह कमरे में इधर-उधर भटक रहे थे। अन्दरुनी संघर्ष की भयङ्करता से काउन्ट की आँखों में गर्म आँसू छलक आये थे। मफेट को इस हालत में देख कर नाना को फिर उन पर दया आ गयी।

'मुझे बहुत अफसोस है कि तुम्हें इससे इतनी पीड़ा हुई है। सच मानो—अगर मुझे यह मालूम होता कि तुम्हे इस सम्बन्ध में कुछ नहीं

मालूम और तुम अपनी पत्नी को बिल्कुल निर्दोष समझते हो तो मैं तुमसे यह बातें कभी न कहती। और फिर मुझे ठीक-ठीक मालूम भी तो नहीं कि जो कुछ मैंने तुम्हें बताया है वह बिल्कुल सत्य ही है। हो सकता है कि यह केवल अफवाह ही हो—तुम्हें इस पर इतना परेशान नहीं होना चाहिये था। और मैं अगर पुरुष होती तो औरतों की इतनी परवाह नहीं करती। सब औरतें एक जैसी ही होती हैं—अच्छी—बुरी, क्या !'

लेकिन काउन्ट नाना की बात सुन ही नहीं रहे थे। किसी तरह उन्होंने अपने जूते और ओवरकोट फिर से पहिन लिये थे और क्रोध में काँपते हुए वह कमरे के बाहर चले गये थे।

'मैं क्या करूँ अगर इनकी पत्नी इन्हें धोखा देती है—मेरा इसमें क्या दोष ! मैंने तो चाहा था कि इनको खुश कर दूँ।' नाना स्वगत बोलती रही काउन्ट के चले जाने के बाद भी।

अब तक नाना आग के पास बैठी-बैठी खूब गर्म हो चुकी थी। वह पलंग पर लेट गयी और उसने जो को बुला कर कहा—'उसे भेज दो अब।'

मफेट सड़क पर उसी दशा में पागल की तरह चले जा रहे थे। अभी-अभी फिर वर्षा हो चुकी थी। काले बादलों के बड़े-बड़े टुकड़े चाँद की तरफ भागे चले जा रहे थे। सड़क बिल्कुल सुनसान पड़ी थी। मफेट नाना की बातों पर फिर से सोचने लगे। नाना ने उन्हें चोट पहुँचाने के लिए अवश्य झूठ बोला है। उन्हें चाहिये था कि नागिन की तरह नाना का सिर कुचल देते। मफेट ने निश्चय किया कि वह अब दोबारा उसकी सूरत भी नहीं देखेंगे। और इस विचार से कि अब वह नाना के फन्दे में कभी नहीं पड़ेंगे, उन्होंने सन्तोष की लम्बी साँस खींची। उस कमबख्त ने उनकी चालीस साल की धार्मिक और नैतिक मान्यताओं को बिल्कुल कुचल डाला था। बादल छँट गये थे और चाँदनी में सूनी

सड़क चमक उठी थी। अपार दुख से वह सिसक पड़े—उन्हें लगा कि वह एक ऐसे गहरे और अन्धेरे गर्त में गिर पड़े हैं जहाँ से निकलना असम्भव है।

'सब कुछ टूट गया—खत्म हो गया। अब कुछ शेष नहीं जिस पर जिन्दगी खड़ी रह सके!' रात की वीरानी में काउन्ट मफेट की आवाज गूँज उठी।

खास सड़क पर इस समय भी कुछ लोग जल्दी-जल्दी पैदल अपने घरों की तरफ चले जा रहे थे। काउन्ट ने सम्हलने की चेष्टा की लेकिन नाना की बात उनके दिमाग में भयकर उथल-पुथल मचाये हुए थी। काउन्ट को इस समय वह बातें याद आयीं जो उन्होंने कुछ महीनों पहले 'लॉ फान्दे' में देखी थीं लेकिन तब उनकी समझ में उन बातों का महत्त्व नहीं था। हो सकता है, बाहर जाने का बहाना बना कर काउन्टेस अब भी अपने प्रेमी के साथ ही हों। और जितना अधिक काउन्ट ने इस विषय में सोचा उतना ही उनका सन्देह और दृढ़ होता गया। भयानक कल्पनाएँ उनको परेशान कर रहीं थीं। नाना और सैबाइन दोनों औरतों में—दोनों की मांसलता में वासना के अगनित सोते थे। काउन्ट एक गाड़ी से लड़ते-लड़ते बचे। काउन्ट की आँखों में फिर से आँसू छलक पड़े और उन्होंने चाहा कि जोर से सिसक पड़ें। वह बराबर की एक छोटी सड़क में मुड़ गये। एक फाटक के पास वह कुछ देर को खड़े हुए लेकिन कदमों की आहट सुनकर वहाँ से भी फौरन हट गये। उन्हें अपने आप से—तमाम दुनियाँ से इतनी शर्म लग रही थी कि उन्हें किसी से मिलने की हिम्मत नहीं थी—वह सब से डर रहे थे।

काउन्ट धीरे-धीरे खुद व खुद उस स्थान पर पहुँच गये थे जहाँ फॉशेरी का मकान था। फॉशेरी का फ्लैट पहली मंजिल पर ही था। फ्लैट की आखिरी खिड़की में लगे हुए पर्दे के पीछे से रोशनी निकल

मालूम और तुम अपनी पत्नी को विल्कुल निर्दोष समझते हो तो मैं तुमसे यह बातें कभी न कहती। और फिर मुझे ठीक-ठीक मालूम भी तो नहीं कि जो कुछ मैंने तुम्हें बताया है वह बिल्कुल सत्य ही है। हो सकता है कि यह केवल अफवाह ही हो—तुम्हें इस पर इतना परेशान नहीं होना चाहिये था। और मैं अगर पुरुष होती तो औरतों की इतनी परवाह नहीं करती। सब औरतें एक जैसी ही होती हैं—अच्छी—बुरी, क्या !'

लेकिन काउन्ट नाना की बात सुन ही नहीं रहे थे। किसी तरह उन्होंने अपने जूते और ओवरकोट फिर से पहिन लिये थे और क्रोध में काँपते हुए वह कमरे के बाहर चले गये थे।

'मैं क्या करूँ अगर इनकी पत्नी इन्हें धोखा देती है—मेरा इसमें क्या दोष ? मैंने तो चाहा था कि इनको खुश कर दूँ।' नाना स्वगत बोलती रही काउन्ट के चले जाने के बाद भी।

अब तक नाना आग के पास बैठी-बैठी खूब गर्म हो चुकी थी। वह पलंग पर लेट गयी और उसने जो को बुला कर कहा—'उसे भेज दे अब।'

मफेट सड़क पर उसी दशा में पागल की तरह चले जा रहे थे अभी-अभी फिर वर्षा हो चुकी थी। काले बादलों के बड़े-बड़े टु चाँद की तरफ भागे चले जा रहे थे। सड़क बिल्कुल सुनसान पड़ी थ मफेट नाना की बातों पर फिर से सोचने लगे। नाना ने उन्हें पहुँचाने के लिए अवश्य झूठ बोला है। उन्हें चाहिये था कि ना की तरह नाना का सिर कुचल देते। मफेट ने निश्चय किया कि वह दोबारा उसकी सूरत भी नहीं देखेंगे। और इस विचार से कि अ नाना के फन्दे में कभी नहीं पड़ेंगे, उन्होंने सन्तोष की लम्बी साँस ख उस कमबख्त ने उनकी चालीस साल की धार्मिक और नैतिक मान को बिल्कुल कुचल डाला था। बादल छँट गये थे और चाँदनी

सड़क चमक उठी थी। अपार दुख से वह सिसक पड़े—उन्हें लगा कि वह एक ऐसे गहरे और अन्धेरे गर्त में गिर पड़े हैं जहाँ से निकलना असम्भव है।

'सब कुछ टूट गया—खत्म हो गया। अब कुछ शेष नहीं जिस पर जिन्दगी खड़ी रह सके!' रात की वीरानी में काउन्ट मफेट की आवाज गूँज उठी।

खास सड़क पर इस समय भी कुछ लोग जल्दी-जल्दी पैदल अपने घरों की तरफ चले जा रहे थे। काउन्ट ने सम्हलने की चेष्टा की लेकिन नाना की बात उनके दिमाग में मथकर उथल-पुथल मचाये हुए थी। काउन्ट को इस समय वह बातें याद आयीं जो उन्होंने कुछ महीनों पहले 'लॉ फान्दे' में देखी थीं लेकिन तब उनकी समझ में उन बातों का महत्त्व नहीं था। हो सकता है, बाहर जाने का बहाना बना कर काउन्टेस अब भी अपने प्रेमी के साथ ही हों। और जितना अधिक काउन्ट ने इस विषय में सोचा उतना ही उनका सन्देह और दृढ़ होता गया। भयानक कल्पनाएँ उनको परेशान कर रहीं थीं। नाना और सैबाइन दोनों औरतों में—दोनों की मांसलता में वासना के अगनित सोते थे। काउन्ट एक गाड़ी से लड़ते-लड़ते बचे। काउन्ट की आँखों में फिर से आँसू छलक पड़े और उन्होंने चाहा कि जोर से सिसक पड़ें। वह बराबर की एक छोटी सड़क में मुड़ गये। एक फाटक के पास वह कुछ देर को खड़े हुए लेकिन कदमों की आहट सुनकर वहाँ से भी फौरन हट गये। उन्हें अपने आप से—तमाम दुनियाँ से इतनी शर्म लग रही थी कि उन्हें किसी से मिलने की हिम्मत नहीं थी—वह सब से डर रहे थे।

काउन्ट धीरे-धीरे खुद ब खुद उस स्थान पर पहुँच गये थे जहाँ फॉशेरी का मकान था। फॉशेरी का फ्लैट पहली मंजिल पर ही था। फ्लैट की आखिरी खिड़की में लगे हुए पर्दे के पीछे से रोशनी निकल

रही थी। नीचे खड़े-खड़े काउन्ट उस खिड़की की तरफ टकटकी लगाये हुए देखते रहे जैसे वह किसी चीज की प्रतीक्षा कर रहे हों।

काले आसमान में चाँद फिर खो गया। बर्फ-सी ठंडी वर्षा की बूँदें गिर रही थीं। पास के चर्च में दो का घंटा बज उठा। मफेट अपने स्थान से हटे नहीं। अवश्य—यह वही कमरा है। फॉशिरी और सेंवाइन दोनों इस समय भी एक दूसरे की बाँहों में लिपटे हुए गुप्त प्रेम का आनन्द लूट रहे होंगे। मफेट ने सोचा कि क्यों न वह जाकर फॉशिरी के कमरे में घुस पड़े और उन दोनों को रँगे हाथों पकड़ ले। उन्होंने चाहा कि वहाँ पहुँचते ही वह दोनों का गला घोंट दें। लेकिन अगर ऐसा न हुआ तो क्या होगा? फॉशिरी को वह क्या उत्तर देंगे? और फिर काउन्ट के दिमाग में दोबारा भ्रम आने लगे। उनकी पत्नी कभी ऐसा नहीं कर सकती। ऐसा होने की सम्भावना भयानक और असम्भव थी। लेकिन फिर भी न जाने क्यों मफेट उसी स्थान पर खड़े रहे।

वर्षा और जोर से होने लगी थी। दो पुलिस के सिपाही एक तरफ से आ रहे थे—काउन्ट जल्दी से छिप कर वहाँ से हट गये लेकिन कुछ देर बाद जाड़े में ठिठुरते हुए फिर उसी स्थान पर वापस लौट आये। कुछ देर खड़े रहने के बाद जैसे ही वह वहाँ से हटने को हुए वैसे ही पर्दे पर एक छाया दिखायी दी। काउन्ट ठिटक कर खड़े हो गये। थोड़ी देर में फिर एक दूसरी छाया पर्दे के पीछे से निकलती हुई दिखायी दी। काउन्ट को लगा जैसे उनका दिल जलने लगा है। दूसरी छाया किसी औरत के सिर की ही थी। क्या वह सेंवाइन का ही सिर था? लेकिन छाया का गला तो सेंवाइन के गले से ज्यादा चौड़ा था! दिमाग की उस अवस्था में वह कुछ भी निश्चित नहीं कर सकते थे।

गिरजे के घंटेघर में तीन बजे और फिर चार लेकिन काउन्ट मूर्त्तिमान अब तक वहीं खड़े थे। धीरे-धीरे उनके दिमाग की हालत कुछ-कुछ ठीक होने लगी थी। वर्षा की बौछार उनके मुँह और पैरों पर जोरों

से पड़ रही थी। सिर्फ उनकी आँखें खिड़की से निकलती हुई ,रोशनी को देखते-देखते जलने लगी थीं। वह छायाएँ एक-दो बार फिर पर्दे पर उभरी थीं लेकिन इसी बीच में काउन्ट को ख्याल आया था कि अगर काफी देर वह बाहर प्रतीक्षा करें तो उस औरत को बाहर निकलते हुए पकड़ सकते थे। तब तो उनका सन्देह दूर हो जायगा।

अब काउन्ट के दिमाग में कोई उथल-पुथल या उत्तेजना नहीं थी—बस, सत्य जानने की एक अस्वस्थ इच्छा थी। लेकिन एकाएक खिड़की में से निकलती हुई रोशनी गायब हो गयी। काउन्ट लगभग पन्द्रह मिनट तक वहाँ खड़े रहे, उसके बाद वहाँ से हट गये। पाँच बजे तक वह सड़कों पर उन्हीं अनिश्चित भावों को लिये हुए टहलते रहे।

सर्दी बहुत बढ़ गयी थी और सड़कों पर चलते रहना असम्भव हो गया था। वह वहाँ से हट कर मुख्य सड़क पर आ गये। वह खामोश थे और उनके जूतों की आवाज भीगी हुई सड़क पर गूँज रही थी। सड़क की गैस-बत्तियों में उनकी छाया लम्बी और तिरछी होकर बार-बार गायब हो जाती थी। सवेरा होने लगा था और रात के अन्धकार के बाद सुबह का धुँधला प्रकाश मटियाली सड़कों पर बहुत भद्दा लग रहा था। कहीं-कहीं जहाँ मिट्टी थी वहाँ कीचड़ के छोटे-छोटे तालाब बन गये थे। कुछ लोग सड़क पर चलने लगे थे और वह काउन्ट की तरफ घूर-घूर कर देख रहे थे। मफेट के बाल उलझ गये थे, चेहरे पर गम और थकान थी, आँखों में भारीपन था, कपड़े पानी और कीचड़ में बिल्कुल भीग गये थे।

अचानक मफेट को भगवान् का ध्यान आया। भगवान् से तो उन्हें सांत्वना और सहानुभूति मिल सकती थी! नाना ने मफेट के सारे धार्मिक विश्वासों को खत्म ही कर डाला था लेकिन आज इतने समय बाद पुराने विश्वासों को लौटते देख कर काउन्ट को आश्चर्य हुआ। जिस समय उनके विश्वासों की मीनारें टूट रही थीं—उस समय अगर वह

भगवान को याद कर लेते तो वह सब न होता जो हुआ था ! मफेट के पैर गिरजे की तरफ मुड़ गये।

गिरजे का अन्दरूनी भाग बिल्कुल ठंडा था और ऊँची-ऊँची पथरीली मेहराबों में हल्का-हल्का कोहरा भरा हुआ था। चारों तरफ अन्धेरे की आड़ी-तिरछी परछाइयाँ पड़ रहीं थीं। गिरजा बिल्कुल खाली पड़ा था। अन्धेरे में कुर्सियों से टकराते हुए काउन्ट बीच में लगे हुए 'क्रास' के सामने घुटने टेक कर बैठ गये थे। दोनों हाथ खुद ब खुद जुड़ गये थे और उनके होंठ ऐसी प्रार्थना करना चाहते थे जिसमें उनकी आत्मा का कष्ट उतर आये लेकिन केवल कोरे शब्द ही निकल रहे थे—उनका दिमाग अब भी वहाँ से दूर सड़कों पर परेशान भटक रहा था।

'भगवान मेरी सहायता करो ! अपने दास को न भूलो—उसकी सहायता करो—मैं तुम्हारे न्याय की शरण में आया हूँ।'

लेकिन खाली शब्द गिरजे की खामोशी में कुछ देर गूँज कर गु[illegible] हो गये—मफेट को उस प्रार्थना का कोई उत्तर नहीं मिला। उन[illegible] शरीर के चारों तरफ केवल एक भारी अन्धकार था। एक कुर्सी [illegible] सहारा लेकर काउन्ट उठ पड़े—भगवान तक उनकी प्रार्थना नहीं पहुँ[illegible] सकी थी।

और यन्त्र की भाँति उनके कदम फिर नाना के मकान की त[illegible] बढ़ गये। सड़क पर थोड़ी-सी चिकनाहट थी और वहाँ पर काउन्ट फि[illegible] गये। उनकी आँखों में आँसू आ गये—वह बहुत थक गये थे। रात [illegible] बाहर रहने और पानी में भीगने के कारण उनको बहुत ठंड लग[illegible] थी। वह इस समय और इस हालत में अपने मकान को नहीं लौ[illegible] चाहते थे।

नाना के मकान पर पहुँच कर उन्होंने दरवाजा खटखटाया। [illegible] दरवाजा खोला लेकिन काउन्ट को देख कर उसे आश्चर्य भी हुआ [illegible] झिझक भी लगी। उसने कहा कि मदाम के सिर में बहुत दर्द [illegible]

'नहीं—अब क्या होता है ? मैं उन लोगों को पसन्द करती हूँ जो बिना कहे दें। अब अगर तुम एक बार आलिंगन के लिए एक करोड़ फ्रैन्क भी दो तो भी मैं मना कर दूँ। अब नहीं चलेगा—तुम यहाँ से फौरन चले जाओ वर्ना मैं नहीं जानती.........'

लेकिन उसी समय दरवाजा खुला और स्टीनर भी अन्दर आ गया। यह तो हद है ! नाना क्रोध से चीख उठी, 'अच्छा तो तुम भी आ गये।'

स्टीनर नाना का क्रोध देख कर दरवाजे पर परेशान खड़ा था। काउन्ट मफेट को वहाँ देखकर वह और भी दुविधा में पड़ गया था।

'क्या चाहते हो तुम ?' नाना ने कड़े स्वर में पूछा।

'मैं.........मैं............तुम्हारे लिए वह लाया हूँ !' स्टीनर ने डरते-डरते उत्तर दिया।

'क्या-क्या लाये हो ?' नाना का क्रोध उतरा नहीं था।

स्टीनर झिझका। दो दिन पहले नाना ने उससे कहा था कि बिना हजार फ्रैन्क साथ लाये वह अपनी सूरत भी न दिखाये। बात यह थी कि इधर कुछ दिनों से स्टीनर की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गयी थी। हजार फ्रैन्क जुटाने में उसे दो दिन लग गये थे—अभी-अभी उतने धन का प्रबन्ध हो सका था। स्टीनर ने नोटों से भरा लिफाफा नाना की तरफ बढ़ाया।

'हजार फ्रैन्क—तुम क्या समझते हो कि मैं भीख माँगती हूँ।' और यह कह कर नाना ने वह लिफाफा स्टीनर के मुँह पर फेंक कर मार दिया।'

'अच्छा अब तुम दोनों यहाँ से फौरन निकल जाओ !' मैं तुम लोगों की सूरत भी नहीं देखना चाहती।

लेकिन दोनों में से कोई फिर भी अपनी जगह से नहीं हटा। नाना ने एकदम बढ़कर सोने के कमरे की किवाड़ खोल दी। नाना के पलंग पर फोन्तां अर्ध नग्न अवस्था में पड़ा हुआ था। इधर कुछ समय से नाना उस भद्दे और कुरूप विदूषक से पागलों की तरह प्यार करने

लगी थी। अक्सर ऐसा देखा गया है कि बदसूरत पुरुषों के प्रति कुछ स्त्रियों में भयंकर वासना जाग पड़ती है।

इस तरह अचानक दरवाजा खुल जाने से फोन्तां पल भर को घबड़ाया लेकिन जल्दी ही सम्हल गया। मफेट के मुँह से क्रोध, पीड़ा और निराशा में निकल पड़ा—

'कमबख्त—वेश्या!'

नाना ने पलट कर उसी क्रोध में उत्तर दिया—

'अच्छा मैं वेश्या हूँ और तुम्हारी पत्नी क्या है?' और उसने फौरन ही कमरे के किवाड़ बन्द कर लिया।

जब मफेट अपने घर पहुँचे तो उन्हें पता लगा कि काउन्टेस अभी-अभी ही लौटी है। उन्होंने थकी हुई आँखों से एक दूसरे की तरफ देखा और अपने कमरों में सोने चले गये।

## ८

फोन्तां के लिए नाना का प्यार वास्तव में केवल पागलपन ही था। फोन्ता को देखकर ही नाना के रोम-रोम में वासना के अगनित सोते जाग पड़ते थे।

जिस दिन नाना ने काउन्ट और स्टीनर को अपने यहाँ से बुरी तरह निकाला था उसी दिन से उसे यह चिन्ता हो गयी थी कि अगर वह ज्यादा दिन इस मकान में रही तो उसकी आर्थिक स्थिति खराब हो जाने की वजह से लोग उसे बहुत परेशान करेंगे और उनके प्रेम में विघ्न डालेंगे। इसलिए जितनी चीजें वह आसानी से बेच सकती थी उन्हें बेच कर उसने दस हजार फ्रैन्क वसूल किये और एक दिन मकान छोड़ कर अचानक गायब हो गयी। फोन्तां ने भी उसका साथ दिया—उसने भी अपने सात हजार फ्रैन्क नाना के धन में मिला दिये और दोनों ने

ॉन्तमारतृ नाम की एक छोटी-सी बस्ती में एक छोटा-सा मकान
 लिया। कितना सीधा-सादा और सुखद होगा यह जीवन! नाना ने
आनन्द से सोचा। इस नये घर में आने के उपलक्ष में नाना ने एक
छोटी सी दावत दी। मेहमानों में नाना की चाची मदाम लेरॉ भी आयीं।
फोन्तां को घर में न देखकर उन्होंने नाना से कहा कि इस प्रकार सुखी
वर्तमान और उज्ज्वल भविष्य को लात मार कर क्या उसने बुद्धिमानी
की है?

'ओह—चाची! लेकिन मैं फोन्तां को बहुत-बहुत प्यार करती हूँ!'
नाना ने खुशी के आवेश में उत्तर दिया।

मदाम लेरॉ प्रेम की महिमा में बहुत विश्वास करती थीं, नाना के
उत्तर से वह बिल्कुल सन्तुष्ट हो गयीं। कुछ दिन पहले जो ने चुपचाप
आकर मदाम लेरॉ से कहा था कि जिन लोगों को नाना को रुपये देना
था वह कह रहे थे कि अगर मदाम फिर अपने उस मकान में लौट आये
तो न केवल वह इस समय खामोश रहेंगे बल्कि बाद में आवश्यकता
पड़ने पर और कर्ज़ दे देंगे।

'नहीं—ऐसा कभी नहीं होगा! क्या वह लोग यह समझते हैं कि
उनका कर्ज़ चुकाने के लिए मैं अपना शरीर बेचूँगी! मैं भूखी म
जाऊँगी लेकिन फोन्तां को धोखा नहीं दूँगी।' नाना ने उत्तेजित होक
उत्तर दिया।

लेकिन नाना ने जब यह सुना कि उसकी वह कोठी 'लॉ मिनॉ
बिक गयी है और लबॉरदेत ने उसे किसी दूसरी औरत के लिए खरी
लिया है तो उसे बहुत दुख हुआ।

तभी मदाम मैलॉयर आ गयीं और कुछ देर बाद बॉस्क अ
प्रूलेयर को साथ लिये हुए फोन्तां भी आ गया। सब लोग खाने की
पर बैठ गये। आपस में काफी मजाक की बातें हो रही थीं। नाना

लड़का लुई दूसरे कमरे से जब कूदता हुआ निकल आया तो प्लेयर ने हँसते हुए कहा—

'अच्छा! तो तुम लोगों का अभी से इतना बड़ा बच्चा भी हो गया।'

सब लोग इस मजाक पर खूब हँसे। सब ने लुई को गोद में लेकर पुचकारा और प्यार किया। काफी रात होने पर सब मेहमान विदा हुए।

नाना और फोन्तां का जीवन बहुत सुख से चलता रहा। नाना ने अपना जीवन बिलकुल सादा बना लिया था। एक दिन सुबह को जब नाना बाजार में कुछ सामान खरीदने गयी तो उसके बाल सँवारनेवाला, फ्रान्सिस एकाएक उसके ठीक सामने पड़ गया। अपने गन्दे कपड़ों में नाना को उसके सामने बहुत शर्म लगी। लेकिन फ्रान्सिस ने बड़ी बुद्धिमानी से नाना से कोई प्रश्न नहीं किया और यही दिखाया जैसे वह समझता है कि मदाम केवल कहीं विदेश यात्रा करने के कारण इतने दिन बाहर रही हैं।

लेकिन नाना उससे बहुत कुछ पूछने के लिए उत्सुक थी। उसके एकाएक चले जाने पर लोग क्या बातें उड़ा रहे थे? स्टीनर का क्या हाल है? नाना मफेट के बारे में भी पूछना चाहती थी लेकिन इस विषय पर वह चुप ही रही। फ्रान्सिस ने खुद ही बड़ी बुद्धिमानी से बताया कि नाना के चले जाने के बाद से काउन्ट बड़े व्यथित रहते थे; वह बहुत दुखी रहते थे। उसने यह भी कहा कि काउन्ट की ऐसी हालत देख कर मिनॉन उन्हें अपने घर लिवा ले गया था।

'अच्छा! तो वह अब रोज के पाव आने लगे हैं। तुम तो जानते हो—फ्रान्सिस—मैं इसकी जरा भी चिन्ता नहीं करती।' नाना ऊपर से तो शांत दिखायी पड़ी लेकिन अन्दर ही अन्दर वह नाराज थी और झुँझला गयी थी।

फ्रान्सिस ने कुछ हिम्मत करके नाना को सलाह दी। सब कुछ
ड़ कर ऐसा जीवन व्यतीत करना केवल मूर्खता है—क्षणिक उत्तेजना
वन को नष्ट कर देती है।

'यह सब तुम मेरे ऊपर छोड़ दो। लेकिन फिर भी धन्यवाद!'
ान्सिस से हाथ मिला कर नाना तेजी से एक तरफ मछली खरीदने के
लए चल दी।

एक दिन नाना और फोन्तां एक नाटक देखने गये। नाटक में
फोन्तां की जान-पहचान की औरत अभिनय कर रही थी। घर लौट
कर नाना ने उस औरत की बहुत बुराई की और फोन्तां ने उसकी बहुत
प्रशंसा की।

'चुप रहो! वह बहुत सुन्दर है और उसकी आँखों में एक खूबसूरत
चमक है। तुम लोगों की न जाने क्या आदत है कि एक दूसरे से इतनी
ईर्ष्या करती हो।' फोन्तां बहुत नाराज था। उस औरत को लेकर दोनों
में बहुत लड़ाई हुई फिर फोन्तां ने सारे पलंग पर केक के टुकड़े भी
फैला दिये थे और नाना ठीक से लेट नहीं पा रही थी। वह भी बहुत
ज्यादा चिढ़ी हुई थी।

'तुमने सारे पलंग पर कूड़ा कर रखा है, मैं ऐसे नहीं सो सकती।'
यह कहते हुए नाना पलंग पर से उठने लगी। फोन्तां को नींद भी
लग रही थी और क्रोध भी आ रहा था। उसने नाना के गालों
पर जोर से एक झापड़ मार दिया। बच्चों की तरह सिसक कर नाना
पलंग पर गिर पड़ी। फोन्तां बत्ती बुझा कर सो गया। लेकिन
नाना का सारा क्रोध एकदम शांत हो गया था। इस झापड़ के कारण
नाना फोन्तां का आदर करने लगी थी और वह पलंग के एक कोने में
चुपचाप सो गयी थी ताकि फोन्तां को कोई कष्ट न हो। जब सुबह वह
उठी, उसके हाथ फोन्तां के गले में लिपटे हुए थे और उसका शरीर
फोन्तां के शरीर से समर्पण के मधुर आलिंगन में चिपका हुआ था।

उस रात से दोनों का जीवन एकाएक बदल गया। जरा सी भी बात पर फोन्तां नाराज होकर नाना को मार बैठता था। लेकिन कुछ देर नाराज रहने के बाद नाना फिर खुश हो जाती थी—पहले से भी कहीं ज्यादा फोन्तां के प्रेम से पैदा हुए इस दासत्व में नाना को अजीब आनन्द मिलता था। सबसे बुरी बात तो यह थी कि फोन्तां सारे दिन बाहर रहता था और आधी रात तक घर लौटता था; लेकिन इस डर से नाराज होकर कहीं फोन्तां हमेशा को न चला जाय, नाना इस बात का जरा भी बुरा नहीं मानती थी—कभी शिकायत नहीं करती थी।

उसके कुछ दिन बाद, एक दिन अचानक बाजार में नाना को सैटिन दिखायी पड़ गयी। उस दिन रात को जब प्रिंस वैराइटी थियेटर में आये थे तब से इन दोनों की मुलाकात नहीं हुई थी।

'तुम यहाँ! इस हालत में।' सैटिन ने आश्चर्य से पूछा।

नाना ने उसकी तरफ इस तरह बिगड़ कर देखा ताकि नाराज होकर सैटिन वहाँ से चली जाय। शहर का यह वह भाग था जहाँ सस्ती और भद्दी वेश्याएँ इधर-उधर घूमा करती थीं। ऐसी जगह पर नाना ज्यादा देर तक खड़ी रहना नहीं चाहती थी। लेकिन सैटिन वहाँ से हटी नहीं और नाना को अपना घर दिखाने ले गयी। वहाँ पहुँच कर नाना ने सैटिन को बताया कि आजकल वह फोन्तां के साथ रहती है और उसे वह बेहन्तहा प्यार करती है। नाना ने यह भी बताया कि कैसे काउन्ट मफेट को धक्का देकर उसने बाहर निकाल दिया था। सैटिन इस बात से बहुत खुश हुई। भाड़ में जाय उन कमबख्तों का रुपया। कुछ देर बाद दोनों मित्र विदा हो गयीं।

उस दिन से जब भी नाना की तबियत नहीं लगती थी, वह सैटिन के यहाँ चली जाया करती थी। धीरे-धीरे नाना ने अपने घर में भी दिलचस्पी लेनी बन्द कर दी। उधर मकान मालिक छः महीने से इन लोगों को निकालने की धमकी दे रहा था। फिर वह मकान की सफाई

भी तो क्यों ? फोन्तां के लिए ! नहीं—कभी नहीं । फोन्तां से उसकी
यत इधर कुछ दिनों से हट गयी थी । वह धीरे-धीरे गन्दी, चिड़चिड़ी
र काहिल भी होती जा रही थी । गन्दे कमरे में गन्दे पलंग पर पड़ी-
ड़ी वह सारे दिन ऊँघाया-सोया करती थी । बाकी समय वह ज्यादातर
सेंटिन के घर पर ही बिताती थी । नाना सेंटिन को फोन्तां के दुर्व्यवहार
के बारे में बताती थी और सेंटिन उसे अपने जीवन की कहानी बताया
करती थी । दुख के बन्धन ने इन लोगों को एक सूत्र में बाँध दिया था
और इसी कारण वह एक दूसरे को बहुत चाहने लगी थीं ।

एक दिन शाम को जब फोन्तां घर लौट कर आया तो नाना ने
उसके लिए चाय बनायी लेकिन चाय का एक घूँट पीते ही फोन्तां क्रोध
से चिल्ला उठा—

'यह क्या बना लायी हो तुम ! इसमें नमक डाल दिया है क्या ?
आज सब कुछ गड़बड़ ही कर रही हो तुम ।'

फोन्तां बहुत क्रोधित था—नाना डर से काँप रही थी । उसने नाना
को गालियाँ दीं, उस पर तरह-तरह के दोष लगाये—वह गन्दी है, बेव
कूफ है, चरित्रहीन है । सेंटिन और मदाम मैलॉयर को भी उसने गालिय
दीं—उन पर क्यों बरबाद करती है वह रुपया ? इस तरह वह अग
रुपया बहाती रही तो वे लोग तबाह हो जायेंगे ।

'अच्छा—हिसाब बताओ । देखें कितना रुपया बचा है ।' फोन्तां
उसी आवाज में कहा । फोन्तां वास्तव में बहुत कंजूस था और फिर
समय तो वह नाराज भी था ।

नाना डरी हुई सारा धन निकाल कर लाने के लिए चली ग
अब तक दोनों में इस बात पर कोई झगड़ा नहीं हुआ था—
जितना जी में आता था, खर्च करता था ।

'यह क्या ? यह तो मुश्किल से सात हजार फ्रैन्क हैं । तीन

में दस हजार फ्रैन्क से ज्यादा खर्च कर दिए हैं तुमने! स्पष्ट है कि इतना रुपया तुमने अपने ऊपर ही बरबाद किया है—जवाब दो।'

और इस बात को लेकर भयंकर तूफान उठ खड़ा हुआ। नाना बिगड़ कर बोली—'तुम तो जरा-जरा सी बात में नाराज हो जाते हो। शुरू में मकान सजाने के लिए कितना फर्नीचर लेना पड़ा था, कपड़ा खरीदना पड़ा था। धन तो खर्च करना ही पड़ता है इन सब चीजों के लिए।'

लेकिन फोन्तां ने नाना की एक बात भी नहीं सुनी। 'धन तुमने कैसे बढ़ा दिया, इससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं! अब मैं तुम्हारे साथ मिल कर खर्च करने को तैयार नहीं हूँ। यह लगभग सात हजार फ्रैन्क अब मेरे हिस्से के बचे हैं। इन्हें बरबाद करने की तुम्हें इजाजत नहीं दे सकता।' और यह कहकर वह सात हजार फ्रैन्क उसने अपनी जेब में रख लिये।

नाना अचम्भे में उसकी तरफ देखती रह गयी। फोन्तां की इस बात से उसे इतना धक्का लगा था कि वह थोड़ी देर कुछ भी नहीं बोल सकी। फिर वह चीख पड़ी—'यह तो कमीनापन है। मेरे दस हजार फ्रैन्क में से मने भी तो खर्च किया है।'

फोन्तां ने नाना के चेहरे पर जोर से झापड़ मार दिया—'फिर तो कहो यही बात!' नाना ने क्रोध में यह बात दोहरा दी और फोन्तां ठोकरों और घूँसों से नाना को बुरी तरह पीटने लगा। नाना बहुत देर तक रोने के बाद जाकर कपड़े उतार कर पलंग पर लेट गयी। और जब फोन्तां भी आकर पलंग पर लेटा तो नाना उससे चिपट कर जोर से रो पड़ी। फोन्तां ने पहले तो नाना को अपने पास से हटाने का प्रयत्न किया लेकिन धीरे-धीरे उसमें भी उत्तेजना जाग उठी और उसने नाना को अपने शरीर से चिपक जाने दिया। लेकिन साथ ही साथ फोन्तां ने

यह भी कह दिया—'लेकिन सुनो ! अपने सात हजार फ्रैन्क में से एक पैसा भी घर के खर्च के लिए नहीं दूँगा।'

उसके शरीर के और करीब खिसकते हुए नाना वासना में बहती हुई बोली—'कोई चिन्ता नहीं ! मैं कुछ भी कर के घर का खर्च चला लूँगी !'

लेकिन उस दिन के बाद से उनका पारस्परिक जीवन और भी खराब हो गया। फोन्तां रोज नाना को पहले से अधिक पीटता था। और आश्चर्य तो इस बात का था कि इस मार के बावजूद भी नाना का रूप और ज्यादा निखरता जा रहा था। और फोन्तां का मारना बन्द न होता था।

लेकिन मदाम लेरॉ बहुत नाराज होती थीं जब नाना उन्हें अपनी चोटें दिखाती थी। वह नाना को बराबर समझाती थीं—डांटती थीं लेकिन हर बार नाना चुपचाप यही कह देती थी—'लेकिन चाची—मैं उनसे बहुत प्यार करती हूँ।'

मदाम लेरॉ चुप हो जाती थीं लेकिन उन्हें सबसे बड़ी चिन्ता इ बात की थी कि नाना अब उन्हें लुई की परवरिश के लिए थोड़ा-बहु भी नहीं दे पाती थी।

धन की कमी के कारण नाना इधर बहुत चिन्तित रहने लगी थ फोन्तां ने अपने सात हजार फ्रैन्क न जाने कहाँ छिपा दिए थे—न डर के मारे उससे पूछ भी तो नहीं सकती थी। फोन्तां ने कहा था घर के खर्च के लिए वह कुछ न कुछ दे दिया करेगा लेकिन रोज इ वह केवल तीन फ्रैन्क देता था और तीन फ्रैन्क के बदले में वह सब चाहता था—अंडे, मक्खन, फल वगैरह। नाना ने तंग अ कहा कि इतने कम धन में इतना सब कैसे हो सकता है। पर फोन्तां बिगड़ कर कहने लगा कि उसे घर चलाना आता—वह पैसा बरबाद करती है। और कभी-कभी तो फोन्तां व

फ्रैन्क देना भी भूल जाता था और अगर नाना झिझकती हुई उसे याद दिलाती थी तो वह उससे लड़ने लगता था। फिर नाना ने यह तय कर लिया कि उसके तीन फ्रैन्क पर वह क्यों निर्भर रह कर दुखी हो। और उसके बाद तो ऐसा होता कि फोन्तां तीन फ्रैंक भी न छोड़ता लेकिन रात को उसे बहुत अच्छा खाना मिल जाता। तब वह बहुत खुश हो जाता था और उसे देखकर नाना भी हर्ष से नाच उठती थी। उसकी आँखों में प्यार की हजारों मौजें उमड़ पड़ती थीं और वह फोन्तां से लिपट जाती थी। उस दिन से फोन्तां ने कुछ भी देना बन्द कर दिया।

और उस दिन से घर में कभी अच्छे खाने की कमी भी नहीं हुई। फोन्तां भी खुश रहता था और उसके दोस्त भी वहाँ आकर खूब दावतें खाते थे। एक दिन शाम को खाने की मेज को अच्छे और स्वादिष्ट खाने से लदा देख कर मदाम लेरों ने उससे पूछा कि इतने अच्छे खाने के लिए धन कहाँ से आता है तो नाना उत्तर में केवल रो दी।

बात यह थी कि एक दिन घर में खराब खाना देख कर फोन्तां बहुत नाराज हो कर चला गया था। नाना को इस बात से बहुत अफसोस हुआ था। उसी दिन बाजार में उसे मदाम त्रिकॉन मिल गयी थीं। मदाम त्रिकॉन से जो सुन्दर और खूबसूरत शरीरों की ठेकेदार थीं, नाना की मुलाकात बहुत दिनों बाद आज हुई थी। मदाम त्रिकॉन ने फिर वही प्रस्ताव नाना के सामने रखा। धन की कमी से नाना परेशान तो थी ही, वह फौरन ही घर चलाने के लिए अपना शरीर बेचने को तैयार हो गयी। मदाम त्रिकॉन से उसने हाँ कह दिया। एक, एक दिन में वह इस तरह से पचास-साठ फ्रैन्क तक कमा लेती थी। लेकिन इस आत्म-अपमान का पूरा पुरस्कार उसे रात को मिल जाता था जब वह प्रेम से फोन्तां के साथ सोती थी। हर दुख के लिए यहाँ नाना का सबसे

थी, कष्ट सहती थी, यहाँ तक संतोष था—इसी के लिए वह पिटती थी, कष्ट सहती थी, यहाँ तक शरीर बेचने को तैयार हो गयी थी। और फोन्तां को कभी चिन्ता न कि आखिर घर का खर्च कैसे चलता है। वह बहुत स्वार्थी था—वह समझता था कि नाना का उससे प्रेम करना स्वाभाविक ही है। और नाना को अब इसलिए ज्यादा आनन्द आता था क्योंकि अब फोन्तां उसी की कमाई पर रहता था; इससे उसे एक महान् सुख और संतोष मिलता था।

नाना एक वार फिर उतनी ही पतित वेश्या बन गयी थी जैसे कि वह कभी बहुत पहले थी। उसके जीवन में वही गन्दगी समाने लगी थी—गुनाहों का वही क्रम फिर से चालू हो गया था। और कभी-कभी वह फिर भी बहुत चिन्तित हो जाती थी जब मदाम त्रिकॉन के पास उसके लिए कोई काम न होता था। उसकी समझ में न आता था कि ऐसी अवस्था में वह और कहाँ जाय। और तब वह सैटिन के साथ पेरिस की उन तङ्ग और गन्दी गलियों में घूमा करती थी जहाँ गैस बत्तियों के धुँधले प्रकाश के नीचे भद्दे से भद्दे पाप होते थे—जहाँ दुश्चरित्रता और गुनाह अपनी सब से नीची हद तक पहुँच गये थे—जहाँ गन्दगी और अन्धेरे का साम्राज्य था—जहाँ तब से कई वर्ष पहले उसकी मासूमियत के साथ परिस्थितियों ने बलात्कार किया था और उसके नादान कुँवारेपन में पाप के और बरबादी के बीज बो दिये थे। और यह वह इसलिए कर रही थी ताकि वह फोन्तां को और ज्यादा प्यार कर सके—और ज्यादा खुश रख सके। इसी प्यार के लिए नाना शोहरत की ऊँचाइयों से गुमनामी, तकलीफ और चिन्ताओं के गढ़े में गिरने को खुशी से तैयार हो गयी थी।

एक दिन रात को देर से लौटते हुए नाना को प्रूलेयर मिल गयी। वह किसी बदनाम स्थान से पुलिस के डर के कारण भाग कर आयी थी और बहुत थक गयी थी। प्रूलेयर ने उससे कहा कि थोड़ी देर

कर उसके घर पर आराम कर ले लेकिन नाना प्लूयेर का मतलब समझ गयी और उसने साफ मना कर दिया। फोन्तां के एक मित्र के साथ ऐसा करके वह फोन्तां को धोखा नहीं देना चाहती थी। प्लूयेर नाराज होकर दूसरी ओर चल दिया। अगले दिन ही संयोग से ऐसा हुआ कि लेबॉर-देत से उसकी अचानक मुलाकात हो गयी। पहले तो दोनों एक दूसरे को देख कर बहुत झिझके लेकिन फिर कुछ देर में लेबॉरदेत सम्हल गया और उसने मुस्कुरा कर कहा कि नाना से इतने दिनों बाद मिलने से वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने बताया कि नाना के इस तरह गायब हो जाने से लोग अब तक चकित थे। नाना के पुराने सब प्रेमी उसके चले जाने से बहुत ही व्यथित थे।

'नाना तुम बहुत बड़ी मूर्खता कर रही हो। इस प्रकार का थोड़ा-बहुत प्रेम तो समझ में आता है लेकिन इतने कष्ट सहने के बाद भी प्रेम करते रहना.........क्या तुम आदर्श नारी बनने पर तुली हुई हो!' लेबॉर-देत ने उसे समझाते हुए कहा।

नाना सिर झुकाये हुए यह सब बातें सुनती रही। फिर लेबॉरदेत ने बताया कि रोज ने काउन्ट मफेट को अपने चंगुल में फाँस लिया है। इस पर नाना क्रोध में बोली—'ओह! अगर मैं अब भी चाहूँ..... .....'

लेबॉरदेत ने कहा कि वह अब भी नाना को अपने पुराने स्थान पर बैठाल सकता है लेकिन नाना ने इन्कार कर दिया। फिर लेबॉरदेत ने बताया कि बार्दिनेव फाशेरी का लिखा हुआ एक नाटक खेलने की तैयारी कर रहा है और उसमें नाना के लिए एक बहुत अच्छी भूमिका है। पहले तो नाना इस बात पर बहुत प्रसन्न हुई कि इस नये नाटक में उसे अच्छी भूमिका मिल सकती है, लेकिन फिर उसने नहीं कर दिया कि अब वह रंगमंच पर कभी नहीं उतरेगी। लेबॉरदेत तो सब प्रबन्ध करने को तैयार था लेकिन नाना अन्त तक नहीं ही करती रही; और उसे छोड़कर

ओर चल दी। अगर कोई पुरुष इतनी कुर्बानी करता तो सारी
याँ में उसका डंका पीटता लेकिन वह चुप थी और चुप रही।
उसके कुछ दिन बाद जब एक दिन नाना लगभग ग्यारह बजे रात
घर पहुँचा तो उसने देखा कि घर के दरवाजे अन्दर से बन्द हैं।
न्दर कमरे में बत्ती जल रही थी। नाना ने दरवाजा खटखटाया—
ार-बार खटखटाया और फोन्तां को आवाज दी। बहुत देर बाद अन्दर
उत्तर आया—'भाग जाओ—दरवाजा नहीं खुलेगा।' नाना ने फिर
और जोर से किवाड़ पीट डाले और हर बार वही उत्तर आया—'जाओ-
जाओ.........' जब नाना ने फिर भी खटखटाना बन्द नहीं किया तो
फोन्तां ने किवाड़ एकदम से खोल दिये और सख्ती और बेरुखी से
बोला—

'कहो—क्या चाहती हो? तुम जाती क्यों नहीं—मैं अकेला नहीं
हूँ—मेरे साथ कमरे में एक और औरत है। तुम हम लोगों को सोने
दो।'

नाना ने देखा कि वास्तव में कोई दूसरी औरत उस पलंग पर आराम
से पड़ी है जिसे नाना ने अपने धन से खरीदा था। नाना स्तम्भित खड़ी
हुई थी। फोन्तां अपार क्रोध में बाहर निकल आया था—

'जाओ यहाँ से नहीं तो गला घोंट दूँगा।'

नाना जोर से सिसक पड़ी और फिर डर कर वहाँ से भाग गयी
बाहर निकल कर नाना ने सोचा कि सैटिन के यहाँ जाकर रात काट
लेकिन उसी दिन सैटिन को भी उसके मकान मालिक ने घर से निका
दिया था। इसलिए दोनों को चिन्ता थी कि वे रात कहाँ बितायें।
दोनों ने एक गन्दे वेश्यागृह में एक कमरा ले लिया, लेकिन रात को
पुलिस वहाँ भी आ गयी और सैटिन को अपने साथ पकड़ कर ले ग
नाना किसी तरह बच गयी थी। काफी देर तक वह सहमी हुई कम
पड़ी रही और बहुत देर बाद सो पायी। सुबह आठ बजे जब उसकी

बात यह थी कि जब जेराल्डीन की भूमिका उससे अदा करवाने के प्रस्ताव सामने आया था तो नाना ने कहा था कि पहले वह एक बार स्वयं रिहर्सल देखना चाहेगी। और इसीलिए इस समय वह बड़ी तन्मयता से रिहर्सल देख रही थी। लेबॉरदेत ने उससे दो बार बीच में बात करने का प्रयत्न भी किया था, लेकिन नाना ने दोनों बार उसे चुप रहने का संकेत कर दिया था।

दूसरे अंक का रिहर्सल जब लगभग खत्म ही हो रहा था तभी मिनॉन और काउन्ट मफेट साथ-साथ स्टेज पर आये। वार्दिनेव ने अभिवादन किया।

'अच्छा! तो यह लोग आ गये।' नाना ने सन्तोष की साँस लेकर कहा।

लेबॉरदेत ने कहा—'हाँ, चलो—यहाँ से चलें। तुम आराम से कमरे में बैठना और मैं उन्हें लेकर वहाँ जल्दी ही आता हूँ।'

नाना फौरन ही उठ पड़ी। वह पीछे के रास्ते से जा ही रही थी। रास्ते में ही वार्दिनेव ने आकर उससे कहा—'सच मानो, जेराल्डीन की भूमिका तुम्हारे लिए बिल्कुल उपयुक्त है—जैसे तुम्हारे लिए ही लिखी गयी हो। कल रिहर्सल में अवश्य आना।'

नाना ने शान्ति से उसे उत्तर दिया कि वह अभी तीसरे अंक का रिहर्सल और देखेगी। तीसरे अंक की तो वार्दिनेव ने बहुत ही तारीफ़ की, तीसरा अंक तो बस कमाल का ही है। नाना ने एकदम पूछा—'और जेराल्डीन की भूमिका इसमें कितनी महत्त्वपूर्ण है?'

वार्दिनेव कुछ देर को झिझका—'जेराल्डीन·········जेराल्डीन हालाँकि इस अंक के केवल दृश्य ही में है लेकिन उसकी उतनी सी भूमिका भी बहुत जोरदार है।'

नाना कुछ देर तक वार्दिनेव के मुँह की ओर देखती रही—'अच्छा, जल्दी क्या है? हम लोग धीरे-धीरे बात पक्की कर लेंगे।'

' और वह जल्दी ही वहाँ पहुँच गयी जहाँ लेबॉरदेत उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। इस समय तक लगभग सब लोग उसे पहिचान गये थे और आपस में काना-फूसी कर रहे थे। लेकिन जब लेबॉरदेत काउन्ट मफेट के पास पहुँचा तो रोज, जो नाना के आने की खबर पाकर घबड़ा गयी थी और सतर्क हो गयी थी, फौरन समझ गयी कि क्या हो रहा है। मफेट से वह बिल्कुल ऊब चुकी थी लेकिन इस प्रकार दूध में से मक्खी की तरह निकाल दिया जाना उसे कतई पसन्द नहीं था। वह क्रोध में बोल पड़ी—

'अगर उसने स्टीनर को छीनने वाली हरकत फिर दोहराई तो मैं, सच, उसका मुँह नोंच लूँगी।

लेकिन उसका पति मिनॉन बिल्कुल शांत था; उसने कहा, 'चुप रहो—रोज—चुप रहो।'

वह जानता था कि जितना मफेट से उन्हें मिल सकता था, मिल चुका था और वह यह भी खूब जानता था कि नाना के एक इशारे पर काउन्ट सब कुछ छोड़ कर बिल्कुल ही झुक जायेंगे। इस प्रकार की उत्तेजना से लड़ना असम्भव है।

'रोज! तुम्हारा दृश्य आ गया! फिर से दूसरा अंक शुरू हो रहा है।' बार्दिनेव चिल्लाया।

रिहर्सल फिर से शुरू हो गया था और लेबॉरदेत काउन्ट को लेकर ऊपर चला गया था। नाना से दोबारा मिलने की सम्भावना से काउन्ट बहुत उत्तेजित थे। नाना की अनुपस्थिति में काउन्ट ने अपने में बिल्कुल दिलचस्पी लेनी बन्द कर दी थी—उन्होंने रोज को भी अपने से खेलने दिया था लेकिन बराबर उनके दिल की गहराइयों में नाना को फिर से पाने की इच्छा मचला करती थी—नाना के शरीर का जादू अभी खत्म नहीं हुआ था। और उसी शक्ति के बल पर नाना ने मिलते ही काउन्ट को फिर अपने वश में कर लिया। पिछले झगड़े—पिछली बातें भुला दी

वों—उत्तेजना के अंधेपन में उनकी आँखों के आगे से नाना के सब दोष गायब हो गये—उन्होंने नाना को क्षमा कर दिया। उनके दिल में केवल नाना के जवान शरीर को पा लेने की तीव्रतम इच्छा तूफान मचाये हुए थी।

'सुनो! मैं तुम्हें फिर वापस लेने आया हूँ! तुम जानती हो कि मैं तुमसे कितना प्रेम करता हूँ और मैं तुम्हें हमेशा अपने पास ही रखना चाहता हूँ। बताओ—तुम तैयार हो? एक बार बस हाँ कह दो!' काउन्ट की आवाज में कम्पन था, वह बुरी तरह उत्तेजित थे।

उन्हें इतना व्यग्र देख कर नाना ने काफी देर में उत्तर दिया—

'असम्भव है यह—बिल्कुल असम्भव है कि मैं अब कभी भी तुम्हारे साथ रहूँ।'

'क्यों?' काउन्ट के चेहरे पर पीड़ा तिलमिला उठी।

'क्यों! क्योंकि यह असम्भव है—समझे।'

काउन्ट कुछ देर खड़े नाना की तरफ देखते रहे और फिर एकदम उसके कदमों पर झुक गये।

'यह क्या बचपना है?' नाना ने कुछ बिगड़ते हुए कहा।

लेकिन काउन्ट ने नाना की कमर पकड़ कर उसके घुटनों में मुँ छिपा दिया था। एक बार फिर नाना के शरीर को छूकर उनका शरी काँप उठा था। पागलों की तरह वह उसके घुटनों से और सट गये मा वह उसके शरीर से मिलकर एक हो जाना चाहते हों। लेकिन ना फिर बोली—

इससे कोई लाभ नहीं—ऐसा होना अब बिल्कुल असम्भव है!'

काउन्ट अब तक पहले से कुछ ज्यादा शांत हो चुके थे। वहीं उठे वह बोले—'लेकिन सुनो तो मैं तुमसे क्या कहना चाहता हूँ! तुम्हारे लिए पेरिस में एक शानदार कोठी का प्रबन्ध किया है जो कुछ भी तुम चाहोगी उसे मैं पूरा कर दूँगा। तुमने केवल अ

बनाने के लिए मैं अपनी सारी जायदाद कुर्बान कर सकता हूँ ! लेकिन तब तुम केवल मेरी ही होगी और मैं तुम्हारे इन खूबसूरत पैरों पर हीरे-जवाहरात, दुनियाँ की सारी दौलत बिखेर दूँगा !' उन्होंने यह भी कहा कि वह उसके नाम काफ़ी धन भी जमा करने को तैयार हैं। लेकिन नाना अटल रही। 'मुझे परेशान मत करो—उठने दो ! मैं एक बार कह चुकी हूँ कि ऐसा होना असम्भव है—बिल्कुल असम्भव !'

काउन्ट थक कर एक कुर्सी पर बैठ गये थे। वह बिल्कुल खामोश हो गये थे। नाना कमरे में टहल रही थी।

'रईस लोग यह समझते हैं कि वे अपने धन से ही सब कुछ खरीद सकते हैं। लेकिन मैं तुम्हारे इन उपहारों की—दौलत की बिल्कुल परवाह नहीं करती। तुम अगर मुझे पूरा पेरिस भी दे दो तब भी मैं इन्कार कर दूँगी। यहाँ इस गन्दगी में खुशी से रह सकती हूँ लेकिन तुम्हारे महलों में मैं घुट कर मर जाऊँगी। मैं धन पर थूकना भी नहीं पसन्द करूँगी !' नाना अपने चेहरे पर नफ़रत के भाव बनाये हुए थी।

'हाँ ! एक चीज़ ऐसी है जो मुझे धन से कहीं ज्यादा प्रिय है—जिससे मैं खुश हो सकती हूँ ! काश मुझे वह कोई दे दे !' नाना ने रहस्यपूर्ण ढंग से कहा !

काउन्ट ने ऊपर सिर उठा कर नाना की तरफ़ देखा—नाना की आँखों में आशा की चमक आ गयी।

'लेकिन वह करना तुम्हारी शक्ति के बाहर की बात है; इसीलिए मैं केवल तुमसे ही कह रही हूँ। मैं इस नाटक में 'लिटिल डचेस' की मुख्य भूमिका करना चाहती हूँ !'

काउन्ट ने आश्चर्य से नाना की तरफ देखा।

'कौन-सी भूमिका ?'

'वह मुख्य भूमिका ! ये लोग मूर्ख हैं अगर यह समझते हैं कि मैं जेराल्डीन की छोटी-सी भूमिका में अभिनय करूँगी। क्या यह लोग यह

समझते हैं कि मैं केवल भद्दे पार्ट ही अदा कर सकती हूँ—मैं अच्छी औरतों की भूमिका भी उतनी सफलता से कर सकती हूँ।'

और नाना ने काउन्ट को कमरे में टहल कर दिखाया कि वह उच्च-वर्ग की महिलाओं की तरह चल-फिर सकती है—हाव-भाव दिखा सकती है। अचम्भे में काउन्ट यह सब देख रहे थे; उनके दिल पर तो तकलीफ के पहाड़ टूटे पड़ रहे थे और यह नाना उनके साथ इस तरह से मज़ाक कर रही थी। काउन्ट की आँखों में आँसू भर आये।

'क्यों मैं कर सकती हूँ न, यह भूमिका ?' नाना ने काउन्ट से मुस्कुराते हुए पूछा।

'हाँ-हाँ बिल्कुल !' काउन्ट का गला रुँध गया था।

'उच्च वर्ग की महिला की भूमिका में अभिनय करना हमेशा से मेरी आकांक्षा रही है और मेरे अन्दर उस भूमिका की सब विशेषताएँ हैं। मुझे पार्ट करना बिल्कुल स्वाभाविक लगता है। वह भूमिका मुझे मिलनी ही चाहिए—समझे—अवश्य ही मिलनी चाहिए।' नाना की आवाज़ धीरे-धीरे कड़ी हो गयी थी। वह अपनी इस बेकार की इच्छा को—वहम को पूरा करने के लिए बहुत अधीर हो उठी थी। मफेट उसके इन्कार करने के गम से अब तक व्यथित और खामोश थे।

'तुम्हें वह भूमिका मुझे दिलवानी ही पड़ेगी, अवश्य !

मफेट नाना की इस माँग से परेशान हो गये थे। 'लेकिन यह तो असम्भव है ! तुम तो जानती ही हो कि मेरा इस थियेटर कम्पनी पर कोई अधिकार नहीं।'

नाना ने कंधे हिलाकर काउन्ट की बात बीच में ही काट दी, 'तुम्हें केवल यही करना है कि नीचे जाकर कह दो कि तुम चाहते हो कि मुख्य भूमिका मुझे ही मिले। तुम समझते क्यों नहीं ? बार्दिनेव को धन की सख्त ज़रूरत है ! तुम उसे कुछ उधार दे सकते हो—तुम तो यों ही काफ़ी धन बरबाद करना चाहते हो।'

काउन्ट ने फिर कुछ बहाना किया। उस पर नाना एकदम बिगड़ उठी।

'मैं समझ गई कि तुम ऐसा क्यों नहीं कर रहे हो। तुम रोज से डरते हो—उसे नाराज नहीं करना चाहते। मेरे पास आने के पहले ही तुम्हें रोज का ख्याल बिल्कुल छोड़ देना चाहिए था।'

काउन्ट ने परेशान होकर कहा—'मैं रोज की बिल्कुल परवाह नहीं करता—मैं फौरन उससे सम्बन्ध तोड़ रहा हूँ। लेकिन.....'

काउन्ट के ऐसा कहने पर नाना काफी सन्तुष्ट दिखायी दी। 'तो फिर क्या बाधा है! बार्दिनेव ही तो यहाँ का मालिक है और बार्दिनेव को धन की आवश्यकता है। हाँ! बार्दिनेव के अतिरिक्त फॉशेरी का भी इस नाटक में हाथ है।' नाना कहते-कहते कुछ रुकी। फॉशेरी काउन्टेस का प्रेमी था और वह चाहती थी कि काउन्ट उससे भी नाना को उस भूमिका में अभिनय करने देने की प्रार्थना करें। 'फॉशेरी भी इतना बुरा आदमी तो नहीं। मेरे लिए उससे भी कह देना!'

काउन्ट ने लाचारी और दृढ़ता से कहा—'नहीं-नहीं मैं ऐसा कभी नहीं कर सकूँगा।'

नाना के जी में आया कि कह दे कि फॉशेरी काउन्ट की बात तो नहीं टालेगा लेकिन वह जानती थी कि ऐसा कहना बहुत बुरा होगा और इससे काउन्ट का अपमान होगा। नाना केवल मुस्कुरायी और उस मुस्कुराहट ने मानो वही शब्द मौन रूप में काउन्ट से कह दिये। काउन्ट ने उसकी तरफ एक बार देख कर आँखें नीची कर लीं।

'तुम तो मेरे लिए कुछ भी नहीं करना चाहते!'

'यह मैं नहीं कर सकूँगा!' काउन्ट की आवाज में भयंकर पीड़ा थी। 'तुम और जो कुछ कहो मैं कर दूँ लेकिन केवल यह नहीं कर सकूँगा—प्रिये—मुझे क्षमा कर दो।'

नाना ने फिर कोई बात नहीं की। उसने चाकर अपने हाथों से

ट का सिर ऊपर उठा दिया और उनके होठों पर अपने होंठ एक और मधुर चुम्बन में रख दिये। काउन्ट का सारा शरीर उत्तेजना काँप गया—उनकी आँखें बन्द हो गयीं और वह उस मादकता बिल्कुल खो गये। नाना ने कन्धे पकड़ कर उन्हें कुरसी से उठा या।

'अब जाओ!'

काउन्ट उठकर दरवाजे की तरफ बढ़ने ही वाले थे कि उसने फिर अपनी बाहों में कस लिया और उसकी तरफ बड़ी मधुरता से देखते हुए बोली—'वह कोठी कहाँ है?' नाना बच्चों की तरह हँस रही थी।

'एवेन्यू द विलीयर्स में!'

'और वहाँ घोड़े-गाड़ियाँ हैं?'

'हाँ!'

'और हीरे-जवाहरात-जेवर और कपड़े?'

'हाँ—सब कुछ!'

'ओह प्यारे। तुम कितने अच्छे हो! मैं इसलिए नाराज थी अभी, क्योंकि मुझे ईर्ष्या हो रही थी; लेकिन इस बार मैं वायदा करती हूँ वि केवल तुम्हारी ही होकर रहूँगी। तुम ही मुझे सब कुछ दे दोगे तो मु किसी दूसरे की क्या आवश्यकता!' और यह कहते हुए नाना काउन्ट को चुम्बनों की नशीली बाढ़ में बिल्कुल डुबा दिया।

उसी नशे में काउन्ट कमरे से बाहर निकल कर सीढ़ियों से उतरने लगे। वह जाकर क्या कहेंगे? उनकी समझ में कुछ भी आ रहा था!

स्टेज पर कुछ लोगों में लड़ाई हो रही थी। काउन्ट उसी हा वहाँ पहुँच गए। वह स्टेज के पीछे की छाया में छिपे रहे—उन्हें

लग रही थी कि एकदम स्टेज पर कैसे पहुँच जायँ; लेकिन बार्दिनेव ने उन्हें देख लिया।

'देखिए! यह लोग कितना शोर मचा रहे हैं—यह मुझे कितना परेशान करते हैं। लेकिन आप मुझे क्षमा करें—इन लोगों ने मुझे बहुत नाराज कर दिया है।' बार्दिनेव चुप हो गया। मफेट यह सोच रहे थे कि कैसे यह बात शुरू करें लेकिन जब कुछ देर उनकी समझ में कुछ भी नहीं आया तो एकदम कह पड़े।

'नाना नाटक की मुख्य भूमिका करना चाहती है।' बार्दिनेव आश्चर्य में उत्तेजित होकर एकदम बोल पड़ा—'लेकिन यह तो असम्भव है!' लेकिन काउन्ट के व्यग्र चेहरे को देख कर चुप होकर सम्हल गया।

काफी देर तक दोनों चुप रहे। बार्दिनेव स्वयं इस बात की जरा-सी भी परवाह नहीं करता था कि नाना कौन-सी भूमिका करती है। नाना डचेस की भूमिका में उचित न लगेगी लेकिन नाना की बात मान लेने से उसका काउन्ट पर गहरा प्रभाव तो पड़ ही जायगा। उसने अपने मन में कुछ निश्चय करके पुकारा।

'फाशेरी!'

काउन्ट ने बार्दिनेव को रोकने का संकेत किया, लेकिन फाशेरी ने बार्दिनेव की आवाज नहीं सुनी थी!' 'फाशेरी!' बार्दिनेव ने फिर आवाज दी। फाशेरी और फोन्तां में कुछ बहस हो रही थी, उसे छोड़ कर फाशेरी फौरन ही उन लोगों की तरफ बढ़ आया। बार्दिनेव उन दोनों को पीछे वाले कमरे में ले गया ताकि और कोई उन लोगों की बातें न सुन ले। कमरे में पहुँच कर काउन्ट एक तरफ हट गये ताकि बार्दिनेव और फाशेरी आपस में ही यह बात तय कर लें।

'क्यों क्या बात है? फाशेरी की समझ में यह रहस्य बिल्कुल नहीं आ रहा था।

'बात यह है कि हम लोगों ने अभी यह विचार किया है—देखो

बिना सोचे-समझे मत बोल बैठना—कि नाना अगर डचेस की मुख्य भूमिका में हो तो कैसा रहे ?' वार्दिनेव ने नीतिपूर्ण ढङ्ग से बात उठायी ।

इस अजीब-से प्रस्ताव से फॉशेरी कुछ देर के लिए बिल्कुल स्तम्भित रह गया ।

'अरे हटो ! मजाक क्यों कर रहे हो ? लोग क्या कहेंगे—नाटक चौपट हो जायगा—दर्शक हँसेंगे ।'

'हाँ ! हम यही तो चाहते हैं कि लोग हँसें—इस तरह वह भूमिका व्यंगात्मक हो जायगी । जरा इस बात पर विचार करो ! काउन्ट तो इस प्रस्ताव से बेहद खुश हुए थे ।'

काउन्ट ने अपने भावों को छिपाने के लिए किसी टूटी हुई चीज को बहुत गौर से देखना शुरू कर दिया था ।

वह बोले—'हाँ ! हाँ ! प्रस्ताव तो बहुत अच्छा है ।'

फॉशेरी बेसब्री से काउन्ट की तरफ मुड़ा । काउन्ट का उसके नाटक से क्या सम्बन्ध, और उसने दृढ़ आवाज में कहा—'नहीं, मैं इस बात की अनुमति कभी नहीं दे सकता । उस भूमिका के लिए नाना बिल्कुल बेकार रहेगी ।'

'मेरे विचार से तुम उसके साथ अन्याय कर रहे हो ! अभी-अभी मैंने देखा है कि वह प्रतिष्ठित महिला की इस भूमिका में भी बहुत सफल हो सकती है । ऊपर के कमरों में उसने मुझे थोड़ा अभिनय करके दिखाया भी था ।' काउन्ट ने हिम्मत करके कहा । और इतना ही नहीं, उन्होंने नाना के वही हाव-भाव इन दोनों को खुद करके भी दिखाये । नाना की इच्छा पूरी करने के लिए वह पागल थे । फॉशेरी ने कुछ देर काउन्ट की तरफ ताज्जुब से देखा—गम्भीर आदमी भी कितना गिर सकते हैं एक औरत के इशारों पर । वह सब कुछ समझ गया था और अब उतना क्रोधित नहीं था । काउन्ट को लगा कि फॉशेरी

उनकी तरफ गौर से देख रहा है—उस नजर में घृणा और तरस के भाव मिले हुए थे। काउन्ट शर्मा कर एकदम रुक गए।

'खैर। हो सकता है, लेकिन वह भूमिका तो रोज को दे दी गयी है—उससे छीनना असम्भव है।' फौशिरी ने एहसान जमाते हुए कहा।

'इसकी तुम चिन्ता मत करो! इस बात को मैं सम्हाल लूँगा!' बार्दिनेव ने उत्तर दिया।

लेकिन यह देख कर कि दोनों उसके खिलाफ हैं और बार्दिनेव अवश्य किसी छिपे हुए लाभ के कारण यह कर रहा है, फौशिरी ने फिर बाधा डाली और दृढ़ता से मना कर दिया।

फौशिरी के इतना कहने के बाद एकदम खामोशी हो गयी। बार्दिनेव यह सोच कर अलग हो गया कि अब इन दोनों को ही आपस में यह निबटाने दो। काउन्ट नीचे फर्श पर निगाह जमाये हुए थे लेकिन बार्दिनेव के चले जाने के बाद काउन्ट ने निगाह ऊपर उठायी और काँपती हुई, कमजोर आवाज में कहा—'मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ—मैं हमेशा तुम्हारा एहसान मानूँगा।'

'नहीं—मैं ऐसा कभी नहीं होने दूँगा!' फौशिरी ने उसी दृढ़ता से उत्तर दिया। 'मेरा ड्रामा चौपट हो जायगा।'

मफेट की आवाज और कड़ी हो गयी—'मैं प्रार्थना करता हूँ—मैं चाहता हूँ!'

काउन्ट ने फौशिरी की तरफ घूर कर देखा। उन स्याह आँखों में फौशिरी को कुछ ऐसा दिखायी दिया, कि उनकी बात वह एकदम मान गया।

'खैर! जो तुम चाहो करो—मुझे कोई चिन्ता नहीं! लेकिन तुम बहुत अन्याय कर रहे हो और तुम देखना ......'

लेकिन घबड़ाहट, झिझक और क्रोध के कारण वह वाक्य खत्म

नहीं कर पाया। फाशेरी धीरे-धीरे फर्श पर पैर पटकने लगा था और काउन्ट एक अंडा रखने के टूटे हुए प्याले को गौर से देख रहे थे। वार्दिनेव ने नजदीक आ कर समझाते हुए कहा।

'यह अंडा रखने का प्याला है!'

'हाँ-हाँ—अंडा रखने का प्याला तो है ही!' काउन्ट ने खोये-खोये स्वर में उत्तर दिया।

जब मिनॉन को यह मालूम पड़ा कि उसकी पत्नी की भूमिका नाना को दी जा रही है तो वह बहुत नाराज हो गया—उसने धमकियाँ दीं, ताने दिये, बुरा-भला कहा। जब बहस बहुत बढ़ गई तो मिनॉन ने कहा कि भूमिका छोड़ने की केवल एक शर्त यह है कि रोज को मुआवजे में दस हजार फ्रैन्क दिये जायँ। मिनॉन बहुत चालाक आदमी था। वह समझ गया था कि यह सब काउन्ट के जोर से हो रहा है इसलिए अगर वह अपनी माँग पर अड़ जायगा तो इतनी बड़ी रकम अवश्य मिल जायगी।

लेकिन वार्दिनेव मिनॉन की इस बात पर नाराज हो गया। कोई लूट है जो इतनी बड़ी रकम वे लोग माँग रहे हैं। लेकिन काउन्ट ने उसे इशारा किया कि वह फौरन यह शर्त्त मन्जूर कर ले। नाराज होते—बड़-बड़ाते उसने अन्त में वह शर्त्त मान ली—'मैं तैयार हूँ—तुम लोगों से छुटकारा तो मिल जायगा।' वार्दिनेव को इतना कष्ट हो रहा था कि जैसे दस हजार फ्रैंक उसे अपनी ही जेब से देने पड़ रहे हैं।

'कल हम इस समझौते पर दस्तखत कर देंगे। रुपया तैयार रखना।' यह कह कर मिनॉन रोज के पीछे बाहर निकला जो अभी-अभी बहुत नाराज होकर वहाँ से चली गयी थी। रोज तो पागल है—इतना शान-दार सौदा तो वाकई में कमाल है। जब मफेट रोज को छोड़ ही रहा था तो चलते-चलते उससे इतनी मोटी रकम दुह लेना क्या बुद्धिमानी नहीं

थी। लेबॉरदेत ने जब नाना को यह खबर दी तो वह विजयोल्लास में नाच उठी।

और महीने भर बाद जब 'लिटिल टवेस' रंग-मंच पर खेला गया तो नाना ने उसमें बहुत ही बुरा अभिनय किया। प्रतिष्ठित महिला की भूमिका में वह इतनी अजीब और बेतुकी लग रही थी कि लोगों ने उसका खूब मजाक बनाया और जब-जब वह किसी दृश्य में आयी तो सारा हाल कहकहों से गूँज उठा।

उसी रात को, जब वह अपने सोने के कमरे में काउन्ट के साथ अकेली थी, वह अपार क्रोध में दाँत पीस कर बोली—'आज यह लोग मुझ पर ईर्ष्या में हँस रहे थे—मेरा मजाक उड़ा रहे थे—मैं सारे पैरिस को यह दिखा दूँगी कि मैं कितनी शानदार महिला बन सकती हूँ।'

नाना की आँखों में चमक थी और आवाज में विश्वास की दृढ़ता।

## १०

और नाना वास्तव में पैरिस की सबसे शौकीन और शानदार औरत हो भी गयी—बाजारों की देवी—जिसके पास पैरिस के सबसे ज्यादे धनी और प्रतिष्ठित लोग ही आते थे। पुरुष वर्ग की कामुकता और पतन के कारण उसकी शान-शौकत और प्रतिष्ठा का महल धीरे-धीरे और ज्यादा ऊँचा और बड़ा होता गया। एक नये और अद्भुत जीवन की शुरुआत हो गयी थी और नाना अचानक धन और प्रतिष्ठा पर राज्य करने लगी थी। दूकानों के शो केसों में उसकी हजारों तस्वीरें लगी होती थीं और अखबारों में उसका नाम अक्सर छपा करता था। जब वह अपनी गाड़ी में बैठ कर पैरिस की शानदार सड़कों पर निकलती थी तो सारी भीड़ उसकी तरफ इस भाव से देखती थी कि मानों उनकी मलिका उस तरफ से निकली जा रही हो। और कमाल यह था कि यह बड़ी-सी

टुटपुटी-सी छोकरी जो रंगमंच पर प्रतिष्ठित महिला की भूमिका में इतनी भद्दी लगी थी और दर्शकों ने जिसका इतना मजाक उड़ाया था वही आज वास्तविक जीवन में—उसी भूमिका में लोगों के दिलों पर राज्य कर रही थी। वह तमाम पेरिस को किसी सर्वशक्तिमान रानी की तरह अपने कदमों के नीचे रौंद रही थी। बड़े-बड़े घरों की स्त्रियां उसके कपड़ों की और शृङ्गार की नकल किया करती थीं।

नाना की शानदार कोठी एवेन्यू द विलीयर्स में बनी हुई थी। वह फ्रान्स की पुरानी साज-सज्जा से पूरी तरह सुशोभित था—मेज, कुर्सियाँ, पलंग, पर्दे, कालीन और बड़े-बड़े लैम्प और फानूस—सब बहुत ही शानदार बेश कीमती थे। और फिर नाना ने सारी कोठी को अपनी तरफ से और भी अधिक सजवाया था, ऐश के तमाम साधन जुटा लिये थे उसने। उसके रोम-रोम में ऐयाशी स्वाभाविक रूप से ही समायी हुई थी।

सामने की चौड़ी सीढ़ियों पर शानदार और मुलायम कालीन बिछे हुए थे और बरामदों में तरह-तरह के फूलों की भीनी-भीनी सुगन्ध हमेशा आया करती थी। सारी सीढ़ी पर हल्की पीली और गुलाबी रोशनी बिखरी रहती थी। सीढ़ियों के ठीक नीचे काले हब्शी का एक लकड़ी का बुत था जिसके हाथों में कार्ड रखने के लिए चाँदी की खूबसूरत तश्तरी रखी थी सफेद संगमरमर की औरतों के चार नंगे बुत थे जिनके हाथों में नाजु और खूबसूरत लैम्प रखे हुए थे। बीच-बीच में चौड़ी सीढ़ियों पर फार के कालीनों से मढ़ी हुई कुर्सियाँ पड़ी हुई थीं और चीनी मिट्टी औ पीतल के बड़े प्यालों में हमेशा फूल भरे रहते थे। सीढ़ियों पर चल की आहट मोटे-मोटे कालीनों में खो जाया करती थी।

अपना विशाल ड्राइंग रूम नाना कभी-कभी ही खुलवाती थी उसके यहाँ बहुत ही प्रतिष्ठित विदेशी या राज दरबार के लोग आते यह कमरा भी शानदार सजावट का नमूना था। केवल यह कमरा क्या, पूरी कोठी राज महलों की तरह सजी हुई थी। हाँ—नाना के द

उस सजावट में वह सजीवता भी आ गयी थी जो उसके शरीर के हर परिमाणु में थी और जो राज महलों में कभी भी नहीं पायी जा सकती थी। उन बड़े-बड़े शानदार कमरों में लगभग हर देश के कला के उत्कृष्ट नमूने मौजूद थे—इटली, स्पेन, पुर्तगाल, चीन, जापान, फारस और पूर्वी देशों का तरह-तरह का ऐशो-इशरत का हर सामान नाना के इस विशाल और भव्य भवन में पाया जा सकता था।

नाना ने उस नाटक के बाद रंगमंच दोबारा छोड़ दिया था। उसके दिमाग में धन बर्बाद करने की ताकतवर धुन समा गयी थी; और वह उन लोगों से घृणा करने लगी थी जो उस पर अपना धन लुटाने को तैयार रहते थे। अपने प्रेमियों को बरबाद करने और उनका नाश करने में उसे एक विशेष गर्व और खुशी मालूम होने लगी थी। उसके इस शानदार घर का वार्षिक खर्च तीन लाख फ्रैन्क था। उसके अस्तबल में आठ घोड़े थे और पाँच गाड़ियाँ थीं और उनमें एक ऐसी भी थी जिस पर चाँदी मढ़ी हुई थी।

काउन्ट का भी समय उसने निश्चित कर दिया था और इस प्रकार के प्रबन्ध से काउन्ट खुश और सन्तुष्ट थे। नाना ने उनके दिन और समय नियत कर दिये थे। काउन्ट उपहारों के अलावा, उसे हर महीने बारह हजार फ्रैन्क देते थे और शर्त यह थी कि नाना बेवफाई न करे। नाना ने भी कहा था कि उन्हें उसका [illegible] सम्मान करना होगा। अपने मित्रों को रोज बुलाने और उनका स्वागत करने की उसे पूर्ण स्वतन्त्रता थी—काउन्ट केवल निश्चित समय पर ही वहाँ आ सकते थे। नाना ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि उन्हें उस पर पूर्ण विश्वास करना पड़ेगा।

नाना और काउन्ट के [illegible] । जब काउन्ट कहीं से परेशान या दुखी होकर [illegible] उनका दिल बहला देती थी। [illegible]

म्पत्ति आदि में भी दिलचस्पी लेने लगी। वह काउन्ट को हर मामले में अच्छी और लाभदायक सलाह दिया करती थी। हाँ! एक दिन वह जोर से बिगड़ उठी थी। काउन्ट ने आकर उससे कहा था कि डगेनॅट उनकी लड़की एस्टोल से विवाह करना चाहता है। डगेनॅट ने इस कारण नाना को बदनाम करना शुरू कर दिया था कि वह अपने भावी ससुर को नाना के चंगुल से बचाना चाहता था। नाना ने गुस्से में डगेनॅट की बहुत बुराई की—वह आवारा है, बदमाश है, दुश्चरित्र है और जब काउन्ट पर इन बातों का कोई ज्यादा असर नहीं पड़ा तो उसने बताया कि कभी वह उसका प्रेमी भी रह चुका था। काउन्ट यह सुनकर चुप हो गये थे।

एक दिन सुबह, जबकि काउन्ट पलंग से उठे भी नहीं थे, जो एक युवक को नाना के शृङ्गार कक्ष में ले आयी जहाँ वह रात के कपड़े बदल रही थी।

'ओह! जार्ज! तुम!' नाना ने आश्चर्य से कहा।

नाना ने अभी पूरी तरह कपड़े पहिने भी नहीं थे और इतने दिनों बाद उसे देख कर—उसके वक्ष का अधखुला उभार और उसके सुनहरे बालों को बेतरतीबी से खुला हुआ देख कर—जार्ज ने एकदम उसको आलिंगन में बाँध लिया और उसके चेहरे पर हजारों चुम्बन बरसा दिये। नाना बड़ी मुश्किल से अपने आपको छुटा पायी।

'हटो-हटो-जार्ज! यह क्या कर रहे हो—अभी वह अन्दर है। जो क्या तुम भी पागल हो गयी हो कि इन्हें यहाँ ले आयीं?'

जो जार्ज को लेकर नीचे चली गयी। थोड़ी देर के बाद नाना भी नीचे उतर कर गयी। जार्ज और जो दोनों उसकी प्रतीक्षा खाने वाले कमरे में कर रहे थे। दोबारा नाना को देखने से जार्ज को इतनी खुशी हुई थी कि उसकी खूबसूरत आँखों में आँसू भर आये थे। उसने बताय कि उसकी माँ ने इतने दिनों बाद उसे पैरिस लौटने की आज्ञा दी थ और पैरिस के स्टेशन पर गाड़ी से उतरते ही सीधा वह नाना को देख

आया था। उसने कहा कि अब यह हमेशा साथ-साथ रहेंगे, जैसा वह उस जमाने में 'लॉमिनॉरा' की सुहानी रातों में सोचा करते थे। नाना की समझ में न आ रहा था कि जार्ज की इन विश्वास भरे हुए प्यार की बातों का क्या उत्तर दे।

'जार्ज! मैं तुमसे प्रेम करती हूँ लेकिन....लेकिन अब मैं स्वतन्त्र नहीं हूँ।'

अब तक नाना से मिलने के आवेश में जार्ज ने मकान में चारों तरफ आँखें नहीं दौड़ायी थीं लेकिन यह सुनने पर उसने चारों तरफ निगाह घुमायी। वास्तव में बहुत परिवर्तन हो गया था। उसने उस विशाल और सुसज्जित खाने के कमरे को देखा जिसमें बहुमूल्य कालीन और पर्दे पड़े थे, चाँदी के बर्तन चमचमा रहे थे और जिसकी सुनहरी छत सुबह की रोशनी में चमक रही थी। और यह सब देखकर उसका दिल रो पड़ा; उसने पीड़ित आवाज में हल्के से कहा—'हाँ! वह तो देख ही रहा हूँ।'

नाना ने उसे समझाया कि भविष्य में वह कभी सुबह के समय न आया करे। शाम को चार और छः के बीच में आ सकता है। जार्ज ने उसकी तरफ बड़े करुण भाव से देखा; नाना को उस पर बहुत दया आयी और उसने जार्ज का माथा चूम लिया। उसने वायदा किया कि जार्ज को खुश करने के लिए उससे जितना भी सम्भव होगा वह करेगी।

लेकिन सत्य तो यह था कि नाना के हृदय में अब जार्ज के प्रति वह भाव बिलकुल नहीं थे। जार्ज को वह एक अच्छा—भला युवक मानती थी। बस, इससे ज्यादा कुछ भी नहीं। लेकिन फिर भी जब जार्ज रोज चार बजे आ जाता था और इतना दुखी दिखायी पड़ता था तो नाना कभी-कभी उसकी मान भी लेती थी। धीरे-धीरे जार्ज वहाँ इतना ज्यादा आने लगा कि अक्सर तो वह मकान से जाता ही नहीं था और नाना के छोटे से कुत्ते—बिजू—की तरह उसके आस-पास ही मँडराया करता था।

लेकिन धीरे-धीरे जार्ज की माँ—मदाम ह्यूगाँ को पता लग गया कि ...र्ज फिर नाना के चंगुल में फँस गया है। जार्ज बहुत डर गया था— ... कहता था अब वह उसके बड़े भाई लेफ्टिनेंट फिलिप को उसे वहाँ से ...पस बुलाने के लिए अवश्य भेजेंगी। जार्ज अपने बड़े भाई से बहुत ...रता था और उसने नाना से कहा था कि फिलिप बहुत लम्बा तगड़ा ...आदमी है। वह किसी विघ्न-बाधा की परवाह नहीं करता और जो चाहता ...है, करता है। नाना ने गर्व से उसे यह उत्तर दिया था—'देखें वह यहाँ आकर क्या करते हैं? लेफ्टिनेंट होंगे तो मुझे क्या डर—घर के बाहर निकलवा दूँगी।'

एक दिन जब जार्ज और नाना अकेले बैठे थे, नाना के नौकर फ्रान्सिस ने आकर कहा—'लेफ्टिनेंट फिलिप ह्यूगाँ आये हैं—मदाम क्या आप उनसे मिलना पसन्द करेंगी?'

जार्ज डर के मारे काँप गया और उसने नाना से कहा कि नौकर से यह कहलवा दे कि अभी उसे फुर्सत नहीं है। लेकिन नाना नाराज होती हुई उठी—'ऐसा मैं क्यों कहवा दूँ—क्या मैं उनसे डरती हूँ। फ्रान्सिस, उन्हें पन्द्रह मिनट इन्तजार करने दो, उसके बाद ड्राइंग रूम में ले आना।'

फ्रान्सिस चला गया। नाना कमरे में उत्तेजना में टहलती रही ... 'पन्द्रह मिनट इन्तजार करेंगे तो दिमाग सीधा हो जायगा और फि... ड्राइंग-रूम की शान देखेंगे तो पता लग जायगा कि किसके यहाँ आ... हैं। मेरे साथ ऐसे लोग मजाक नहीं कर सकते। दिमाग सीधा ... जायगा।

जब पन्द्रह मिनट खत्म हो गये तो नाना ने जार्ज से कहा कि जाकर सोने के कमरे में छिप जाय। जार्ज ने चलते-चलते कहा—'ले... ख्याल रखना—वह मेरे भाई हैं!'

'अगर वह सभ्यता से बात करेंगे तो मैं भी सभ्यता से व्यवहार करूँगी—तुम डरो मत !' नाना ने उत्तर दिया।

जार्ज के छिप जाने के बाद फ्रान्सिस फिलिप को कमरे में ले आया लेकिन नाना के आश्वासन के बावजूद भी जार्ज का दिल काँप रहा था। वह डर रहा था कि अवश्य उसके भाई और नाना में झगड़ा हो जायगा। उसने बन्द किवाड़ों के पास खड़े होकर सुनने की कोशिश की लेकिन उसे कोई विशेष बात कोई नहीं सुनायी दी। हाँ, एक बार ऐसा लगा कि जैसे नाना रो रही है। क्या फिलिप ने नाना के साथ बुरा बर्ताव किया ? जार्ज के जी में आया कि किवाड़ खोल कर अपने भाई पर झपट पड़े लेकिन तभी जो किसी काम से कमरे में आयी और जार्ज शर्मा कर किवाड़ के पास से हट गया। जो ने उसे बहुत चिन्तित देख कर कहा—'आप फिक्र न करें मदाम सब ठीक कर लेंगी।' यह कहकर जो मुस्कुराती हुई कमरे के बाहर चली गयी।

जार्ज सोच रहा था कि आखिर यह लोग इतनी देर तक क्या बात कर रहे हैं। परेशानी की वजह से उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। कुछ देर में जब नाना कमरे से निकलकर आयी तो जार्ज ने उससे डरते हुए पूछा—'क्यों ! क्या हुआ !'

नाना ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया—'हुआ क्या ! कुछ भी नहीं—सब तय हो गया है। इस घर को देख कर वह समझ गये कि मैं कौन हूँ और फिर उन्हें तुम्हारे यहाँ आने में कोई आपत्ति नहीं रही। मैंने उन्हें यहाँ दोबारा आने के लिए आमंत्रित किया है।

जार्ज आश्चर्यचकित था इस बात पर कि उसके भाई यहाँ दोबारा आयेंगे लेकिन दिल में वह बहुत प्रसन्न था कि सब कुछ ठीक हो गया। नाना से न मिलने की सम्भावना से ज्यादा तो वह मौत पसन्द करता।

लेकिन फिलिप को—जिसका वह पिता के समान आदर करता था—

नाना जैसी औरत के साथ आजादी से हँसते-बोलते देख कर जार्ज के दिल में अजीब-अजीब भावनाएँ उठा करती थीं।

एक दिन तीसरे पहर जब नाना जार्ज और फिलिप से बैठी हुई बातें कर रही थी, काउन्ट उससे मिलने चले आये। यह उनके आने का समय नहीं था इसलिए जब उन्हें मालूम पड़ा कि नाना अपने कुछ मित्रों के साथ बात कर रही है तो वह बेचारे चुपचाप लौट गये। रात को जब काउन्ट दोबारा आये तो नाना उनसे बहुत नाराज़ थी। बहुत रूखे आवाज़ में उसने कहा—

'आपको मैंने ऐसा कोई अवसर तो दिया नहीं था कि आप मेरी इस तरह बेइज्जती करें। जब मेरे पास लोग रहा करें तो आप वैसे ही आया करें जैसे और सब लोग यहाँ आते हैं।'

काउन्ट स्तम्भित रह गये। 'लेकिन सुनो तो.........' और बहुत नाराज होने के बाद नाना ने उन्हें क्षमा कर दिया। दिल ही दिल में काउन्ट को इन छोटे-छोटे झगड़ों में बहुत मजा आता था। इस तरह उनके दिल में नाना के लिए और भी ज्यादा इच्छा जाग उठती थी—और ज्यादा प्यार उमड़ पड़ता था।

लेकिन ऐश और सुख के इस जीवन से भी नाना प्रसन्न नहीं थी—बुरी तरह ऊब गयी थी वह। दिन—रात—हर वक्त वहाँ आदमी रहते थे और धन भी नाना के पास इतना ज्यादा था कि इधर-उधर मामूली कोनों में बिखरा पड़ा रहता था। लेकिन इस सब के बीच एक ऐसा सूनापन था जिससे नाना ऊब चली थी। उसका हर घंटा—हर क्षण बिल्कुल बेकार बीतता था और बार-बार वही सब पुरानी बातें होती रहती थीं। अपने इस जीवन में उसे कोई रस—कोई खुशी नहीं मिलती थी। वह किसी चीज की परवाह भी नहीं करती थी। केवल अपने सौन्दर्य और शरीर के आकर्षण को कायम रखने की ही चिन्ता रहती थी उसे। इतवार के दिन यह मदाम लेरॉ के यहाँ अपने बेटे लुई को देखने जाती

न जाने कितने और लोगों के प्यार की बासी गन्ध में उनका दम घुटने लगता था क्योंकि नाना अंधेरे के समन्दर की तरह थी जो लगातार आदमियों को निगले जा रही थी।

जार्ज के सीने से निकले हुए खून का वह धब्बा अब तक दिखायी पड़ता था। हालाँकि अनगिनत पैर उस पर से होकर निकल चुके थे फिर भी वह अब तक मिटा नहीं था। जो इस धब्बे को देखकर हमेशा नाराज होती थी, 'यहाँ इतने लोग आते रहते हैं फिर भी यह उनके जूतों की रगड़ से खत्म क्यों नहीं होता!'

जार्ज अपनी माँ के साथ 'लॉ फांदे' चला गया था और वहाँ स्वास्थ्योपार्जन कर रहा था—यह नाना को मालूम था। वह बोली—

'अभी तो देर लगेगी इसे मिटने में। जूतों की रगड़ से इसका रंग फीका पड़ना तो शुरू हो ही गया है!'

और वास्तव में यह तो था कि यहाँ आने वाला हर आदमी फूकॉरमां, स्टीनर, लॉ फैलॉप, फॉशेरी और न जाने कितने और—अपने साथ उस धब्बे का कुछ भाग अवश्य ले गये थे। और मफेट, जो 'जो' से भी ज्यादा उस निशान के कारण चिन्तित थे, उस धब्बे के सुर्ख धुन्धलेपन में उन तमाम आदमियों को देख रहे थे जो वहाँ आये थे और बरबाद होकर चले गये थे। यह लोग धब्बे से डरते थे और उस पर से होकर जब भी गुजरते थे तो उन्हें लगता था मानो किसी जानदार प्राणी को वह पैरों से रौंद रहे हैं।

उस कमरे के अन्दर ही काउन्ट पर एक ऐसा नशा छा जाता था जिसके नीचे वह बिल्कुल दब जाते थे। उनके व्यक्तित्व में इतनी शक्ति [न]हीं रह गयी थी कि वह उस नशे से जरा भी उभर पाते—[व]ह नशा एक दलदल की तरह था जिसमें काउन्ट गहरे—और गहरे धँसते ही जा रहे थे। उस कमरे के बाहर निकल कर—सड़कों पर कभी-कभी वह शर्म और पीड़ा से रो पड़ते थे, उस निरादर से उनका

दिल टुकड़े-टुकड़े हो जाता था और वह यह निश्चय कर लेते थे कि अब नाना के यहाँ लौट कर कभी नहीं जायँगे। लेकिन जैसे ही वह कमरे में घुसते थे वह नशा दूनी ताकत से उन पर छा जाती थी। उनका निश्चय—उनके वह इरादे कमरे की गर्मी में पिघल जाते थे; उनके शरीर के अन्दर मांसलता की, विलास की, वासना की गहरी सुगन्ध समा जाती थी और उस उत्तेजना के प्रभाव में वह यह चाहता था कि उस सुगन्ध में उस नशे में डूब कर मर ही जाय। काउन्ट पहले एक धर्म-परायण आदमी थे—गिरजों और मूर्त्तियों के सामने घुटने टेक कर प्रार्थना करने में, उन्हें परम आनन्द मिलता था। और नाना के शरीर की विलासपूर्ण मांसलता के आगे भी उनके अन्दर वही भाव जाग पड़ते थे। उसके सामने भी उनका सिर श्रद्धा से झुक जाता था। और नाना उन पर क्रोध की देवी की तरह राज्य करती थी—उन्हें डाँटती थी, डराती थी, उनकी बेइज्जती करती थी और कभी-कभी थोड़ा-सा प्यार—थोड़ा-सा सुख भी दे देती थी जो उन्हें शान्ति के बजाय तड़पा देता था। हर बार वह अपनी उत्तेजना को शान्त करने के लिए गिड़गिड़ाते थे, क्षमा माँगते थे, जलील होते थे और हर बार उनकी आँखों के सामने नरक के वीभत्स दृश्य नाच उठते थे—हमेशा उनके दिल में यह डर भरा रहता था कि न जाने कितनी कड़ी सजा मिलेगी उन्हें अपने गु[illegible] की! उनके शरीर की उत्तेजना और वासना और उनकी आत्म[illegible] आवश्यकताएँ मिल कर उनके व्यक्तित्व की गहराइयों में से एक [illegible] की तरह फूट निकलती थीं। वासना और विश्वास की शक्तियों को [illegible] आत्मसमर्पण कर दिया था। चेतना के हर विद्रोह के बावजूद [illegible] नाना के कमरे में आकर पागल और संज्ञाहीन हो जाते थे।

नाना के पागलपन का तूफान काउन्ट को हर प्रकार से जली[illegible] और भी तेज हो जाता था। उसके अन्दर स्वाभाविक रूप से [illegible] को बरबाद करने की ताकत और हविस थी। वह न केवल [illegible]

दे रही हूँ कि इस बात पर मुझे हँसी आ रही है कि कोई मुझसे ही धन माँगे। लेकिन तुम्हारी वह उम्र अब निकल गयी है जब मैं तुम्हें पैठाल कर खिलाती। तुम जाकर अब कोई दूसरा काम ढूँढो।'

हेक्टर लॉ फैलोप भी नाना की वासना के फौलादी पंजों में दब कर मरना चाहता था—वह इसे इज्जत की बात समझता था कि नाना उसे बरबाद करे। दो महीने में तो उसका नाम हो जायगा। नाना का प्रेमी होना एक 'फैशन' हो गया था विलास-प्रिय पेरिस के धनी लोगों में। और दो महीने भी नहीं—केवल छः हफ्ते लगे लॉ फैलोप का सर्वनाश होने में। उसकी सारी सम्पत्ति जागीरों, खेतों, जंगलों और चरागाहों की थी और देखते-देखते वह सब बिक गये थे नाना की हविस पूरा करने के लिए। हर कौर में नाना एक-एक एकड़ जमीन खा जाती थी। धूप से भरे हुए पेड़—पके हुए नाज के सुनहरे खेत—रस से छलकते हुए अँगूरों के बाग और लम्बी, मुलायम घास जिसमें गाय बकरियाँ आराम से ऊँघा करती थीं—सब जैसे किसी बहुत गहरे गढ़े में डूब गये। एक तूफान की तरह, एक जबरदस्त सैलाब की तरह, आग की प्रचंड लपटों की तरह, टिड्डियों के झुंड के काले बादलों की तरह नाना सारे प्रदेश में अराजकता फैला रही थी; पेरिस को तहस-नहस कर रही थी। जहाँ उसका गोरा नाज़ुक पैर पड़ता था वहाँ की जमीन जल जाती थी।

लॉ फैलोप पागल की तरह अपनी बरबादी देखकर हंसता रहा—उसके कन्धे कर्ज से टूटे जा रहे थे और उसका पुरस्कार उसे केवल यह मिला था कि 'फ़िगारो' में उसका नाम दो बार छप चुका था।

फॉशेरी ही अभी तक बचा हुआ था। कुछ दिनों से उसने स्वयं अपना एक पत्र निकालना शुरू किया था लेकिन थोड़े ही दिनों में नाना की हविस का गहरा गर्त उस अखबार का सब कुछ हड़प कर गया। अन्त में केवल एक प्रेस बचा था, वह भी नाना की कोठी में एक शानदार बाग लगाने में खर्च हो गया था।

एक रात को लॉ फैलॉप अचानक गायब हो गया। हफ्ते भर बाद मालूम हुआ कि वह गाँव में अपने एक पागल चाचा के साथ रहने लगा है। अब उसके पास इतना धन भी नहीं था कि पेरिस तो क्या वह कहीं और ही स्वतन्त्रता से रह भर सके। यह भी सुना था कि धन के लालच से वह शायद किसी बदसूरत लड़की से शादी भी करने वाला है। नाना काउन्ट से बोली, 'कहो—मफ! अब तो बहुत खुश होगे तुम। तुम्हारा एक और प्रतिद्वन्द्वी कम हुआ। वह भी मुझसे शादी करना चाहता था।' काउन्ट का निरादर करने के लिए अब नाना उनको 'मफ' कह कर ही पुकारती थी। काउन्ट के गले में हाथ डाल कर नाना फिर बोली—'और तुम्हें भी तो वही परेशानी है। तुम नाना से कैसे शादी कर सकते हो? तुम इसीलिए तड़पा करते हो। तुम्हें अपनी पत्नी की मृत्यु का इन्तजार करना पड़ेगा। और जब तुम्हारी पत्नी मर जायगी तो तुम फौरन ही दौड़ते हुए मेरे पास आओगे और मेरे कदमों पर अपनी सारी दौलत न्यौछावर करने का वायदा करोगे। क्यों ठीक है न?'

काउन्ट इन धीमी और प्यारभरी बातों को सुन कर नये दूल्हे की तरह शर्मा गये।

'अच्छा—तो मैं ठीक ही समझ रही थी। यह भी मुझसे शादी करना चाहते हैं—बस बीवी के मरने का इन्तजार है! ओह! तुम तो औरों से भी ज्यादा भद्दे और गिरे हुए आदमी हो।'

काउन्ट नाना के प्यार में और भी पागल हो गये। वह औरों के आने-जाने में कोई आपत्ति नहीं करते थे। वह अपना सब कुछ लुटा कर नाना की एक भी मुस्कान खरीदने को तैयार थे—खरीद रहे थे।

नाना के प्रति उनकी वासना एक ऐसी बीमारी की तरह थी जो उनके व्यक्तित्व के हर परिमाणु को सड़ा-सड़ा कर खाये जा रही थी लेकिन उससे वह बच नहीं सकते थे। जब नाना के कमरे में वह रात को घुसते थे तो कुछ देर के लिए उन्हें कमरे की खिड़कियाँ खोल देनी पड़ती थीं—

वासना के लिए क्यूपिड चाँदी की झाड़ियों में नाच रहे थे। जब उन्होंने दरवाजा खुलते देखा तो वह एकदम हड़बड़ा कर उठ पड़े—ऐसा लग रहा था कि वह यहाँ से भागना चाहते हों, पर जैसे एकाएक उन्हें लकवा मार गया हो। नाराज होते हुए भी नाना मार्क्विस की इस दशा पर हँस पड़ी।

'लेट जाओ—कपड़ों में छिप जाओ।' नाना ने उन्हें जल्दी से चादर उढ़ा दी जैसे वह किसी गन्दगी को छिपाना चाहती हो। और वह दरवाजा बन्द करने के लिए उठ पड़ी। मफेट भी क्या आदमी है कि हमेशा बुरे मौकों पर ही आ जाता है। फिर धन इकट्ठा करने वह नॉरमैंडी ही क्यों गया था; इस बूढ़े ने तो उसे चार हजार फ्रैंक यों ही लाकर दे दिये थे। दरवाजा एक बार थोड़ा-सा खोल कर उसने मफेट से कहा।

'अच्छा हुआ तुम्हें पता लग गया! कहीं इस तरह किसी के कमरे में घुसा जाता है! अच्छा बस अब जाओ—फिर कभी न आना।'

दरवाजा फिर बन्द हो गया—जो कुछ उन्होंने देखा था उससे वह अब तक स्तम्भित थे। उनका शरीर जोर से काँप रहा था—सिर से पैर तक वह बुरी तरह हिल रहे थे। एकाएक तूफान से उखड़े हुए पेड़ की तरह वह जमीन पर गिर पड़े—उनका सारा शरीर चटक गया। और अपने हाथ प्रार्थना में ऊपर उठाकर मफेट तीव्र पीड़ा से चिल्ला पड़े।

'भगवान् अब यह नहीं सहा जाता।'

उन्हें लगा कि उनकी सारी शक्ति खत्म हो गयी है और उनकी चेतना लुप्त होने वाली है। वह फिर आवेश में बोल पड़े।

'नहीं! अब नहीं! भगवान्—मेरी रक्षा करो या मुझे मर जाने दो! उस बुड्ढे के साथ ओफ—मुझे यहाँ से हटा लो ताकि मैं यह सब न देख सकूँ।'

उनके होंठ दिल की निकली हुई अधीर प्रार्थनाओं से जल रहे थे—वह अपने आपको भगवान् को दोबारा समर्पित कर चुके थे। एकाएक उन्हें पीछे से किसी ने छुआ—वह उनके धर्म गुरु—मस्यो वेनॉ थे। काउन्ट को लगा कि उन्हें भेज कर भगवान् ने उनकी प्रार्थना सुन ली है। और उन्होंने धर्म गुरु के कंधों पर असंख्य आँसू वहा दिये।

मफेट फिर अपने पिछले जीवन को लौट गये। इसके अतिरिक्त कोई चारा भी नहीं था—उनका जीवन वरवाद हो चुका था। मस्यो वेनॉ का उन्हें दो दिन से लगातार ढूँढ़ने का कारण यह था कि काउन्टेस सैवाइन किसी मामूली से युवक के साथ भाग गयी थीं। उनका घर, उनकी प्रतिष्ठा, उनकी सम्पत्ति सव तवाह हो गई थीं, लेकिन काउन्ट पर इन सब वातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा था—उनका अपना गम इतना महान् था।

अव उनके जीवन में बचा ही क्या था! राज दरवार के पद से तो उन्हें पहले ही त्याग-पत्र देने को मजबूर कर दिया गया था। उनकी पुत्री एस्टील ने, जो अपने विवाह के वाद एकदम वहुत सख्त औरत वन गई थी, अपने पिता पर साठ हजार फ्रैंक का दावा कर दिया था क्योंकि उस हिस्से की एक जायदाद भी नाना की हविस का शिकार हो चुकी थी। इस तरह पूरी तरह वरवाद हो जाने के वाद वह चुपचाप समाज की आँखों से वच कर अपने दिन काटने लगे थे। इधर-उधर भटकने के वाद काउन्टेस अपने पति के पास लौट आयी थीं और उन्होंने काउन्टेस को क्षमा करके स्वीकार कर लिया था। सैवाइन ने काउंन्ट की बची खुची जायदाद भी फूँक डाली थी और एक जीवित शव की तरह काउन्ट चुपचाप यह सव कुछ सहते चले गये थे। एक गिरी हुई औरत की वाहों से निकाल कर भगवान् ने उन्हें अपनी शरण में ले लिया था।

तोड़ती-फोड़ती ही थीं बल्कि उन्हें गन्दा करके तबाह भी कर देती थी। उसके नाजुक गोरे हाथों के स्पर्श मात्र से चीजें गल जाती थीं—सड़ जाती थीं। और काउन्ट इतने मूर्ख थे कि जानते हुए भी वह पतन के इस भयानक जाल में पड़े हुए थे। वह सोचते थे कि कुछ धार्मिक महात्माओं ने भी तो अपने शरीरों में ऐसे कीड़ों को पाला था जो उन्हीं के मांस को खाकर जिन्दा रहते थे। और काउन्ट की मूर्खता और कमजोरी से उत्साहित होकर नाना उन्हें मारती थी—धक्के देती थी; भालू—कुत्ता—घोड़ा बना कर नचाती थी और अपना मनोविनोद करती थी।

नाना को अजीब-अजीब तरह के वहम होते थे। एक बार उसने काउन्ट को मजबूर कर दिया कि वह अपनी पूरी दरबारी पोशाक पहिन कर आयें और जब वह आये तो नाना ने उन्हें खूब ही बनाया। नाना को समाज की प्रतिष्ठा और बड़प्पन से बहुत घृणा थी और उसे राज दरबार की पोशाक की बेइज्जती करने में बड़ा आनन्द आ रहा था। मफेट को घुमा कर उसने पीछे से लात मारी मानों वह फ्रांस के बादशाह की प्रतिष्ठा में ही लात मार रही है। इतना ही नहीं, उसने मफेट से कहा कि अपना वह शानदार कोट उतार कर उस पर चलें, थूकें और उस पागल औरत के जादू में बुरी तरह डूबे हुए मफेट ने फ्रांस के तख्त के शाही चिन्हों को अपने गन्दे जूतों से रौंदा—उनकी सुनहरी सजावट पर थूक भी दिया। सब कुछ खत्म हो गया था—उसने फ्रेंच दरबार के एक प्रतिष्ठित दरबारी को उसी तरह तोड़-मरोड़ कर फेंक दिया था जैसे उसने फिलिप का उपहार तोड़ा था—उन दोनों को मिट्टी और कीचड़ का ढेर बना कर उसने सड़क पर फेंक दिया था।

सुनारों के वायदों के बावजूद भी नाना का वह शानदार पलंग अब तक बन कर तैयार नहीं हुआ था। काउन्ट को वह उपहार नये वर्ष के उपलक्ष में नाना को भेंट करना था लेकिन अब तो जनवरी आधे से ज्यादा बीत चुका था। इधर काउन्ट नॉरमैंडी में अपनी बरबाद होती हुई

जायदाद का अन्तिम अंश भी बेचने चले गये थे। वह दो दिन बाद लौटने वाले थे लेकिन अपना काम खत्म करके वह और जल्दी ही लौट आये और बिना अपने घर जाये, सीधे नाना के यहाँ चले गये। जो उन्हें देख कर परेशान हो गयी। उन्हें रोकने के लिए उसने एक बहुत लम्बा बहाना बताया—कल काउन्ट के धर्म गुरू, मस्यो वेनॉ, घबड़ाये हुए यहाँ आये थे और कह गये थे कि काउन्ट के आते ही उन्हें फौरन घर भेज दिया जाय। मफेट की कुछ समझ में न आया, लेकिन फौरन ही वह जो की परेशानी का कारण समझ गये। दौड़ कर उन्होंने नाना के सोने के कमरे की किवाड़ खोल दी। अन्दर जो दृश्य था उसे देखकर वह चीखते हुए पीछे हट गये, 'हे भगवान्!'

नाना का कमरा अपनी नयी शाही सजावट से चमक रहा था। गुलाबी रंग की मखमल के शिविर पर हजारों चाँदी के सितारे चमचमा रहे थे—वह शरीर की रस बरसाती हुई जवानी का रंग था जो सुहानी रातों में और भी चमक उठता है। और सुनहरी झालरें लहकती हुई लपटों की तरह—लहराते हुए सुर्ख बालों की तरह कमरे की नग्नता को ढँके हुए थीं। इस गुलाबी और सुनहरे शामियाने के नीचे चाँदी का बिस्तर था—एक सिंहासन की तरह चौड़ा और विस्तृत, जिस पर नाना अपने नंगे शरीर को पूरी तरह फैला सकती थी—नाना के शरीर कं श्रेष्ठ मांसलता के लिए यह उपयुक्त मन्दिर था। इस समय भी वह पलंग पर बिल्कुल नग्न पड़ी थी और उसके जवान और बर्फ-से सफेद वक्ष ं साये में एक गन्दा और बूढ़ा शरीर मार्क्विस द शॉर्द का शरीर पड़ा था

अपनी आँखों को हाथ से ढँक कर काउन्ट स्तम्भित होकर यह कह हुए पीछे हट गये थे, 'हे भगवान्! यह क्या है!

साठ सालों की दुश्चरित्रता से सड़ा-गला हुआ मार्क्विस का शरं नाना के चमकते हुए शरीर से घिरा हुआ पड़ा था। उस सड़े ; शरीर के लिए उस रात को सोने के वह फूल मुस्कुराए थे, उसी ;

सिर कटवा देती है। और कोई कहता था कि यह सब बातें बिल्कुल गलत हैं, वह एक हब्शी के प्रेम में बिल्कुल बरबाद हो गयी है। लेकिन पन्द्रह दिन बाद ही सब लोग हैरान रह गये—किसी ने कहा कि उसने नाना को रूस में देखा था और फिर नाना के बारे में और भी नयी और अजीब कहानियाँ प्रचलित हो गयीं।

यह एक बड़े शाहजादे की प्रेयसी थी और उसके पास असंख्य हीरे-जवाहरात थे। इतने दूर देश में रहने वाली नाना पेरिस निवासियों की आँखों में एक रहस्यपूर्ण देवी की तरह हो गयी जिसका शरीर हीरों से मढ़ा हुआ था। अब लोग उसका नाम बहुत इज्जत से लेते थे।

जुलाई की एक शाम को लूसी अपनी गाड़ी में चली जा रही थी। उसने दूर से कैरोलीन हेकेट को पैदल ही आते हुए देखा और गाड़ी रुकवा ली। कैरोलीन को देखते ही लूसी बोल पड़ी—

'तुम खाली हो? हाँ! अच्छा मेरे साथ चलो—नाना लौट आयी है!'

कैरोलीन चकित हो गई यह सुन कर कि नाना लौट आई है। वह फौरन लूसी की गाड़ी में बैठ गयी और लूसी ने फिर कहना शुरू किया—

'और तुम्हें मालूम नहीं—वह शायद अब मर भी गयी हो!'

'मर गई हो! हिरत! यह क्या बकवास है—क्या हुआ है उसे!' कैरोलीन ने परम आश्चर्य में पूछा।

'वह ग्रैन्ड होटल में है और उसे चेचक हो गया है।' लूसी ने अपने ड्राईवर से कहा कि गाड़ी जल्दी बढ़ाये।

और रास्ते में लूसी ने कैरोलीन को नाना की अनुपस्थिति की कहानी सुनायी—

'पता नहीं क्यों नाना रूस से लौट आयी—शायद इसलिए कि उसका शाहजादे से कुछ झगड़ा हो गया था। वह अपना समान स्टेशन पर ही छोड़ कर सीधे अपनी चाची—मदाँम लेरॉ को तो जानती होगी—

नाना का लड़का दूसरे ही दिन चेचक से मर गया।
हाँ पहुँच गयी। नाना का लड़का दूसरे ही दिन चेचक से मर गया।
म लेरॉ का नाना से धन की बात पर बहुत झगड़ा भी हुआ।
द चाची ने भी नाना के लड़के की परवरिश इस कारण ठीक से
की क्योंकि बाद को उन्हें नाना से उचित धन नहीं मिला था। वहाँ
नाना एक होटल में ठहरने पहुँच गयी। वह अपना सामान
शन से लेकर लौट ही रही थी कि रास्ते में उसे मिनॉन मिल गया।
ाना की तबियत एकाएक तेजी से खराब होने लगी थी—मिनॉन
उसे उसके होटल के कमरे में ले गया और उसकी सहायता करने का
वायदा किया। मिनॉन से रोज ने भी नाना की बीमारी की बात सुनी
और वह बहुत दुःखी हो गयी। नाना एक मामूली होटल में और
बीमार! आश्चर्य की बात तो यह है, कैरोलीन! कि यह दोनों पहले
से इतना लड़ती-झगड़ती रहती थीं और रोज तो उससे विशेष रूप से
नाराज थी, लेकिन नाना के बीमार पड़ने पर न जाने कहाँ की दया—
प्रेम और स्नेह रोज के दिल में उमड़ आया। रोज ही नाना को ग्रैन्ड
होटल में लिवा ले गयी ताकि अन्त समय तो नाना शानदार जगह में
हो। तब से रोज उसी के पास है और उसकी सेवा-सुश्रुषा कर रही है।
तीन रातें तो उसे वहाँ बीती हैं। शायद उसे भी यह बीमारी हो जाय,
चेचक एक भयानक संक्रामक रोग है। रोज को अगर यह बीमारी लग
गयी तो वह भी मर जायगी। खैर! लेबॉरदेत ने ही यह सब मुझे बताया
था इसलिए मैंने सोचा कि चल कर देख लूँ..........'

'हाँ, हाँ! अवश्य!' इस अजीब-सी कहानी को सुन कर कैरोलीन
बहुत उत्तेजित हो गयी थी।

वे लोग पहुँचने ही वाली थीं कि रास्ते में गाड़ियों की इतनी भी
हो गयी कि उनकी गाड़ी को उसमें से निकलना बिल्कुल असम्भव
गया। फ्रांस की विधान सभा ने लड़ाई की घोषणा कर दी। हर तरफ
लोगों की एक भीड़ उमड़ पड़ी थी। एक जबरदस्त शोर हर तरफ थ

# १२

नाना एक बार फिर एकाएक गायब हो गयी थी। वह शमा जो एक बार आसमान तक उठ गयी थी फिर अपनी ही चमक और गर्मी से बुझ गयी थी और उसके चारों तरफ मँडराने वाले हजारों परवाने उसी में जल कर भस्म हो गये थे। नाना के कदमों ने हजारों आदमियों के शरीरों को रौंद डाला था—उनके व्यक्तित्व, उनकी प्रतिष्ठा, उनकी धन-दौलत—सब नाना की हविस की क्रूर आग में जल कर राख हो गये थे। पुराने दानवों की तरह नाना शवों और कंकालों पर चलती थी और विपत्तियाँ उसके चारों तरफ मँडराया करती थीं—वांदूवरे जल कर भस्म हो गया था फूकॉरमां अपने गम और निर्धनता से परेशान होकर चीन के पास के समुद्र में अपने जहाज के साथ डूब गया था, स्टीनर चौपट हो गया था, लॉ फैलॉप बुद्धू की तरह एक गाँव में अपना बरबाद जीवन बिता रहा था, मफेट का परिवार बिल्कुल तबाह हो गया था। और जेल से छूटने के बाद फिलिप जार्ज की कब्र पर आँसू बहा रहा था। बरबादी और मौत नाना के कदमों के साथ-साथ हर जगह फैल गयी थी। फॉशेरी की कहानी की 'गोल्डेन फ्लाई' (सुनहरी मक्खी) की तरह नाना जिसे भी छूती थी वह फौरन ही जल कर मर जाता था—दलित वर्ग से उभरी हुई उस लड़की ने समाज में भी मौत और तबाही का बीज बो दिया था और उस बीज में शव और कंकाल उग रहे थे। उसने उन लोगों की ओर से बदला ले लिया था जिनकी वह सन्तति थी, जिन्हें प्रतिष्ठित समाज ने कीचड़ और सड़ांध में मरने के लिये फेंक

दिया था। यह भी तो अपनी तरह का न्याय था। नाना की जवानी और रूप अनन्त मालूम पड़ते थे और उनकी रोशनी में उसके बरबाद किये हुए लोग ऐसे लग रहे थे जैसे शवों और मांस के लोथड़ों पर उगता हुआ सूरज चमक रहा हो।

और फिर एकाएक किसी वहन—किसी हविस के कारण नाना फिर गायब हो गयी थी। जाने के पहले नाना ने अपना सब सामान, कोठी, फर्नीचर, जेवर, यहाँ तक कि कपड़े भी नीलाम कर दिये थे। नाना का सामान नीलाम हो रहा था! लोगों में तहलका मच गया था। दाम लगाये गये थे और पाँच दिन में छः लाख फ्रैंक से ज्यादा इकट्ठे हो गये थे। जाने के पहले नाना ने आखिरी एक नाटक में भी अभिनय किया था। उस भूमिका में नाना को खामोश ही रहना पड़ा था लेकिन नाटक बहुत ही सफल रहा था। बार्दिनेव ने बड़े जोर का विज्ञापन किया था—सारे पेरिस में उसने अपने नये नाटक की धूम मचा दी थी। लेकिन इस सब सोहरत और सफलता के बीच में ही नाना न जाने कहाँ गायब हो गयी थी। एक दिन सुबह सारे पेरिस में यह खबर आग की तरह फैल गयी कि नाना पिछली रात को काहिरा चली गयी। लोगों का ख्याल था कि बार्दिनेव से वह कुछ नाराज हो गयी थी। इतनी रईस औरत को कौन नाराज कर सकता था? फिर वह बहुत दिनों से अफ्रीका, मिस्र आदि जाना भी चाहती थी। उन देशों का रूमानी विलास-प्रिय और वासना-पूर्ण वातावरण उसे बहुत दिनों से लुभा रहा था।

इसके बाद महीनों गुजर गये। लोग नाना को धीरे-धीरे भूलने लगे थे। जब कभी नाना का नाम आता था, तो अजीब-अजीब अफवाहें सुनायी पड़ती थीं। हर आदमी अलग-अलग कहानियाँ बताते थे। कोई कहता था कि नाना किसी देश के वाइसराय की प्रेयसी हो गयी है, कोई कहता था कि वह किसी सुल्तान के हरम में राज्य कर रही है। दो सौ गुलाम उसकी सेवा करते हैं और अपना दिल बहलाने के लिए वह उनके

थीं—जिसे नहीं होना चाहिए था। अब नाना का वह आकर्षक रूप और शरीर कभी कोई नहीं देख पायेगा।

लूसी और कैरोलीन ऊपर जा रही थीं—तभी ब्लाँश सिवरी भी आ गयी। वह भी नाना की मृत्यु का हाल सुन कर स्तम्भित रह गयी थी। वे तीनों ऊपर चढ़ने लगीं तो मिनॉन ने नीचे से पुकार कर कहा :

'रोज से कह देना कि जल्दी नीचे उतर आये।'

ऊपर रोज के अलावा कमरे में लगभग वह सभी औरतें थीं जो नाना को जानती थीं। और नीचे नाना के सब परिचित पुरुष—वादिनेच, डगेर्नेट, लेबॉरदेत, प्लेयर, मिनॉन, फॉशेरी, फोन्तां और स्टीनर खड़े हुए सिगार पी रहे थे और कभी-कभी नाना की मृत्यु को अचानक याद करके दुख के दो शब्द कह देते थे। केवल काउन्ट मफेट एक रूमाल से अपना चेहरा छिपाये बैठे थे।

एकाएक लूसी बोली—'अब तो चला जाय, यहाँ रह कर हम लोग उसे जिन्दा तो कर नहीं लेंगे!'

सब लोग चारपाई की तरफ अपने आप मुड़ गये। वे चलने की तैयारियाँ करने लगे। केवल लूसी खिड़की के बाहर झाँक रही थी—दुख से उसका दिल भर आया था। दूर सड़क पर मशालों के साथ-साथ वह विशाल जनसमुदाय अभी चला जा रहा था—विशाल अँधेरे में वह पूरी भीड़ स्थूल और स्थिर लग रही थी। भीड़ का वह पूरा समुद्र लड़ाई के मैदानों पर कटने के लिए आगे बढ़ा जा रहा था। शायद मौत की तरह बढ़ती हुई उदासी को दूर करने के लिए वह लोग चिल्लाते जा रहे थे :

'बर्लिन चलो—बर्लिन चलो—बर्लिन चलो!'

धीरे-धीरे सब औरतें कमरे से निकल कर चली गयीं। रोज अकेली कमरे में रह गयी थी—उसने एक बार चारों तरफ निगाह घुमायी, यह

ने को कि कमरा साफ है या नहीं ! फिर उसने लैम्प बुझा दिया और
ना के शव के पास पड़ी हुई मेज पर एक मोमबत्ती जला कर रख दी।
व के चेहरे पर मोमबत्ती की पीली रोशनी फैल गयी। उस कुहरे को
खकर रोज डर कर पीछे हटी :

'उफ ! यह तो बिल्कुल बदल गयी है !'

रोज खामोशी से कमरा बन्द करके चली गयी। नाना कमरे में अकेले पड़ी थी और उसका चेहरा मोमबत्ती के प्रकाश में साफ दिखाई पड़ रहा था। वह चेहरा था या सड़े हुए गोश्त का लोथड़ा ! चेचक के छालों से सारा चेहरा भरा हुआ था—उन छालों के बीच में जरा-सी भी खाल साफ नहीं दिखायी पड़ रही थी। छाले अब धीरे-धीरे सूखने या फूलने लगे थे और मटियाले लग रहे थे। उसका चेहरा, जो अब बिल्कुल पहिचाना नहीं जा रहा था, सड़ती हुई मिट्टी की तरह लग रहा था। बाईं आँख सड़ती हुई खाल और छालों से बिल्कुल ढक गयी थी और दूसरी आँख भी एक बेजान काले गढ़े की तरह लग रही थी। मुँह पर एक लाल पर्त और सूजन थी जिसके कारण चेहरे पर एक भयानक हँसी दिखायी पड़ रही थी। लेकिन इस वीभत्स नकाब के चारों तरफ खूबसूरत, सुनहरे बाल सोने की कई धाराओं की तरह अब भी फैले हुए थे। वीनस—रूप और प्रेम की देवी—सड़ रही थी। पतन के वह कीटाणु, जो उसे जन्म से अपने वातावरण की सड़ांध से मिले थे और जिसरे उसने अंजाम के एक प्रतिष्ठित आग को तबाह कर डाला था, आज उस के अन्दर भड़क उठे थे और उन्होंने उसके जवान शरीर को औ खूबसूरत चेहरे को सड़ा डाला था।

कमरा बिल्कुल खाली था। सड़कों पर से हजारों-लाखों आव अपने दिल के डर और उदासी को भुलाने के लिए चिल्ला रही थीं :

'बर्लिन चलो—बर्लिन चलो—बर्लिन चलो !'

ऊपर एकाएक एक सामूहिक और जोरदार आवाज काले आसमान
गूँज उठी।

'बर्लिन चलो—बर्लिन चलो—बर्लिन चलो!'

कुछ देर यह लोग खामोश रहे; फिर लूसी बोली—'हम दोनों ऊपर
जा रहे हैं—किसी को चलना है?'

तीनों पुरुषों ने इन्कार कर दिया। ग्रान्ड होटल की एक कुरसी पर एक
आदमी रूमाल से अपना चेहरा छिपाये बैठा था। निनॉन और फासेरी
को मालूम था कि वह व्यक्ति कौन है और उन लोगों ने लूसी और कैरो-
लीन के ऊपर जाते ही इस व्यक्ति ने अपना सिर थोड़ा ऊपर उठाया।
उन दोनों के मुँह से आश्चर्य की एक धीमी-सी आवाज निकल गयी।
वह व्यक्ति काउन्ट मफेट थे।

'आज सुबह से यह यहीं पर बैठे हैं—सब हर आधे घंटे के बाद
उठकर यह पूछ लेते हैं कि ऊपर के कमरे में जो व्यक्ति बीमार है उसकी
तबियत कैसी है?'

तभी काउन्ट हाल पूछने के लिए फिर उठे लेकिन होटल का एक
सेवक समझ गया कि वह क्या प्रश्न करने वाले हैं; वह एकदम बोल
पड़ा—'अभी-अभी उनकी मृत्यु हो गयी।'

मफेट बिना उत्तर दिये अपनी कुर्सी पर लौट गए और उन्होंने
अपना चेहरा रूमाल से बिल्कुल छिपा लिया। और लोग भी आश्चर्य
में चिल्ला पड़े, लेकिन आवाज बाहर से आती हुई जोरदार गूँज में
डूब गयी।

'बर्लिन चलो—बर्लिन चलो!'

निनॉन ने सन्तोष की साँस ली—अब तो रोग को उतर कर आ...
ही पड़ेगा। फोन्तां के चेहरे पर दुःख छा गया, फासेरी ...
वास्तव में असर पड़ा था। नाना की मृत्यु का ऐसा रूप—ऐसा जब...
और लुभावना शरीर! लगता था कि नाना की मृत्यु कोई अनोखी ...

बहुत आनन्द मिल रहा था। बिना उसे छोड़े हुए उसने प्यारभरे और मादक स्वर में कहा, 'सुनो प्यारे! कल किसी तरह से दो सौ फ्रैन्क ला दो। मुझे बहुत जरूरत है। एक 'बिल' देना है और मैं बहुत परेशान हूँ।'

फिलिप एकदम पीला पड़ गया लेकिन एक बार फिर नाना को चूम कर बोला—'मैं पूरी कोशिश करूँगा!'

थोड़ी देर दोनों चुप रहे; नाना अपने कपड़े पहिनने लगी और फिलिप खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया।

'नाना! तुम मुझसे शादी कर लो!'

नाना को फिलिप की बात पर इतना आश्चर्य हुआ कि वह एकदम घूम पड़ी—'क्यों—तुम्हारा दिमाग तो ठीक है न? तुम मुझसे शादी करने की बात इसलिए कर रहे हो कि मैंने तुमसे दो सौ फ्रैन्क उधार माँगे हैं। यह क्या पागलपन तुम्हें सूझा है—ऐसा होना बिल्कुल असम्भव है।' इतने में जो कमरे में नाना को जूता पहिनाने आ गयी और वह दोनों चुप हो गये।

उसी दिन जार्ज, जिसे नाना ने अपने घर आने को मना कर दिया था, चुपचाप घर में घुस आया था। वह ड्राइंग-रूम में ही था कि उसने दूसरे कमरे में अपने भाई और नाना की आवाजें सुनीं। वह और पास गया और उसने किवाड़ पर कान लगा कर सुना। चुम्बनों की आवाज, प्यार की बातें, शादी का प्रस्ताव—सब कुछ जार्ज को साफ-साफ सुनायी पड़ा। वह डर गया, उसने एक अजीब तरह का दर्द अनुभव किया और वहाँ से फौरन ही चला गया। नाना फिलिप के आलिंगन में! यह कल्पना करके ही उसका दिल आँसुओं के भार से टूट पड़ा था। अगर इस समय फिलिप घर में आ जाता तो जार्ज अवश्य उसकी हत्या कर देता। लेकिन दूसरे दिन ही उसकी इच्छा यह हुई कि वह आत्महत्या कर ले—वह सारे दिन पागलों की तरह पेरिस की सड़कों पर भटकता फिरा। लेकिन नाना को देखने, उससे मिलने का जबरदस्त आकर्षण उसे एक बार फिर

के घर की तरफ खींच ले गया—शायद नाना उस पर दया। फर
। तीन बजे वह नाना के घर पहुँच गया।

लेकिन उसी दिन लगभग बारह बजे मदाम ह्यूगॉ को खबर मिली उनका बड़ा लड़का फिलिप गिरफ्तार हो गया है। पिछली शाम से लिप जेल में था—उसने फौज के बारह हजार फ्रैन्क गबन किये थे। न महीने से वह धीरे-धीरे थोड़ी-थोड़ी रकमें गबन करता आ रहा था र अपनी चोरी को छिपाने के लिए उसने हिसाब में भी जालसाजी की ी। मदाम ह्यूगॉ को फिलिप और नाना के सम्बन्धों के बारे में मालूम था—उन्होंने क्रोध में नाना को जी भर के कोसा। नाना ही फिलिप के पतन का कारण थी और शुरू से ही मदाम ह्यूगॉ को डर था कि किसी न किसी दिन फिलिप पर कोई आपत्ति अवश्य आयेगी। लेकिन माँ को यह तो सन्तोष था कि अभी उनका दूसरा बेटा—जार्ज—ठीक है और इस विचार से उन्हें काफी शान्ति मिली थी। लेकिन जब वह जार्ज के कमरे में ऊपर गयीं तो पता लगा कि जार्ज तो सुबह से ही गायब है। मदाम ह्यूगॉ को शक हुआ कि कोई दूसरी आपत्ति अवश्य उनके ऊपर पड़ने वाली है। उन्हें विश्वास था कि जार्ज भी उसी नाना के यहाँ गया होगा। मदाम ह्यूगॉ की आँखों से आँसू गायब हो गये। उनके कदम दृढ़ हो गये। वह उस नागिन से खुद जाकर अपने बेटे वापस माँगेंगी।

नाना उस दिन सुबह से ही परेशान थी। बहुत से लोग अपना बिल चुकवाने के लिए आये हुए थे। नाना की समझ में नहीं आ रहा था कि कैसे उधार चुकाये। नौकरों ने दूकानदारों से कह दिया था कि वे कुछ देर और इन्तजार करें—जब लोग शाम को मदाम से मिलने आयेंगे तो 'बिल' चुका दिये जायँगे। उस शान-शौकत के बावजूद आज नाना का अपमान हो रहा था। दूकानदार और नौकर जो बहुत खुश थे, नाना के बारे में इधर-उधर की बातें उड़ा रहे थे।

नाना सोच रही थी कि फिलिप भी अब तक नहीं आया।

बदकिस्मती है! अभी दो ही दिन पहले तो उसने सैटिन के कपड़ों पर बारह सौ फ्रैन्क खर्च किये थे। और आज यह मुसीबत.........

दो बजे तक तो नाना वास्तव में बहुत चिन्तित हो गयी थी। तभी लेबॉरदेत आ गया—वह नाना को उस शानदार पलंग के बिस्तर का डिजाइन दिखाने लाया था जो नाना के लिए बनवाया जा रहा था। एक बार नाना को यह इच्छा हुई थी कि वह अपने सोने के कमरे को फिर से सजवाये। गुलाबी रंग की मखमल से वह अपना कमरा सजवाना चाहती थी। नाना का विचार था कि यह रंग उसे बहुत अच्छा लगेगा। गुलाबी मखमल का एक तम्बू उसके पलंग के ऊपर होगा और उसमें सुनहरी झालरें और चाँदी के बटन टँके होंगे। इसके नीचे उसका पलंग होगा—ऐसा शानदार पलंग जिसकी कल्पना भी किसी ने आज तक नहीं की होगी। वह पलंग क्या होगा सिंहासन होगा—मन्दिर होगा। जिसके पास सारा पैरिस आकर उसकी नग्न मांसलता की पूजा करेगा। यह पूरा पलंग चाँदी और सोने से बना होगा। चाँदी पर सोने के फूल होंगे और पलंग के सिरहाने सोने के फूलों के झुरमुटों से क्यूपिड [1] झाँकते हुए दिखायी देंगे। इस पलंग की कीमत लगभग पचास हजार फ्रैन्क होने को थी और नये वर्ष में वह मफ़ेट का उपहार होने को था।

लेबॉरदेत द्वारा लाये हुए बिस्तर के डिजाइनों को देख कर नाना खुश हो गयी और कुछ देर को उसकी तमाम चिन्ताएँ दूर हो गयीं। नाना गर्व के नशे में थी। सुनारों ने कहा था कि ऐसे पलगों पर तो महारानियाँ भी नहीं सोयी थीं। लेबॉरदेत ने डिजाइनों के चित्र थोड़ी देर बाद लपेट लिये। उसके चलते-चलते नाना ने उसे रोक कर पूछा—'दो सौ फ्रैन्क तो नहीं होंगे तुम्हारे पास?'

लेबॉरदेत ने सिर हिला दिया। उसका सिद्धान्त था कि वह कभी औरतों को कर्ज नहीं देता था।

[1] क्यूपिड—पश्चिमी धर्म कथाओं में प्रेम का देवता—कामदेव

नाना खामोश होकर अपने कमरे में लौट गयी—शर्म और परेशानी से उसका दिल टूटा जा रहा था। सारे घर में नौकरों की उपहासपूर्ण मुस्कुराहटें गूँजती हुई मालूम पड़ रही थीं—उन्हें नाना से क्या सहानुभूति ! जैसे नाना औरों का पैसा बरबाद करते हुए न हिचकती थी वैसे ही वे भी नाना का धन लूटने में पाशविक आनन्द लेते थे। दुख की लहरों में नाना बहने लगी थी। अपने कमरे में पहुँच कर वह स्वगत बोल पड़ी—'चिन्ता मत करो, नाना अपने ऊपर भरोसा रखो। तुम्हारा शरीर तो अपना ही है, उसी से लाभ उठाओ। बेइज्जती सहने से क्या लाभ ?'

और उसने फौरन ही मदाम त्रिकॉन के यहाँ जाने के लिए कपड़े पहिन लिये। तकलीफ के समय केवल यही उसका एक सहारा था। इस शान शौकत में भी जब कभी उसे जरूरत पड़ती थी तब कम से कम मदाम त्रिकॉन के द्वारा एक बार में कम से कम पाँच सौ फ्रैन्क तो उसे मिल ही जाते थे। लेकिन कमरे से निकलते ही उसे जार्ज मिल गया। नाना ने आराम की साँस ली—अवश्य फिलिप ने इसे दो सौ फ्रैन्क देकर भेजा होगा।

'क्यों तुम्हें फिलिप ने भेजा है ? नाना ने खुशी से पूछा।

'नहीं !' जार्ज का चेहरा पीड़ा से तिलमिला रहा था।

नाना यह सुनकर खीझ उठी। तो फिर क्या चाहता है जार्ज ? उसका रास्ता रोके हुए क्यों खड़ा है वह ? वह जल्दी में थी—हटो—हटो थोड़ा पीछे हट कर नाना ने पूछा, 'कुछ धन है तुम्हारे पास ?'

'नहीं।'

'हाँ—हाँ—क्यों होगा ? माँ ने 'बस' के पैसे भी नहीं दिये होंगे ! क्या आदमी हैं यह लोग भी !' नाना घृणा से उसकी तरफ देख कर बोली।

नाना फिर आगे बढ़ी लेकिन जार्ज ने रास्ता रोक लिया। वह उससे

अवश्य बात करना चाहता था। नाना ने उसे हटाने की कोशिश की—उसे बिल्कुल फुरसत नहीं थी।

'लेकिन सुनो तो—क्या तुमने मेरे भाई से शादी करने का निश्चय कर लिया है?' जार्ज काँपते हुए बोला।

क्या मजाक है! नाना को खुद ब खुद हँसी आ गयी। वह कुर्सी पर बैठ कर हँसने लगी।

'लेकिन मैं तुम्हें कभी ऐसा नहीं करने दूँगा। तुम्हें मुझसे ही शादी करनी पड़ेगी—इसीलिए मैं इस समय आया हूँ।'

'अच्छा! तो तुम भी मुझसे शादी करना चाहते हो! क्या तुम्हारे पूरे खानदान को मुझसे शादी करने का मर्ज हो गया है? हिश्त! जाओ यहाँ से, क्या बेहूदापन है! मैं न तुमसे शादी करूँगी, न उससे।' नाना ने बिगड़ कर उत्तर दिया।

जार्ज का चेहरा खुशी से खिल उठा—'तो कसम खाओ कि तुम फिलिप की प्रेयसी नहीं हो!'

'चुप रहो! तुम तो सिर पर चढ़े आ रहे हो! यह मजाक कुछ देर तक तो अच्छा लग सकता है लेकिन हमेशा नहीं और फिर मैं जल्दी में हूँ! मैं चाहूँगी तो तुम्हारे भाई से प्रेम करूँगी। तुम कौन हो? क्या मैं तुम्हारी रखैल हूँ, क्या तुम यहाँ के खर्च के लिए धन देते हो जो मुझसे जवाब माँग रहे हो? हाँ, मैं तुम्हारे भाई की प्रेयसी हूँ। बोलो, क्या करोगे तुम?'

जार्ज ने नाना की बाँहें पकड़ लीं और उन्हें कस कर दबा दिया मानो तोड़ डालेगा—'यह मत कहो—मत कहो——'

जार्ज के मुँह पर झापड़ मार कर नाना ने अपने को छुड़ा लिया।

'अच्छा—अब यहाँ से निकल जाओ। तुम मुझे मारना चाहते हो: मैं केवल तुम्हारे ऊपर दया करके तुम्हें यहाँ आने देती थी और कोई कारण नहीं। तुम्हारे जैसे बच्चों पर मैं समय बरबाद नहीं कर सकती

जार्ज नाना की यह बातें सुन कर अचेत-सा हो गया पीड़ा के
ण । नाना का हर शब्द उसके दिल में तीर की तरह चुभ रहा था;
न नाना को उसके दर्द की तनिक भी परवाह नहीं थी—

'और वैसा ही बेवकूफ तुम्हारा भाई भी है। उसने आज दो सौ
क देने का वायदा किया था लेकिन मैं उसका इन्तजार करते-करते
र गयी । तुम्हारे भाई के न आने के ही कारण किसी दूसरे आदमी
को अपना शरीर बेच कर मुझे पाँच सौ फ्रैन्क कमाने पड़ रहे हैं।'

जार्ज ने पागल होकर फिर दरवाजा रोक लिया और बड़बड़ाने लगा

'नहीं—नहीं—ऐसा नहीं हो सकता।'

'अच्छा । मैं तैयार हूँ—धन है तुम्हारे पास ?'

धन तो जार्ज के पास बिल्कुल नहीं था—वह अपना जीवन दे सकता था उस धन को पाने के लिए। जार्ज को इतना दुख कभी नहीं हुआ था—उसे लगा कि वह बिल्कुल कमजोर है—वह कुछ नहीं कर सकता। जार्ज का सारा शरीर दर्द और सिसकियों से मचल उठा। नाना ने कुछ नम्रता से कहा—'अच्छा, जार्ज। हट जाओ—मुझे जाने दो । तुम अभी बच्चे हो—तुमसे कभी-कभी तो मैं खेल सकती हूँ लेकिन आज मैं परेशान हूँ— मुझे काम करना है।'

और जार्ज के माथे को चूम कर वह यह कह कर हँसती हुई चल दी—'अच्छा—अब जाओ । हमारे बीच में अब सब-कुछ खत्म हो गया—समझे।'

जार्ज बैठक के बीच में खड़ा था—उसके कानों में नाना के आखि
शब्द गूँज रहे थे और हथौड़े की तरह उसके दिल और दिमाग पर ब
बर आघात कर रहे थे।

'अब सब खत्म हो गया.........।' और नाना फिलिप से प्यार करती थी क्योंकि उसने जार्ज से कहा था कि फिलिप को यह न ब
कि धन कमाने के लिए उसे क्या करना पड़ रहा था । वास्तव मे

कुछ खत्म हो गया था। 'लों मिनॉव' की उन सुहानी रातों की उसे फिर याद आयी जब नाना उससे प्रेम किया करती थी और इस मकान में भी वह घड़ियाँ जब वह नाना की बाँहों में छिप कर प्यार के सपने देखा करता था। लेकिन फिर कभी यह सब नहीं होगा—कभी नहीं—कभी नहीं! अब जिन्दा रहना बिल्कुल बेकार है!

नाना पैदल ही घर के बाहर गयी थी। नीचे हॉल में बेंच पर बैठे हुए दूकानदार और नौकर हँस रहे थे। जो जब बैठक के कमरे में हो कर निकली तो जार्ज को वहाँ देख कर उसे आश्चर्य हुआ। जार्ज ने कहा कि वह नाना से मिलने आया था लेकिन कुछ कहना भूल गया था इसलिए उसके लौटने का इन्तजार कर रहा था। जब जो चली गयी तो उसने कमरे में ढूँढ़ना शुरू किया। अन्त में उसे एक तेज नोकीली कैंची मिली जिसे उसने अपने कोट में छिपा लिया।

एक घन्टे तक जार्ज नाना का इन्तजार करता रहा बेचैनी से।

'वह लो—मदाम आ भी गयीं।' जो ने कहा। सब नौकर एकदम खामोश हो गये। जार्ज ने सुना, नाना रोटी वाले का 'बिल' चुका रही है। थोड़ी देर में वह कमरे में आ गयी।

'क्यों, तुम अभी तक यहीं हो? तुम्हें क्या निकलवाना ही पड़ेगा!'

यह कह कर नाना अपने सोने के कमरे की तरफ बढ़ी।

'नाना! तुम मुझसे शादी कर लो!'

जार्ज की बात इतनी बेकार थी कि नाना ने उसका उत्तर भी नहीं दिया।

'नाना! मुझसे शादी कर लो!'

नाना ने धड़ाक से दरवाजा बन्द कर दिया लेकिन फौरन ही एक हाथ से जार्ज ने दरवाजा खोला और दूसरे हाथ से कैंची की नोक अपने सीने में घुसेड़ ली। नाना ने पलट कर देखा और वह नफरत से चीख पड़ी—'पागल हो गया है यह—पागल हो गया है। कितना बदमाश

लीफ हो रही थी। एकाएक नाना अपनी परेशानी में एकदम कह पड़ी, "जो तुम चाहते थे वही हो गया न। अब तुम हम दोनों को प्रेम करते कभी न पकड़ पाओगे।'

इस बात का काउन्ट पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि आखिरकार वह नाना के पास जाकर उसे सांत्वना देने लगे। नाना को यह गम धैर्य से बर्दाश्त करना चाहिए। उसका कहना ठीक था—उसका इसमें कोई दोष नहीं था। लेकिन नाना ने मफेट को रोक कर कहा कि वह फौरन जाकर यह पता लगायें कि जार्ज की तबियत कैसी है। काउन्ट चुपचाप जार्ज का हाल मालूम करने चले गये। जब वह पौन घंटे के बाद लौटे तो उन्होंने देखा कि खिड़की से झुकी हुई नाना उन्हीं के आने का इन्तजार कर रही है। काउन्ट ने बताया कि जार्ज मरा नहीं था केवल जख्मी हो गया था और बच भी सकता था। नाना एकदम बहुत खुश हो गयी।

जो, जो कुछ देर से खून का दाग साफ करने का प्रयत्न कर रही थी, बोली—'मदाम! यह निशान ठीक से मिट नहीं रहा है।'

और वास्तव में कालीन के सफेद भाग पर पड़ा हुआ लाल धब्बा जो दरवाजे के बहुत करीब था, अब भी उतना ही सुर्ख दिखायी पड़ रहा था मानो खून की एक रेखा उस दरवाजे पर प्रहरी की तरह बाधा बनी पड़ी हो।

'कोई बात नहीं—कदमों के चलने की रगड़ से दाग धीरे-धीरे मिट जायगा।' नाना बोली।

दूसरे दिन तक काउन्ट भी वह भयानक घटना भूल गये थे। जब वह जार्ज की हालत पूछने जा रहे थे तो उन्होंने निश्चय किया था कि अब वह नाना के पास फिर कभी न जायँगे। ईश्वर ने उन्हें यह चेतावनी दी थी; जार्ज और फिलिप की बरबादी एक ऐसा संकेत थी जो यह बता रही थी कि काउन्ट का भी वही अन्त होगा। लेकिन न मदाम ह्यूगाॅ के आँसू, न जार्ज का घायल शरीर, न उनका अपना निश्चय

उन्हें नाना के पास वापस जाने से रोक सका। उनके दिल के अन्दर इस बात की गुप्त खुशी थी कि उनके दो प्रतिद्वन्द्वी इस प्रकार उनके रास्ते से निकल गये थे। उनके दिल में इन लोगों की जवानी के प्रति जबरदस्त ईर्ष्या थी। उनके प्रेम में वह बेबसी थी, उत्तेजना थी जो उन लोगों के प्यार में होती है जिनका यौवन खत्म हो चुका होता है। उन्हें केवल इस बात से ही पूर्ण खुशी मिल सकती थी कि नाना सिर्फ उनकी ही है। काउन्ट का प्रेम अब शारीरिक स्तर से भी ऊँचा उठ गया था। वह कल्पना किया करते थे कि भगवान् उन दोनों को क्षमा कर देंगे और उनकी आँखों में वे दोनों एक हो जायेंगे। वह चाहते थे कि उनका प्रेम अनन्त हो जाय, लेकिन बार-बार नाना उन्हें धोखा दे देती थी। नाना इस बात में किसी पशु की तरह थी जिसे हमेशा ही नग्न रहने की आदत थी।

एक दिन सुबह उन्होंने देखा कि फूकॉरमाँ नाना के घर से बाहर निकल रहा है। काउन्ट ने नाना से जवाब माँगा—नाना क्रोध से उबल पड़ी। काउन्ट भी कितने शक्की हैं—वह थक गयी थी उनके इस सन्देहात्मक व्यवहार से।

'हाँ! मैं फूकॉरमाँ की प्रेयसी हूँ—समझे! जाओ जो जी में आये कर लो। लेकिन मुझे परेशान मत करो। मैं हमेशा स्वतन्त्र रहूँगी चाहे जो भी हो। जो आदमी मुझे अच्छा लगेगा उसे मैं अवश्य बुलाऊँगी। और तुम भी इसी वक्त निश्चय कर लो—हाँ या नहीं! दरवाजा खुला है।' यह कहते उसने कमरे का दरवाजा खोल दिया।

हालांकि काउन्ट की मुट्ठियाँ क्रोध में भिंच गयी थीं लेकिन वह वहाँ से उठे नहीं। अब तो हर झगड़े के अन्त में नाना उनसे यही साफ-साफ कह देती थी कि हमेशा उसे काउन्ट से अधिक जवान और अच्छे लोग मिल सकते थे और इस बात के कारण काउन्ट उससे और भी ज्यादा दबने और डरने लगे थे। जब नाना बिगड़ती थी तो काउन्ट

गुलाम की तरह सिर झुका देते थे और उस समय की प्रतीक्षा किया करते थे जब नाना को फिर धन की आवश्यकता हो। ऐसे अवसरों पर तो नाना काउन्ट को बहुत प्यार करती थी—पुचकारती थी और उस खुशी में काउन्ट पिछला सारा निरादर और दुख भूल जाते थे। नाना के जवान शरीर को अपने सीने से लगाते ही उनकी सारी आपत्तियाँ और गम जैसे बिल्कुल धुल जाते थे।

उधर काउन्टेस से सुलह हो जाने के बाद से काउन्ट का पारिवारिक जीवन और भी ज्यादा दुखद हो गया था। फॉशेरी ने काउन्टेस को छोड़ दिया था और वह फिर रोज के चंगुल में फँस गया था। लेकिन काउन्टेस अब और लोगों से प्रेम करने लगीं थीं। उनके दिल में भी यह डर और परेशानी थी कि अब उनकी उम्र ढल रही है। कुछ दिनों के बाद तो लोग उनकी तरफ प्रेम से देखेंगे भी नहीं इसलिए पागल होकर वह विलासिता के जीवन में गहरी डूब गयी थीं। अपना घर काउन्ट को नर्क से भी अधिक बुरा लगता था इसलिए वह उस वातावरण से परेशान हो कर नाना के यहाँ चले जाते थे। वह निरादर और वह डाँट घर के गन्दे माहौल से उन्हें कहीं ज्यादा पसन्द थी।

कुछ दिनों बाद नाना और काउन्ट के बीच में केवल धन का ही सम्बन्ध शेष रह गया। एक दिन, यह वायदा करने के बावजूद कि वह दस हजार फ्रैन्क ला देंगे, मफेट खाली हाथ नाना के पास पहुँचे। पिछले दो तीन दिन से नाना प्यार करके काउन्ट को धन लाने के लिए उकसा रही थी। लेकिन जब उसने देखा कि काउन्ट खाली हाथ ही आये हैं तो वह क्रोध से सफेद हो गयी—उसने इतने चुम्बन काउन्ट पर व्यर्थ ही बरबाद किये थे।

'अच्छा ! अब तुम्हारे पास बिल्कुल धन नहीं है ! तो अब लौट जाओ वहीं जहाँ से आये थे, फौरन, समझे ! कितना गन्दा आदमी है ! और यह मुझे चूमने की कोशिश कर रहा था ! धन नहीं तो कुछ नहीं—समझे !'

काउन्ट ने बहाने बनाना शुरू किये—परसों अवश्य वह धन ला देंगे। लेकिन उसने फिर जोर से काउन्ट को रोक दिया।

'यहाँ तो मुझे धन की इतनी जरूरत है कि लोग पैसा वसूल करने को मेरा सामान नीलाम कराने को तैयार हैं और आप हैं कि बड़ी शान से चले आ रहे हैं—खाली जेब! अपनी सूरत शीशे में देखो। क्या तुम समझते हो कि मैं तुमसे प्रेम करती हूँ? जब आदमी तुम्हारा जैसा होता है तो उसे औरतों का प्रेम दौलत से खरीदना पड़ता है। हिरत! अगर आज रात तक दस हजार फ्रैन्क लेकर नहीं आओगे तो मेरी सूरत भी नहीं देख पाओगे।'

उस दिन रात को काउन्ट दस हजार फ्रैन्क लेकर नाना के घर पहुँच गये। नाना ने अपने होंठ उनकी तरफ़ चुम्बन के लिए बढ़ा दिये। काउन्ट ने एक लम्बे चुम्बन में उन गर्म होठों को बिल्कुल चूस लिया और सुबह का घोर निरादर और दिन भर की सख्त पीड़ा इस चुम्बन की शराब में बिल्कुल नीचे तक डूब गयीं। इस घटना के बाद से तो नाना और भी सख्ती से उनसे धन की माँग करने लगी। अक्सर झगड़े हो जाते थे, जरा-जरा-सी रकमों तक के लिए वह काउन्ट को बहुत डाँटती थी। वह दिन पर दिन अधिक लालची होती जा रही थी। वह उनसे साफ कह देती थी कि केवल धन के ही कारण वह उन्हें अपने पास आने देती है। कितने अहमक आदमी से उसका पाला पड़ गया था! राज-दरबार के पद में भी उन्हें निकालने की बात हो रही थी। महारानी ने नाराज होकर उनके बारे में एक बार यहाँ तक कहा था—'वह बहुत भद्दा आदमी है।' यह सच भी था! नाना ने भी उनसे कह दिया था—

'सच! तुम बहुत ही भद्दे आदमी हो!' और काउन्ट के इस पतन के साथ नाना बिल्कुल स्वतन्त्र हो गयी थी। अब आवश्यक थोड़े ही था कि वह केवल उन्हीं की होकर रहे। वह रोज अपनी शानदार गाड़ी में बैठकर बाहर आती-जाती थी—रोज बहुत से लोगों से उसकी जान-

पहिचान हो जाती थी। खुलेआम वह आदमियों को अपने रूप और शरीर की चमक से लुभा रही थी—फाँस रही थी। विलासिता के उस विशाल नगर में नाना उस समय सबसे ज्यादा चमक रही थी। जब वह अपनी गाड़ी पर बैठकर निकलती थी तो अनगिनत गाड़ियाँ उसके चारों तरफ रुक जाती थीं, उसे देखने के लिए उससे बात करने के लिए और यह लोग वह थे जो तमाम यूरोप की दौलत अपने बटुओं में रखते थे—सरकार के वे मन्त्री जिनकी कड़ी उँगलियाँ फ्रांस का गला घोंटे डाल रही थीं। नाना इस धनवान और शानदार समाज के विलास का केन्द्र बन गयी थी। विलासिता के पागलपन में वह उन तमाम लोगों पर छा गयी थी। देशी और विदेशी—हर धनवान आदमी नाना को जानता था और चाहता था। नाना का जाल बहुत चौड़ा फैल गया था। धनी व्यापारियों की बीवियाँ—काउन्टेस—डचेस-समाज की भद्र और प्रतिष्ठित महिलाएँ नाना के कपड़ों की और शृङ्गार की नकल करने की कोशिश किया करती थीं।

काउन्ट ऐसा बहाना करते थे मानो वह नाना के इस जीवन के बारे में कुछ भी नहीं जानते। नाना का मकान उनके लिए अब बिल्कुल नरक बनता जा रहा था—एक पागलखाना-सा था जिसमें नाना के वहम और सनक के कारण हमेशा कोई न कोई नया झगड़ा लगा रहता था। अब तो नौबत यहाँ तक आ गयी थी कि नाना अपने नौकरों से भी लड़ाई लड़ने लगी थी। कुछ दिनों तक वह अपने कोचवान चार्ल्स—से बहुत खुश रही फिर अचानक बिना कारण उससे एकदम नाराज हो गयी। नाना ने उसे इतनी गालियाँ दीं कि चार्ल्स भी क्रोध में चिल्ला पड़ा—'वेश्या कहीं की।' काउन्ट ने दोनों को मुश्किल से अलग किया और कोचवान को फौरन ही कोठी से निकल जाने की आज्ञा दी। और इसके बाद तो धीरे-धीरे सब नौकर भाग गये। यहाँ तक खबर उड़ गयी थी कि जूलियन नामक एक नौकर को काउन्ट ने कुछ धन देकर निकाल

दिया था क्योंकि नाना उस पर विशेष रूप से कृपालु थी। केवल जो अपनी जगह पर दृढ़ थी। वह भी इतना धन कमा कर नौकरी छोड़ना चाहती थी कि जिससे वह स्वतन्त्रतापूर्वक मदाम त्रिकॉन का-सा व्यवसाय शुरू कर दे।

नाना के घर की भी अजीब हालत हो गयी थी। जब से जॉ ने इन्तजाम ढीला कर दिया था तब से काउन्ट की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि बिना खाँसे, सकेत किये किसी कमरे में घुसे या पर्दा उठा कर झाँके भी। अब तो हर जगह अजीब-अजीब आदमी घर में हमेशा आते-जाते, घूमते दिखायी पड़ते थे। एक दिन, जब वह भूल से नाना के कमरे में घुसने लगे थे, तो काउन्ट ने देखा था कि नाना बाल सँवारने वाले आदमी फ्रांसिस के ही गले में हाथ डाले हुए है और उस दिन से वह बिना किवाड़ खटखटाये कभी अन्दर नहीं जाते थे। नाना को वासना और विलास ने बिल्कुल पागल कर दिया था। वह तो अब सैटिन को भी धोखा दे दिया करती थी—नाना की सनक में एक भयङ्कर पागलपन-सा आने लगा था। शरीर के पतन और वासना की गन्दगी की आखिरी सीमा तक वह गिर चुकी थी। वह यूँ ही सड़क पर से लड़कियों को बुला लिया करती थी और उन्हें कुछ देर रख कर, कुछ देकर वापस कर दिया करती थी। कभी-कभी मर्दाने कपड़े पहिन कर वह ऐसे स्थानों पर भी जाया करती थी जो गन्दगी और शारीरिक व्यवसाय के लिए बहुत ज्यादा बदनाम थे और वहाँ भद्दे और फोश दृश्य देखने में उसे बहुत आनन्द मिलता था।

अपनी इस दुर्दशा और ज़िल्लत के खिलाफ़ अब भी काउन्ट कभी-कभी विद्रोह कर उठते थे। हालाँकि अब वह इस हालत तक गिर गये थे कि नाना के अजनबी लोगों के साथ प्रेम-क्रीड़ा करने पर भी वह बुरा नहीं मानते, लेकिन इस बात पर वह बहुत नाराज हो जाते थे कि नाना उनके किसी परिचित की ही प्रेयसी बने। एक बार तो वह फ़ूकॉरमाँ से

लड़ाई लड़ने को भी तैयार हो गये थे इस बात पर, लेकिन लेवॉरदेत ने जब यह बात सुनी थी तो वह हँस पड़ा था, 'नाना के लिए लड़ाई लड़ोगे ? सारा पैरिस हँसेगा तुम्हारे ऊपर।'

मफेट को यह बात बहुत बुरी लगी थी—वह उस औरत के लिए लड़ भी नहीं सकते जिसे वह इतना प्यार करते थे—लोग इस पर हँसेंगे। काउन्ट को खामोश रहना पड़ा। उनकी वासना उन्हें अपने वहशी जबड़ों में बहुत सख्ती से दबाये हुए थी। उनका दिन पर दिन कमजोर होता हुआ व्यक्तित्व इतना निकम्मा हो गया था कि इन बन्धनों से कभी मुक्त नहीं हो सकता था। कुछ दिन बाद वह स्वयं उस अनन्त जनसमूह के एक भाग हो गये थे जो नाना के मकान में दिन-रात घूमा करता था।

और नाना की सदैव अतृत रहने वाली विलासिता ने इन तमाम लोगों को कुछ ही महीनों में तबाह करके बिल्कुल खत्म कर दिया था। उसकी हर पागल से पागल ख्वाहिश पूरी हो जाने पर और भी तीव्र हो जाती थी और उनमें धनी से धनी व्यक्ति घुन की तरह पिस कर खरल हो जाते थे। फूकॉरमां के तीस हजार फ्रैन्क नाना ने पन्द्रह ही दिन में खत्म कर दिये थे और वह फिर निर्धन होकर जहाज पर नौकरी करनें चला गया था। स्टीनर का सारा धन साफ करके नाना ने उसे चूसकर सड़क पर खोइया की तरह फेंक दिया था। वह आदमी, जिसके हाथों में हमेशा लाखों करोड़ों रहते थे, अब दिवालिया कर दिया जा चुका था। नाना की ख्वाहिशों को पूरा करने के लिए उसने बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ खोली थीं जिसके लिए उसने लाखों फ्रैन्क इकट्ठे भी कर लिये थे लेकिन नाना की विलासिता की आग से वह सब जल कर राख हो गया था। पैरिस का सबसे धनी आदमी पुलिस से मुँह छिपाता फिरता था। एक दिन तो नाना के सामने वह रोने भी लगा था। नौकर का वेतन देने के लिए उसे नाना से सौ फ्रैन्क माँगने पड़े थे। नाना इस बात पर हँस पड़ी और सौ फ्रैन्क उसे देते हुए वह कहने लगी—'मैं तुम्हें यह इसलिए

दे रही हूँ कि इस बात पर मुझे हँसी आ रही है कि कोई मुझसे ही धन माँगे। लेकिन तुम्हारी यह उम्र अब निकल गयी है जब मैं तुम्हें बैठाल कर खिलाती। तुम जाकर अब कोई दूसरा काम ढूँढ़ो।'

हेक्टर लॉ फैलॉप भी नाना की वासना के फौलादी पंजों में दब कर मरना चाहता था—वह इसे इज्जत की बात समझता था कि नाना उसे बरबाद करे। दो महीने में तो उसका नाम हो जायगा। नाना का प्रेमी होना एक 'फैशन' हो गया था विलास-प्रिय पैरिस के धनी लोगों में। और दो महीने भी नहीं—केवल छः हफ्ते लगे लॉ फैलॉप का सर्वनाश होने में! उसकी सारी सम्पत्ति जागीरों, खेतों, जंगलों और चरागाहों की थी और देखते-देखते यह सब बिक गये ये नाना की हविस पूरा करने के लिए। हर कौर में नाना एक-एक एकड़ जमीन खा जाती थी। धूप से भरे हुए पेड़—पके हुए नाज के सुनहरे खेत—रस से छलकते हुए अँगूरों के बाग और लम्बी, मुलायम घास जिसमें गाय बकरियाँ आराम से ऊँघा करती थीं—सब जैसे किसी बहुत गहरे गढ़े में डूब गये। एक तूफान की तरह, एक जबरदस्त सैलाब की तरह, आग की प्रचंड लपटों की तरह, टिड्डियों के झुंड के काले बादलों की तरह नाना सारे प्रदेश में अराजकता फैला रही थी; पैरिस को तहस-नहस कर रही थी। जहाँ उसका गोरा नाज़ुक पैर पड़ता था वहाँ की जमीन जल जाती थी।

लॉ फैलॉप पागल की तरह अपनी बरबादी देखकर हँसता रहा—उसके कन्धे कर्ज से टूटे जा रहे थे और उसका पुरस्कार उसे केवल यह मिला था कि 'फ़िगारों' में उसका नाम दो बार छप चुका था।

फॉशेरी ही अभी तक बचा हुआ था। कुछ दिनों से उसने स्वयं अपना एक पत्र निकालना शुरू किया था लेकिन थोड़े ही दिनों में नाना की हविस का गहरा गर्त्त उस अखबार का सब कुछ हड़प कर गया। अन्त में केवल एक प्रेस बचा था, वह भी नाना की कोठी में एक शानदार बाग लगाने में खर्च हो गया था।

एक रात को लाँ फैलॉप अचानक गायब हो गया। हफ्ते भर बाद लूम हुआ कि वह गाँव में अपने एक पागल चाचा के साथ रहने लगा। अब उसके पास इतना धन भी नहीं था कि पेरिस तो क्या वह कहीं और ही स्वतन्त्रता से रह भर सके। यह भी सुना था कि धन के लालच से वह शायद किसी बदसूरत लड़की से शादी भी करने वाला है। नाना काउन्ट से बोली, 'कहो—मफ! अब तो बहुत खुश होगे तुम। तुम्हारा एक और प्रतिद्वन्द्वी कम हुआ। वह भी मुझसे शादी करना चाहता था।' काउन्ट का निरादर करने के लिए अब नाना उनको 'मफ' कह कर ही पुकारती थी। काउन्ट के गले में हाथ डाल कर नाना फिर बोली—'और तुम्हें भी तो वही परेशानी है। तुम नाना से कैसे शादी कर सकते हो? तुम इसीलिए तड़पा करते हो। तुम्हें अपनी पत्नी की मृत्यु का इन्तजार करना पड़ेगा। और जब तुम्हारी पत्नी मर जायगी तो तुम फौरन ही दौड़ते हुए मेरे पास आओगे और मेरे कदमों पर अपनी सारी दौलत न्यौछावर करने का वायदा करोगे। क्यों ठीक है न?'

काउन्ट इन धीमी और प्यारभरी बातों को सुन कर नये दूल्हे की तरह शर्मा गये।

'अच्छा—तो मैं ठीक ही समझ रही थी। यह भी मुझसे शादी करना चाहते हैं—बस बीबी के मरने का इन्तजार है! ओह! तुम तो औरों से भी ज्यादा भद्दे और गिरे हुए आदमी हो।'

काउन्ट नाना के प्यार में और भी पागल हो गये। वह औरों के आने-जाने में कोई आपत्ति नहीं करते थे। वह अपना सब कुछ लुटा कर नाना की एक भी मुस्कान खरीदने को तैयार थे—खरीद रहे थे।

नाना के प्रति उनकी वासना एक ऐसी बीमारी की तरह थी उनके व्यक्तित्व के हर परिमाणु को सड़ा-सड़ा कर खाये जा रही थी लेकिन उससे वह बच नहीं सकते थे। जब नाना के कमरे में वह रात को थे तो कुछ देर के लिए उन्हें कमरे की खिड़कियाँ खोल देनी पड़ती थी

न जाने कितने और लोगों के प्यार की बासी गन्ध में उनका दम घुटने लगता था क्योंकि नाना अंधेरे के समन्दर की तरह थी जो लगातार आदमियों को निगले जा रही थी।

जार्ज के सीने से निकले हुए खून का वह धब्बा अब तक दिखायी पड़ता था। हालाँकि अनगिनत पैर उस पर से होकर निकल चुके थे फिर भी वह अब तक मिटा नहीं था। जो इस धब्बे को देखकर हमेशा नाराज होती थी, 'यहाँ इतने लोग आते रहते हैं फिर भी यह उनके जूतों की रगड़ से खत्म क्यों नहीं होता!'

जार्ज अपनी माँ के साथ 'लॉ फांदे' चला गया था और वहाँ स्वास्थ्योपार्जन कर रहा था—यह नाना को मालूम था। वह बोली—

'अभी तो देर लगेगी इसे मिटने में। जूतों की रगड़ से इसका रंग फीका पड़ना तो शुरू हो ही गया है!'

और वास्तव में यह तो था कि वहाँ आने वाला हर आदमी फूकॉरमों, स्टीनर, लॉ फैलॉप, फॉशेरी और न जाने कितने और—अपने साथ उस धब्बे का कुछ भाग अवश्य ले गये थे। और मफेट, जो 'जो' से भी ज्यादा उस निशान के कारण चिन्तित थे, उस धब्बे के मुखं धुन्धलेपन में उन तमाम आदमियों को देख रहे थे जो वहाँ आये थे और बरबाद होकर चले गये थे। वह लोग धब्बे से डरते थे और उस पर से होकर जब भी गुजरते थे तो उन्हें लगता था मानो किसी जानदार प्राणी को वह पैरों से रौंद रहे हैं।

उस कमरे के अन्दर ही काउन्ट पर एक ऐसा नशा छा जाता था जिसके नीचे वह बिलकुल दब जाते थे। उनके व्यक्तित्व में इतनी शक्ति नहीं रह गयी थी कि वह उस नशे से जरा भी उभर पाते—वह नशा एक दलदल की तरह था जिसमें काउन्ट गहरे—और गहरे धँसते ही जा रहे थे। उस कमरे के बाहर निकल कर—सड़कों पर कभी-कभी वह शर्म और पीड़ा से रो पड़ते थे, उस निरादर से उनका

ल टुकड़े-टुकड़े हो जाता था और वह यह निश्चय कर लेते थे कि अब
ाना के यहाँ लौट कर कभी नहीं जायँगे। लेकिन जैसे ही वह कमरे में
ुसते थे वह नशा दूनी ताकत से उन पर छा जाती थी। उनका
निश्चय—उनके वह इरादे कमरे की गर्मी में पिघल जाते थे; उनके
शरीर के अन्दर मांसलता की, विलास की, वासना की गहरी सुगन्ध समा
जाती थी और उस उत्तेजना के प्रभाव में वह यह चाहता था कि उस
सुगन्ध में उस नशे में डूब कर मर ही जाय। काउन्ट पहले एक धर्म-
परायण आदमी थे—गिरजों और मूर्तियों के सामने घुटने टेक कर
प्रार्थना करने में, उन्हें परम आनन्द मिलता था। और नाना के शरीर
की विलासपूर्ण मांसलता के आगे भी उनके अन्दर वही भाव जाग पड़ते
थे। उसके सामने भी उनका सिर श्रद्धा से झुक जाता था। और नाना
उन पर क्रोध की देवी की तरह राज्य करती थी—उन्हें डाँटती थी, डराती
थी, उनकी बेइज्जती करती थी और कभी-कभी थोड़ा-सा प्यार—थोड़ा-
सा सुख भी दे देती थी जो उन्हें शान्ति के बजाय तड़पा देता था।
हर बार वह अपनी उत्तेजना को शान्त करने के लिए गिड़गिड़ाते थे,
क्षमा माँगते थे, जलील होते थे और हर बार उनकी आँखों के सामने
नरक के वीभत्स दृश्य नाच उठते थे—हमेशा उनके दिल में यह डर
भरा रहता था कि न जाने कितनी कड़ी सजा मिलेगी उन्हें अपने गुनाहों
की! उनके शरीर की उत्तेजना और वासना और उनकी आत्मा की
आवश्यकताएँ मिल कर उनके व्यक्तित्व की गहराइयों में से एक ही फूल
की तरह फूट निकलती थीं। वासना और विश्वास की शक्तियों को उन्हों
आत्मसमर्पण कर दिया था। चेतना के हर विद्रोह के बावजूद भी व
नाना के कमरे में आकर पागल और संज्ञाहीन हो जाते थे।

नाना के पागलपन का तूफान काउन्ट को हर प्रकार से जलील क
और भी तेज हो जाता था। उसके अन्दर स्वाभाविक रूप से हर चे
को बरबाद करने की ताकत और हविस थी। वह न केवल चीजों

तोड़ती-फोड़ती ही थी बल्कि उन्हें गन्दा करके तबाह भी कर देती थी। उसके नाजुक गोरे हाथों के स्पर्श मात्र से चीजें गल जाती थीं—सड़ जाती थीं। और काउन्ट इतने मूर्ख थे कि जानते हुए भी वह पतन के इस भयानक जाल में पड़े हुए थे। वह सोचते थे कि कुछ धार्मिक महात्माओं ने भी तो अपने शरीरों में ऐसे कीड़ों को पाला था जो उन्हीं के मांस को खाकर जिन्दा रहते थे। और काउन्ट की मूर्खता और कमजोरी से उत्साहित होकर नाना उन्हें मारती थी—धक्के देती थी; भालू—कुत्ता—घोड़ा बना कर नचाती थी और अपना मनोविनोद करती थी।

नाना को अजीब-अजीब तरह के वहम होते थे। एक बार उसने काउन्ट को मजबूर कर दिया कि वह अपनी पूरी दरबारी पोशाक पहिन कर आयें और जब वह आये तो नाना ने उन्हें खूब ही बनाया। नाना को समाज की प्रतिष्ठा और बड़प्पन से बहुत घृणा थी और उसे राज दरबार की पोशाक की बेइज्जती करने में बड़ा आनन्द आ रहा था। मफेट को घुमा कर उसने पीछे से लात मारी मानों वह फ्रांस के बादशाह की प्रतिष्ठा में ही लात मार रही है। इतना ही नहीं, उसने मफेट से कहा कि अपना वह शानदार कोट उतार कर उस पर चलें, थूकें और उस पागल औरत के जादू में बुरी तरह डूबे हुए मफेट ने फ्रांस के तख्त के शाही चिन्हों को अपने गन्दे जूतों से रौंदा—उनकी सुनहरी सजावट पर थूक भी दिया। सब कुछ खत्म हो गया था—उसने फ्रेंच दरबार के एक प्रतिष्ठित दरबारी को उसी तरह तोड़-मरोड़ कर फेंक दिया था जैसे उसने फिलिप का उपहार तोड़ा था—उन दोनों को मिट्टी और कीचड़ का ढेर बना कर उसने सड़क पर फेंक दिया था।

सुनारों के वायदों के बावजूद भी नाना का वह शानदार पलंग अब तक बन कर तैयार नहीं हुआ था। काउन्ट को वह उपहार नये वर्ष के उपलक्ष में नाना को भेंट करना था लेकिन अब तो जनवरी आधे से ज्यादा बीत चुका था। इधर काउन्ट नॉरमैंडी में अपनी बरबाद होती हुई

यदाद का अन्तिम अंश भी बेचने चले गये थे। वह दो दिन बाद ौटने वाले थे लेकिन अपना काम खत्म करके वह और जल्दी ही लौट ाये और बिना अपने घर जाये, सीधे नाना के यहाँ चले गये। जो उन्हें देख कर परेशान हो गयी। उन्हें रोकने के लिए उसने एक बहुत लम्बा बहाना बताया—कल काउन्ट के धर्म गुरू, मस्यो बेनॉ, घबड़ाये हुए यहाँ आये थे और कह गये थे कि काउन्ट के आते ही उन्हें फौरन घर भेज दिया जाय। मफेट की कुछ समझ में न आया, लेकिन फौरन ही वह जो की परेशानी का कारण समझ गये। दौड़ कर उन्होंने नाना के सोने के कमरे की किवाड़ खोल दी। अन्दर जो दृश्य था उसे देखकर वह चीखते हुए पीछे हट गये, 'हे भगवान्!'

नाना का कमरा अपनी नयी शाही सजावट से चमक रहा था। गुलाबी रंग की मखमल के शिविर पर हजारों चाँदी के सितारे चमचमा रहे थे—वह शरीर की रस बरसाती हुई जवानी का रंग था जो सुहानी रातों में और भी चमक उठता है। और सुनहरी झालरें लहकती हुई लपटों की तरह—लहराते हुए सुर्ख बालों की तरह कमरे की नग्नता को ढँके हुए थीं। इस गुलाबी और सुनहरे शामियाने के नीचे चाँदी का बिस्तर था—एक सिंहासन की तरह चौड़ा और विस्तृत, जिस पर नान अपने नंगे शरीर को पूरी तरह फैला सकती थी—नाना के शरीर क श्रेष्ठ मांसलता के लिए यह उपयुक्त मन्दिर था। इस समय भी वह पल पर बिल्कुल नग्न पड़ी थी और उसके जवान और बर्फ-से सफेद वक्ष साये में एक गन्दा और बूढ़ा शरीर मार्क्विस द शॉर्द का शरीर पड़ा थ

अपनी आँखों को हाथ से ढँक कर काउन्ट स्तम्भित होकर यह क हुए पीछे हट गये थे, 'हे भगवान्! यह क्या है?

साठ सालों की दुश्चरित्रता से सड़ा-गला हुआ मार्क्विस का श नाना के चमकते हुए शरीर से घिरा हुआ पड़ा था। उस सबे शरीर के लिए उस रात को सोने के वह फूल मुस्कुराए थे, उसी

वासना के लिए क्यूपिड चाँदी की झाड़ियों में नाच रहे थे। जब उन्होंने दरवाजा खुलते देखा तो वह एकदम हड़बड़ा कर उठ पड़े—ऐसा लग रहा था कि वह यहाँ से भागना चाहते हों, पर जैसे एकाएक उन्हें लकवा मार गया हो। नाराज होते हुए भी नाना मार्क्विस की इस दशा पर हँस पड़ी।

'लेट जाओ—कपड़ों में छिप जाओ।' नाना ने उन्हें जल्दी से चादर उढ़ा दी जैसे वह किसी गन्दगी को छिपाना चाहती हो। और वह दरवाजा बन्द करने के लिए उठ पड़ी। मफेट भी क्या आदमी है कि हमेशा बुरे मौकों पर ही आ जाता है। फिर धन इकट्ठा करने वह नॉरमैंडी ही क्यों गया था; इस बूढ़े ने तो उसे चार हजार फ्रैंक यों ही लाकर दे दिये थे। दरवाजा एक बार थोड़ा-सा खोल कर उसने मफेट से कहा।

'अच्छा हुआ तुम्हें पता लग गया! कहीं इस तरह किसी के कमरे में घुसा जाता है! अच्छा बस अब जाओ—फिर कभी न आना।'

दरवाजा फिर बन्द हो गया—जो कुछ उन्होंने देखा था उससे वह अब तक स्तम्भित थे। उनका शरीर जोर से काँप रहा था—सिर से पैर तक वह बुरी तरह हिल रहे थे। एकाएक तूफान में उखड़े हुए पेड़ की तरह वह जमीन पर गिर पड़े—उनका सारा शरीर चटक गया। और अपने हाथ प्रार्थना में ऊपर उठाकर मफेट तीव्र पीड़ा से चिल्ला पड़े।

'भगवान् अब यह नहीं सहा जाता।'

उन्हें लगा कि उनकी सारी शक्ति खत्म हो गयी है और उनकी चेतना लुप्त होने वाली है। वह फिर आवेश में बोल पड़े।

'नहीं! अब नहीं! भगवान्—मेरी रक्षा करो या मुझे मर जाने दो! उस बुड्ढे के साथ ओफ—मुझे यहाँ से हटा लो ताकि मैं यह सब न देख सकूँ।'

उनके होंठ दिल की निकली हुई अधीर प्रार्थनाओं से जल रहे
—वह अपने आपको भगवान् को दोबारा समर्पित कर चुके थे।
एकाएक उन्हें पीछे से किसी ने छुआ—वह उनके धर्म गुरू—मस्यो
वेनॉ थे। काउन्ट को लगा कि उन्हें भेज कर भगवान् ने उनकी प्रार्थना
सुन ली है। और उन्होंने धर्म गुरू के कंधों पर असंख्य आँसू बहा दिये।

मफेट फिर अपने पिछले जीवन को लौट गये। इसके अतिरिक्त
कोई चारा भी नहीं था—उनका जीवन बरबाद हो चुका था। मस्यों
वेनॉ का उन्हें दो दिन से लगातार ढूँढ़ने का कारण यह था कि काउन्टेस
सैवाइन किसी मामूली से युवक के साथ भाग गयी थीं। उनका घर,
उनकी प्रतिष्ठा, उनकी सम्पत्ति सब तबाह हो गई थीं, लेकिन काउन्ट
पर इन सब बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा था—उनका अपना गम
इतना महान् था।

अब उनके जीवन में बचा ही क्या था! राज दरबार के पद से तो
उन्हें पहले ही त्याग-पत्र देने को मजबूर कर दिया गया था। उनकी
पुत्री एस्टील ने, जो अपने विवाह के बाद एकदम बहुत सख्त और
बन गई थी, अपने पिता पर साठ हजार फ्रैंक का दावा कर दिया
क्योंकि उस हिस्से की एक जायदाद भी नाना की हविस का शिकार
चुकी थी। इस तरह पूरी तरह बरबाद हो जाने के बाद वह चुप
समाज की आँखों से बच कर अपने दिन काटने लगे थे। इधर-
भटकने के बाद काउन्टेस अपने पति के पास लौट आयी थीं
उन्होंने काउन्टेस को क्षमा करके स्वीकार कर लिया था। सैवा
काउन्ट की बची खुची जायदाद भी फूँक डाली थी और एक जीवि
की तरह काउन्ट चुपचाप यह सब कुछ सहते चले गये थे। ए
हुई औरत की बाहों से निकाल कर भगवान् ने उन्हें अपनी शर
लिया था।

## १२

नाना एक बार फिर एकाएक गायब हो गयी थी। वह शमा जो एक बार आसमान तक उठ गयी थी फिर अपनी ही चमक और गर्मी से बुझ गयी थी और उसके चारों तरफ मँडराने वाले हजारों परवाने उसी में जल कर भस्म हो गये थे। नाना के कदमों ने हजारों आदमियों के शरीरों को रौंद डाला था—उनके व्यक्तित्व, उनकी प्रतिष्ठा, उनकी धन-दौलत—सब नाना की हविस की क्रूर आग में जल कर राख हो गये थे। पुराने दानवों की तरह नाना शवों और कंकालों पर चलती थी और विपत्तियाँ उसके चारों तरफ मँडराया करती थीं—वांदूवरे जल कर भस्म हो गया था फूकॉरमां अपने गम और निर्धनता से परेशान होकर चीन के पास के समुद्र में अपने जहाज के साथ डूब गया था, स्टीनर चौपट हो गया था, लॉ फैलॉप बुद्धू की तरह एक गाँव में अपना बरबाद जीवन बिता रहा था, मफेट का परिवार बिल्कुल तबाह हो गया था। और जेल से छूटने के बाद फिलिप जार्ज की कब्र पर आँसू बहा रहा था। बरबादी और मौत नाना के कदमों के साथ-साथ हर जगह फैल गयी थी। फॉशेरी की कहानी की 'गोल्डेन फ्लाई' ( सुनहरी मक्खी ) की तरह नाना जिसे भी छूती थी वह फौरन ही जल कर मर जाता था—दलित वर्ग से उभरी हुई उस लड़की ने समाज में भी मौत और तबाही का बीज बो दिया था और उस बीज में शव और कंकाल उग रहे थे। उसने उन लोगों की ओर से बदला ले लिया था जिनकी वह सन्तति थी, जिन्हें प्रतिष्ठित समाज ने कीचड़ और सड़ांध में मरने के लिये फेंक

या था। यह भी तो अपनी तरह का न्याय था। नाना की जवानी ौर रूप अनन्त मालूम पड़ते थे और उनकी रोशनी में उसके बरबाद ुये हुए लोग ऐसे लग रहे थे जैसे शवों और मांस के लोथड़ों पर उगता हुआ सूरज चमक रहा हो।

और फिर एकाएक किसी वहम—किसी हविस के कारण नाना फिर गायब हो गयी थी। जाने के पहले नाना ने अपना सब सामान, कोठी, फर्नीचर, जेवर, यहाँ तक कि कपड़े भी नीलाम कर दिये थे। नाना का सामान नीलाम हो रहा था! लोगों में तहलका मच गया था। दाम लगाये गये थे और पाँच दिन में छः लाख फ्रैन्क से ज्यादा इकट्ठे हो गये थे। जाने के पहले नाना ने आखिरी एक नाटक में भी अभिनय किया था। उस भूमिका में नाना को खामोश ही रहना पड़ा था लेकिन नाटक बहुत ही सफल रहा था। वार्दिनेव ने बड़े जोर का विज्ञापन किया था—सारे पेरिस में उसने अपने नये नाटक की धूम मचा दी थी। लेकिन इस सब शोहरत और सफलता के बीच में ही नाना न जाने कहाँ गायब हो गयी थी। एक दिन सुबह सारे पेरिस में यह खबर आग की तरह फैल गयी कि नाना पिछली रात को काहिरा चली गयी। लोगों का ख्याल था कि वार्दिनेव से वह कुछ नाराज हो गयी थी। इतनी रईस औरत को कौन नाराज कर सकता था? फिर वह बहुत दिनों से अफ्रीका, मिस्र आदि जाना भी चाहती थी। उन देशों का रूमानी विलास-प्रिय और वासना-पूर्ण वातावरण उसे बहुत दिनों से लुभा रहा था।

इसके बाद महीनों गुजर गये। लोग नाना को धीरे-धीरे भूलने ल थे। जब कभी नाना का नाम आता था, तो अजीब-अजीब अफवा सुनायी पड़ती थीं। हर आदमी अलग-अलग कहानियाँ बताते थे। क कहता था कि नाना किसी देश के वाइसराय की प्रेयसी हो गयी है, क कहता था कि वह किसी सुल्तान के हरम में राज्य कर रही है। दो गुलाम उसकी सेवा करते हैं और अपना दिल बहलाने के लिए वह उ

सिर कटवा देती है। और कोई कहता था कि यह सब बातें बिल्कुल गलत हैं, वह एक हब्शी के प्रेम में बिल्कुल बरबाद हो गयी है। लेकिन पन्द्रह दिन बाद ही सब लोग हैरान रह गये—किसी ने कहा कि उसने नाना को रूस में देखा था और फिर नाना के बारे में और भी नयी और अजीब कहानियाँ प्रचलित हो गयीं।

वह एक बड़े शाहजादे की प्रेयसी थी और उसके पास असंख्य हीरे-जवाहरात थे। इसने दूर देश में रहने वाली नाना पेरिस निवासियों की आँखों में एक रहस्यपूर्ण देवी की तरह हो गयी जिसका शरीर हीरों से मढ़ा हुआ था। अब लोग उसका नाम बहुत इज्जत से लेते थे।

जुलाई की एक शाम को लूसी अपनी गाड़ी में चली जा रही थी। उसने दूर से कैरोलीन हेकेट को पैदल ही आते हुए देखा और गाड़ी रुकवा ली। कैरोलीन को देखते ही लूसी बोल पड़ी—

'तुम खाली हो? हाँ! अच्छा मेरे साथ चलो—नाना लौट आयी है!'

कैरोलीन चकित हो गई यह सुन कर कि नाना लौट आई है। वह फौरन लूसी की गाड़ी में बैठ गयी और लूसी ने फिर कहना शुरू किया—

'और तुम्हे मालूम नहीं—वह शायद अब मर भी गयी हो!'

'मर गई हो! छिः! यह क्या बकवास है—क्या हुआ है उसे?' कैरोलीन ने परम आश्चर्य में पूछा।

'वह ग्रैन्ट होटल में है और उसे चेचक हो गया है।' लूसी ने अपने साईस से कहा कि गाड़ी जल्दी बढ़ाये।

और रास्ते में लूसी ने कैरोलीन को नाना की अनुपस्थिति की कहानी सुनायी—

'पता नहीं क्यों नाना रूस से लौट आयी—शायद इसलिए कि उसका शाहजादे से कुछ झगड़ा हो गया था। वह अपना समान स्टेशन पर ही छोड़ कर सीधे अपनी चाची—मदाँम लेराँ को तो जानती होगी—

के यहाँ पहुँच गयी। नाना का लड़का दूसरे ही दिन चेचक से मर गया। मदाँम लेरों का नाना से धन की बात पर बहुत झगड़ा भी हुआ। शायद चाची ने भी नाना के लड़के की परवरिश इस कारण ठीक से नहीं की क्योंकि बाद को उन्हें नाना से उचित धन नहीं मिला था। वहाँ से नाना एक होटल में ठहरने पहुँच गयी। वह अपना सामान स्टेशन से लेकर लौट ही रही थी कि रास्ते में उसे मिनॉन मिल गया। नाना की तबियत एकाएक तेजी से खराब होने लगी थी—मिनॉन उसे उसके होटल के कमरे में ले गया और उसकी सहायता करने का वायदा किया। मिनॉन से रोज ने भी नाना की बीमारी की बात सुनी और वह बहुत दुखी हो गयी। नाना, एक मामूली होटल में और बीमार! आश्चर्य की बात तो यह है, कैरोलीन! कि यह दोनों पहले से इतना लड़ती-झगड़ती रहती थीं और रोज तो उससे विशेष रूप से नाराज थी, लेकिन नाना के बीमार पड़ने पर न जाने कहाँ की दया—प्रेम और स्नेह रोज के दिल में उमड़ आया। रोज ही नाना को ग्रेन्ड होटल में लिवा ले गयी ताकि अन्त समय तो नाना शानदार जगह में हो। तब से रोज उसी के पास है और उसकी सेवा-सुश्रुषा कर रही है। तीन रातें तो उसे वहाँ बीती हैं। शायद उसे भी यह बीमारी हो जाय, चेचक एक भयानक संक्रामक रोग है। रोज को अगर यह बीमारी लग गयी तो वह भी मर जायगी। खैर! लेबॉरदेत ने ही यह सब मुझे बताया था इसलिए मैंने सोचा कि चल कर देख लूँ......'

'हाँ, हाँ! अवश्य!' इस अजीब-सी कहानी को सुन कर कैरोलीन बहुत उत्तेजित हो गयी थी।

वे लोग पहुँचने ही वाली थीं कि रास्ते में गाड़ियों की इतनी भीड़ हो गयी कि उनकी गाड़ी को उसमें से निकलना बिल्कुल असम्भव हो गया। फ्रांस की विधान सभा ने लड़ाई की घोषणा कर दी। हर तरफ से लोगों की एक भीड़ उमड़ पड़ी थी। एक जबरदस्त शोर हर तरफ था।

ऊपर एकाएक एक सामुहिक और जोरदार आवाज काले आसमान गूँज उठी।

'र्बालन चलो—र्बालन चलो—र्बालन चलो!'

कुछ देर यह लोग खामोश रहे; फिर लूसी बोली—'हम दोनों ऊपर जा रहे हैं—किसी को चलना है?'

तीनों पुरुषों ने इन्कार कर दिया। ग्रान्ड होटल की एक कुरसी पर एक आदमी रुमाल में अपना चेहरा छिपाये बैठा था। मिनॉन और फॉशिरी को मालूम था कि वह व्यक्ति कौन है और उन लोगों ने लूसी और कैरो-लीन के ऊपर जाते ही इस व्यक्ति ने अपना सिर थोड़ा ऊपर उठाया। उन दोनों के मुँह से आश्चर्य की एक धीमी-सी आवाज निकल गयी। वह व्यक्ति काउन्ट मफेट थे।

'आज सुबह से यह यहीं पर बैठे हैं—बस हर आधे घंटे के बाद उठकर यह पूछ लेते हैं कि ऊपर के कमरे में जो व्यक्ति बीमार है उसकी तबियत कैसी है?'

तभी काउन्ट हाल पूछने के लिए फिर उठे लेकिन होटल का एक सेवक समझ गया कि वह क्या प्रश्न करने वाले हैं; वह एकदम बोल पड़ा—'अभी-अभी उनकी मृत्यु हो गयी।'

मफेट बिना उत्तर दिये अपनी कुर्सी पर लौट गए और उन्होंने अपना चेहरा रुमाल से बिल्कुल छिपा लिया। और लोग भी आश्चर्य में चिल्ला पड़े, लेकिन आवाज बाहर से आती हुई जोरदार गूँज में डूब गयी।

'र्बालन चलो—र्बालन चलो!'

मिनॉन ने सन्तोष की साँस ली—अब तो रोज को उतर कर आना ही पड़ेगा। फोन्तां के चेहरे पर दुःख छा गया, फॉशिरी पर वास्तव में असर पड़ा था। नाना की मृत्यु का ऐसा रूप—ऐसा ज... और लुभावना शरीर! लगता था कि नाना की मृत्यु कोई अनोखी

थीं—जिसे नहीं होना चाहिए था। अब नाना का वह आकर्षक रूप और शरीर कभी कोई नहीं देख पायेगा।

लूसी और कैरोलीन ऊपर जा रही थीं—तभी ब्लाँश सिवरी भी आ गयी। वह भी नाना की मृत्यु का हाल सुन कर स्तम्भित रह गयी थी। वे तीनों ऊपर चढ़ने लगीं तो मिनॉन ने नीचे से पुकार कर कहा :

'रोज से कह देना कि जल्दी नीचे उतर आये।'

ऊपर रोज के अलावा कमरे में लगभग वह सभी औरतें थीं जो नाना को जानती थीं। और नीचे नाना के सब परिचित पुरुष—वादिनेव, डगेनॅट, लेबॉरदेत, मूलेयर, मिनॉन, फोशेरी, फोन्तां और स्टीनर खड़े हुए सिगार पी रहे थे और कभी-कभी नाना की मृत्यु को अचानक याद करके दुख के दो शब्द कह देते थे। केवल काउन्ट मफेट एक रूमाल से अपना चेहरा छिपाये बैठे थे।

एकाएक लूसी बोली—'अब तो चला जाय, यहाँ रह कर हम लोग उसे जिन्दा तो कर नहीं लेंगे!'

सब लोग चारपाई की तरफ अपने आप मुड़ गये। वे चलने की तैयारियाँ करने लगे। केवल लूसी खिड़की के बाहर झाँक रही थी—दुख से उसका दिल भर आया था। दूर सड़क पर मशालों के साथ-साथ वह विशाल जनसमुदाय अभी चला जा रहा था—विशाल अँधेरे में वह पूरी भीड़ स्थूल और स्थिर लग रही थी। भीड़ का वह रूप समुद्र लड़ाई के मैदानों पर कटने के लिए आगे बढ़ा जा रहा था। [illegible] मौत की तरह बढ़ती हुई उदासी को दूर करने के लिए वह लोग चिल्लाते जा रहे थे :

'बर्लिन चलो—बर्लिन चलो—बर्लिन चलो!'

धीरे-धीरे सब औरतें कमरे से निकल कर चली गयीं। रोज अकेली कमरे में रह गयी थी—उसने एक बार चारों तरफ निगाह घुमायी, पर

देखने को कि कमरा साफ है या नहीं ! फिर उसने लैम्प बुझा दिया और नाना के शव के पास पड़ी हुई मेज पर एक मोमबत्ती जला कर रख दी। शव के चेहरे पर मोमबत्ती की पीली रोशनी फैल गयी। उस कुहरे को देखकर रोज डर कर पीछे हटी :

'उफ ! यह तो बिल्कुल बदल गयी है !'

रोज खामोशी से कमरा बन्द करके चली गयी। नाना कमरे में अकेले पड़ी थी और उसका चेहरा मोमबत्ती के प्रकाश में साफ दिखाई पड़ रहा था। वह चेहरा था या सड़े हुए गोश्त का लोथड़ा ! चेचक के छालों से सारा चेहरा भरा हुआ था—उन छालों के बीच में जरा-सी भी खाल साफ नहीं दिखायी पड़ रही थी। छाले अब धीरे-धीरे सूखने या फूलने लगे थे और मटियाले लग रहे थे। उसका चेहरा, जो अब बिल्कुल पहिचाना नहीं जा रहा था, सड़ती हुई मिट्टी की तरह लग रहा था। बाईं आँख सड़ती हुई खाल और छालों से बिल्कुल ढक गयी थी और दूसरी आँख भी एक बेजान काले गढ़े की तरह लग रही थी। मुँह पर एक लाल पर्त और सूजन थी जिसके कारण चेहरे पर एक भयानक हँसी दिखायी पड़ रही थी। लेकिन इस वीभत्स नकाब के चारों तरफ खूबसूरत, सुनहरे बाल सोने की कई धाराओं की तरह अब भी फैले हुए थे। वीनस—रूप और प्रेम की देवी—सड़ रही थी। पतन के वह कीटाणु, जो उसे जन्म से अपने वातावरण की सड़ांध से मिले थे और जिससे उसने अंजाम के एक प्रतिष्ठित आग को तबाह कर डाला था, आज उसी के अन्दर भड़क उठे थे और उन्होंने उसके जवान शरीर को और खूबसूरत चेहरे को सड़ा डाला था।

कमरा बिल्कुल खाली था। सड़कों पर से हजारों-लाखों आवाजें अपने दिल के डर और उदासी को भुलाने के लिए चिल्ला रही थीं :—

'बर्लिन चलो—बर्लिन चलो—बर्लिन चलो !'